भारत में यूरोपियों का आगमन

प्राचीन काल में रेशम मार्ग भारत को यूरोप के साथ जोड़ता था जिस पर कुषाणों का नियंत्रण था। 1453 में इस मार्ग पर तुर्की का नियंत्रण हो गया और तुर्की ने तब इस मार्ग को बंद कर दिया, परिणामस्वरूप जलमार्ग की खोज शुरू हुई, जिसमें पुर्तगाल और स्पेन ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

- पुर्तगाल के यात्री **बार्थो–लोम्यो–डियाज** ने 1487 AD में दक्षिण अफ्रीका के समीप **उत्तमाशा अंतरीप** (द–केप–ऑफ–गुड–होप) की खोज की।

यह स्थल भौगोलिक खोज के क्षेत्र में क्रांति माना गया, क्योंकि इस स्थल से अब पूरब और पश्चिम की तरफ यात्री जा सकते थे।

- 1498 AD में पुर्तगाल का यात्री **वास्को–डि–गामा** उत्तमाशा अंतररीप होते हुए भारत में **कालीकट तट** पर पहुँचा था।

यह केरल के कालीकट नामक बंदरगाह पर पहुँचा तब यहाँ के शासक **जमोरिन (सामुरी)** ने इनका स्वागत किया।

- 1492 AD में स्पेन के **क्रिस्टोफर कोलंबस** ने अमेरिका की खोज कर दी।

कोलंबस ने भारत को खोजने के क्रम में रास्ता भटक जाने के कारण **बहामा द्वीप** को खोज लिया और यहाँ के निवासियों को **रेड–इंडियन** कहकर संबोधित किया। बहामा द्वीप का नाम नई दुनिया रख दिया। इटली के प्रसिद्ध यात्री **अमेरिगो वैस्पुची** ने नई दुनिया की कई बार यात्रा की। इसी यात्रा के क्रम में इसकी मृत्यु भी हो गई, इसलिए इन्हीं के नाम पर नई दुनिया का नाम **अमेरिका** रख दिया गया।

- वास्को–डि–गामा का पथ प्रदर्शक **अब्दुलमनीक नायक** था, जो उत्तरमाशा अंतरीप से वास्को–डि–गामा को केरल लाया था।

इस प्रकार यूरोप से चलकर भारत आने का जलमार्ग का पता चल गया इसके बाद यूरोपिय देशों का आगमन भारत में शुरू हुआ।

वास्को–डि–गामा भारत से जब वापस गया तब पुर्तगाल में 60 गुणा लाभ पर भारतीय सामान को बेचा गया। परिणामस्वरूप एक के बाद एक कई व्यापारियों का भारत आगमन हुआ। इस प्रकार यूरोपिय देशों में सबसे पहले पुर्तगाली लोगों ने भारत में प्रवेश किया था।

	देश	कम्पनी	स्थापना वर्ष	कम्पनी के पूर्व नाम
1.	पुर्तगाल	पुर्तगाली ईस्ट इंडिया कंपनी	1498	ऐस्तादो–द–इण्डिया
2.	हॉलैण्ड (नीदरलैण्ड)	डच ईस्ट इंडिया कंपनी	1602	वेरिंगदे–ओस्त–इण्डसे–कम्पनी
3.	इंग्लैण्ड	ईस्ट इंडिया कंपनी	1600	मर्चेन्ट–ऐडवेंचर्स
4.	फ्रांस	फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी	1664	कम्पने–देस–इण्डेस–ओरियंतलेस

वास्को–डि–गामा के बाद दूसरा पुर्तगाली यात्री **अल्ब्रेज कैब्राल** अपने 17 जहाजों के साथ भारत आया और अपार धनराशि लेकर वापस गया। जब पुर्तगालियों का क्षेत्र विस्तार हुआ तब वहाँ की सरकार ने एक अधिकारी की नियुक्ति भारत में की उसे गवर्नर कहा गया, जो उपयुक्त सारणी से स्पष्ट होता है।

- **डी–अल्मेडा (1505–1509) :** यह भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर था।

यह भारत में पुर्तगाली साम्राज्य का संस्थापक था।

यह नीले पानी का समर्थक था। नीला पानी अर्थात् समुद्र पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लेना।

- **अल्फांसो–डी–अल्बुकर्क (1509–1515) :** यह पुर्तगालियों में सबसे महान गवर्नर था। इसने भारत में अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए भारतीय महिलाओं से वैवाहिक संबंध स्थापित करने पर अधिक जोर दिया था। इसने 1510 ई. में **बीजापुर से गोवा** को छीन लिया जो आगे चलकर इन लोगों का सबसे महत्वूपर्ण केन्द्र बन गया।

यह भारत में पुर्तगाली साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक था।

- पुर्तगालियों ने सर्वप्रथम **कोचीन** में और फिर **कालीकट** में अपनी फैक्ट्री को स्थापित किया था।
- पुर्तगालियों ने सर्वप्रथम कोचीन को अपनी राजधानी बनाया। लेकिन 1530 में इसके बदले **गोवा** को राजधानी बना लिया गया।

इसके बाद **नूना–डी–कुन्हा** और **जासो–डी–क्रैस्टो** गवर्नर नियुक्त हुए। लेकिन पुर्तगालियों की शक्ति धीरे–धीरे कमजोर होने लगी और इन लोगों के क्षेत्र पर डचों ने नियंत्रण कर लिया।

विविध तथ्य

- पुर्तगाली लोग अपने साथ **आलू, तम्बाकू और मक्का** लेकर भारत आये थे।
- पुर्तगालियों ने **सर्वप्रथम भारत में गोवा में प्रेस** की स्थापना की थी।
- पुर्तगालियों ने **सेंट फ्रांसीस जेवियर** के दिशा निर्देशन में **गोवा में भारत में प्रथम गिरजाघर** को स्थापित किया।
- पुर्तगालियों ने स्वयं को ''सागर का स्वामी'' कहा है।

- पुर्तगाली लोग चटगाँव बंदरगाह को महान बन्दरगाह कहकर संबोधित करते थे।
- अकबर के आदेश पर पुर्तगालियों ने हुगली में अपनी फैक्ट्री को स्थापित किया।
- सामुद्रिक मार्ग पर पुर्तगाली लोग जो कर वसूल करते थे, उसको **'कार्टजे'** कहा गया है।
- भारत में सबसे पहले पुर्तगाली कंपनी आयी और यह सबसे बाद में गयी।
- गोवा, दमन, द्वीव पर पुर्तगालियों ने 1961 तक नियंत्रण किया था। सैनिक कार्यवाही के द्वारा भारत ने इसे स्वतंत्र कराया।
- **कुतुबनूमा (कम्पास)–** यह दिशा सूचक यंत्र का नाम हैं इसका आविष्कार चीन ने किया। इस यंत्र से समुद्र में यात्रा करने वाले यात्रियों को दिशा के बारे में पता चल जाता है। चीन से यूरोप वालों ने ग्रहण किया और इसका प्रचार–प्रसार विश्व के अनेक देशों में हुआ।
- **फैक्ट्री–** इस समय फैक्ट्री का अर्थ उत्पादन से संबंधित नहीं था बल्कि यहाँ पर वस्तुओं को लाकर रखा जाता था और एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का कार्य किया जाता था। अर्थात् इस समय यहाँ किसी भीा वस्तु का निर्माण नहीं होता था। आगे चलकर यही फैक्ट्री प्रशासनिक केन्द्र के रूप में स्थापित हो गया।

डच

- हॉलैण्ड (नीदरलैण्ड) के निवासी को डच कहा जाता है। पुर्तगालियों के बाद इन लोगों ने भारत में व्यापार करने के लिए प्रवेश किया था। 1592 ई. में डच कंपनी को स्थापित किया गया और इसी के माध्यम से कुछ समय व्यापारिक कार्य सम्पन्न किया गया था। इस कंपनी में 17 व्यक्ति साझेदार थे। इसलिए डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी को **जेन्टलमैन–17** भी कहा गया है।
- 1595 ई. में पहला डच यात्री **हाउटमैन** भारत आया था और यहाँ से अपार धन–सम्पत्ति लेकर वापस गया।
- 1602 AD में डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी को **जोहान–वान** ने स्थापित किया था।
- 1605 में इन लोगों ने आंध्र प्रदेश के **मसूली**

पट्टनम् में अपनी प्रथम फैक्ट्री को स्थापित किया।

यह लोग सूती वस्त्र और मसाला के व्यापार में अधिक रूचि रखते थे। इस समय मसालों के द्वीप को **'ईस्ट इण्डिज'** कहा गया है, जो इण्डोनेशिया में स्थित था। इन लोगों ने भारत के साथ–साथ इस क्षेत्र से भी व्यापार कार्य शुरू किया था। इस समय अंग्रेज भारत आ गये थे और इन लोगों को बाहर निकालने के लिए अंग्रेजों ने पुर्तगालियों को साथ मिला लिया। परिणामस्वरूप एक महत्वपूर्ण युद्ध हुआ।

- **वेदरा का युद्ध (1759) :** इस युद्ध में अंग्रेजों ने डचों को अंतिम रूप से पराजित कर दिया और डच लोग यहाँ से हमेशा के लिए वापस चले गए।

अंग्रेज

- भारत में डचों के बाद ब्रिटेन से चलकर अंग्रेज लोग आये और इन्हीं लोगों ने भारत तथा यूरोपीय शक्ति को एक–एक करके पराजित कर दिया और भारत के भाग्य विधाता बन गए।

  1578 ई. में **'फ्रांसीसी ड्रेक'** नामक कप्तान को लूटे गए जहाज पर से एक मानचित्र प्राप्त हुआ, जिससे भारत आने का मार्ग का पता चल गया। ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ प्रथम ने 1599 में 'लार्ड मेयर' की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया और इसी समिति के रिपोर्ट के आधार पर 31 दिसम्बर, 1600 ई. को ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना हुई। महारानी ने प्रारंभ में 15 वर्षो के लिए व्यापार करने की अनुमति प्रदान की थी। लेकिन इसके पुत्र जेम्स–1 ने अनिश्चित काल के लिए समय सीमा को बढ़ा दिया। इस समय कंपनी में 217 साझेदार थे।
- ईस्ट इंडिया कम्पनी के स्थापना के समय ब्रिटेन की महारानी **एलिजावेथ–I** और भारत के बादशाह **अकबर थे।**
- जेम्स–I (ब्रिटेन के शासक) का पत्र लेकर **कैप्टन हॉकिन्स** मुगल बादशाह **जहाँगीर** के दरबाद में 1608 में आया था।

  कैप्टन हॉकिन्स फारसी भाषा के बहुत बड़े जानकार थे। यह अपने जहाज **'हेक्टर'** के साथ आया था। इसी जहाजी बेड़ा में **'रेडड्रेगन'** नामक छोटा जहाज भी शामिल था।
- जहाँगीर ने कैप्टन हॉकिन्स को 400 सौ का मनसब और खान की उपाधि से सम्मानित किया था।
- अंग्रेजों ने अपनी प्रथम फैक्ट्री **सूरत** में स्थापित किया था।
- अंग्रेजों ने दक्षिण भारत में अपनी प्रथम फैक्ट्री और भारत में दूसरी फैक्ट्री **'मसूलीपट्टनम'** में स्थापित किया।

  ब्रिटेन के शासक जेम्स-I के राजदूत के रूप में **'सर टॉमस रो'** व्यापारिक उद्देश्य को लेकर मुगल बादशाह जहाँगीर के दरबार में आया था। इसने केवल 3 हजार रूपया वार्षिक कर के बदले सभी क्षेत्रों में व्यापार करने की अनुमति प्राप्त कर लिया। जब ईस्ट इण्डिया कंपनी का क्षेत्र विस्तार हुआ तब इन लोगों ने तीन महत्वपूर्ण प्रशासनिक केन्द्र (प्रेसीडेंसी) की स्थापना किया। जैसे–
- **मद्रास–**1639 में कंपनी ने चन्द्रगिरि से मद्रास को खरीद लिया और इसका घेराबंदी कराया गया। **फ्रांसीस डे** को मद्रास का संस्थापक माना गया हैं मद्रास की घेराबंदी कराकर इसका नाम **सेंट फोर्ट जॉर्ज** रख दिया गया। इस प्रकार अब मसूलीपट्टनम् का स्थान मद्रास ने ले लिया और दक्षिण भारत में कंपनी ने मद्रास से नियंत्रित किया।
- **बंबई–**1661 AD में ब्रिटेन के राजकुमार चार्ल्स-II का विवाह पुर्तगाल की राजकुमारी **कैथरीन** के साथ हुआ था। तब पुर्तगाल ने दहेज में

बंबई चार्ल्स-II को दे दिया। 1668 ई. में कंपनी ने 10 पाउण्ड वार्षिक किराया देकर बंबई को चार्ल्स-II से प्राप्त कर लिया। बंबई का संस्थापक **गेराल्ड आंगियार** को माना जाता हैं अब सूरत का स्थान बंबई ने ग्रहण कर लिया।

- **कलकत्ता**–जॉब चारनाक ने मुगल राजकुमार अजीम–उस–शान से 1200 रू. में कोलिकाता, सुतानाती तथा गोविन्दपुरी को खरीद कर कलकत्ता की स्थापना (1698 में) किया।
- **कलकत्ता** का संस्थापक जॉब चारनाक को माना जाता है।

कलकत्ता का घेराबंदी करा कर इसका नाम **फोर्ट विलियम** कर दिया गया और **चार्ल्स आयर** को इसका प्रथम अध्यक्ष नियुक्त किया गया। तीनों प्रेसीडेंसी में से यह सबसे महत्वपूर्ण था।

विविध तथ्य :

- 1612 AD में **थॉमस बेस्ट** नामक अंग्रेज स्वाली के युद्ध में पुर्तगाली को पराजित कर दिया।
- मुगल बादशाह औरंगजेब ने अंग्रेजों से भी जजिया कर वसूल किया था।
- उबेदुल्ला कुतुबशाह ने 1632 AD में कंपनी के लिए एक आदेश जारी किया था, जिसको इतिहास में **सुनहरा फरमान** कहा गया है।

फ्रांसीसी :

- अंग्रेजों के बाद भारत में फ्रांसीसियों ने प्रवेश किया और 1954 तक भारत के कुछ क्षेत्रों पर अपनी शासन व्यवस्था को संचालित किया।
- फ्रांस के शासक **लुई 14वाँ** और उनका प्रधानमंत्री **कोल्बर्ट** के सहयोग से **फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कम्पनी** की स्थापना किया गया।, सभी यूरोपिय कंपनी में इस कंपनी पर सरकार का सबसे अधिक नियंत्रण था। इसलिए इसको **सरकारी कंपनी** भी कहा गया हें
- इन लोगों 1668 में सूरत में प्रथम फैक्ट्री स्थापित किया।
- 1669 ई. में इन लोगों ने दक्षिण भारत में अपनी प्रथम फैक्ट्री **मसूलीपट्नम** में स्थापित किया।
- सूरत में **फ्रांसिस कैरो** और मसूलीपट्टनम में **मर्कारा** के नेतृत्व में फैक्ट्री स्थापित किया। **फ्रेंक मार्टिन** ने 1673 में पाँडिचेरी की स्थापना की और इसकी घेराबंदी कराकर इसका नाम **पोर्टलुई** रख दिया। 1674 ई. में औरंगजेब के मामा शाइस्ता खाँ ने बंगाल के क्षेत्र से भूमि लेकर चन्द्रनगर नामक शहर को स्थापित किया, जो फ्रांसिसियों का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र था। जिस प्रकार अंग्रेजों के लिए कलकत्ता का महत्व था, उसी प्रकार फ्रांसीसियों के लिए चन्द्रनगर का महत्व था।

  जब इन लोगों का क्षेत्र विस्तार हुआ तब डूप्ले को गवर्नर बनाकर भेजा गया। डूप्ले की महत्वाकांक्षाओं ने तीन युद्ध को जन्म दे दिया, जिसको निम्नलिखित रूपों में देखा गया है–

- **कर्नाटक का प्रथम युद्ध (1746–1748)**–आस्ट्रिया में मेरिया थ्रेसा की मृत्यु के बाद गद्दी के लिए उत्तराधिकार का युद्ध शुरू हुआ। जिसका प्रभाव भारत पर ही पड़ गया और इस युद्ध में डुप्ले विजयी हुआ। एलासापोल की संधि से युद्ध समाप्त हुआ।

- **कर्नाटक का द्वितीय युद्ध (1748–1754)**–1748 ई. में कर्नाटक के शासक दोस्तअली की मृत्यु हो गई। तब उसका पुत्र अनवारूद्दीन गद्दी पर आया, लेकिन वहाँ की जनता दोस्त अली के दामाद चाँद साहेब को पसंद करती थी।

  हैदराबाद के निजाम की भी मृत्यु 1748 में हो गया तब उसका पुत्र नसिरजंग गद्दी पर आया, लेकिन निजाम के पौत्र मुजफ्फरजंग ने स्वयं को नवाब घोषित कर दिया। डूप्ले ने चाँद साहब और मुजफ्फरजंग को अपनी तरफ मिलाकर 1749 में अंबर के युद्ध में नासिरजंग और अनवारूद्दीन की हत्या कर दिया। परिणामस्वरूप अनवारूद्दीन का पुत्र मुहम्मद अली भागकर अंग्रेजों के शरण में चला गया। तब अंग्रेज भी इसमें शामिल हो गए। लॉर्ड क्लाइब ने अंग्रेजी सेना का नेतृत्व किया और विजयी हुआ। परिणामस्वरूप फ्रांस की सरकार ने डूप्ले को वापस बुलाकर गोडेहू को भारत भेजा।
- **कर्नाटक का तृतीय युद्ध (1756–1763)**–यूरोप में जब सप्तवर्षीय युद्ध शुरू हुआ तो भारत में भी फ्रांसीसी और अंग्रेज आपस में उलझ गए। परिणामस्वरूप यह युद्ध हुआ।
- **1760 ई. में वांडीवास** का युद्ध हुआ, जिसमें अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को अंतिम रूप से पराजित कर दिया।
- इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व सर **आयरकूट** ने किया था।
- फ्रांसीसी सेना का नेतृत्व **काउण्ट–डी–लैली** ने किया था, जो पराजित हुआ।

विविध तथ्य

- फ्रांसीसियों ने **1954 में पांडीचेरी** को मुक्त किया था।
- 1616 ई. में **डेनीस ईस्ट इण्डिया** कम्पनी की स्थापना किया गया, जो डेनमार्ग की कम्पनी थी।
- औरंगजेब के मामा शाइस्ताखाँ ने ईस्ट इंडिया कम्पनी को नीच, झगड़ालु और बेईमान लोगों की कंपनी कह कर संबोधित किया था।
- 1731 में स्वीडीश ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना हुई थी, जो स्वीडेन की कम्पनी थी, लेकिन इनलोगों ने अपना सभी व्यापारिक केन्द्र अंग्रेजों

के हाथ बेचकर वापस चले गये।

इस प्रकार यूरोपियों के आगमन में सबसे शक्तिशाली अंग्रेज साबित हुए, जिन्होंने भारत के साथ–साथ यूरोपीय शक्ति को भी पराजित कर दिया और भारत में राजनीतिक सत्ता को स्थापित कर दिया।

उत्तरकालीन मुगल वंश (1707 - 1857/1862)

औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारियों ने भारत पर शासन किया, लेकिन ये लोग योग्य साबित नहीं हुए। परिणामस्वरूप मुगल वंश का पतन की प्रक्रिया और तेज हो गई, जिसमें इन शासकों का योगदान भी था। जैसे–

- **बहादुरशाह–I (1707 - 1712) :** औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसका पुत्र मुअज्जम, बहादुरशाह–I के नाम से गद्दी पर आया। असद खाँ और उसके पुत्र जुल्फीकार खाँ ने इसको सहयोग प्रदान किया था।
- असद खाँ मुगल प्रशासन में सबसे अधिक समय 31 वर्ष तक वजीर (प्रधानमंत्री) के पद पर कायम रहा।

बहादुरशाह-I ने साहू को 1707 में कैद खाने से मुक्त कर दिया और मराठे आपस में उलझ गये, जो मुगल बादशाह चाहता था। इसने बुंदेल नेता 'छत्रशाल' और जाट नेता 'चुड़ामन' से मित्रवत संबंध कायम कर लिया। इसने गुरू गोविन्द सिंह के प्रिय शिष्य बंदा बहादुर को लौहगढ़ को छोड़ना पड़ा।

- लौहगढ़ दुर्ग का निर्माण गुरू गोविन्द सिंह ने अम्बाला के समीप किया था। इसको बंदा बहादुर ने अपनी राजधानी बनाया था।
- इतिहास में बहादुरशाह-I को **शाह–ए–बेखबर** कहा गया है।
- **जहाँदार शाह (1713) :** बहादुरशाह-I के बाद उसका पुत्र जहाँदार शाह गद्दी पर आया। असद खाँ और जुल्फीकार खाँ ने इसको अपना समर्थन दिया था। इसने मारवाड़ के शासक अजीत सिंह को महाराजा की उपाधि से सम्मानित किया। इसके प्रशासन में लाल कुमारी नामक महिला हस्तक्षेप करती थी, जिसके साथ इसका प्रेम संबंध बतलाया गया हैं और इसके लिए इतिहास में जहाँदार शाह की आलोचना की गई।
- **जयसिंह–**यह आमेर के शासक थे। इनको जहाँदार शाह ने 'सवाई राज' की उपाधि से सम्मानित किया था। यह नक्षत्र विज्ञान और रेखा गणित में अधिक रूचि रखते थे। इन्होंने नेपियर और यूक्लिड के गणित के पुस्तकों का अध्ययन के लिए अनुवाद कराया।
- इन्होंने नक्षत्र विज्ञान पर आधिारित सारणियों का सेट तैयार कराया, जिसको जिंज–मु.–शाही कहा जाता है।
- इन्होंने वैज्ञानिक रीति से जयपुर नगर का निर्माण कराया, जिसे गुलाबी शहर कहते हैं।
- इन्होंने जंतर–मंतर (वेधशाला) का निर्माण भी कराया था। जैसे–दिल्ली, मथुरा, काशी (बनारस), उज्जैन और जयपुर में।

इसके समय में सैय्यद बन्धुओं का उदय हुआ। इन लोगों ने फरूखसियर के साथ मिलकर इनकी हत्या कर दी। इतिहास में जहाँदारशाह को लम्पटमूर्ख कहा गया है।

- **फरूखसीयर (1713-1719) :** सैय्यर बंधु के सहयोग से यह गद्दी पर आया था। इसको घृणित कायर कहा गया हैं इसने सैय्यद बंधुओं के सहयोग से असद खाँ और जुल्फीकार खाँ की हत्या करा दी। इस प्रकार प्रशासन पर सैय्यद बंधुओं का पूर्ण रूप से नियंत्रण स्थापित हो गया।
- फरूखसीयर ने चिनकिलिच खाँ (निजाम) को दक्षिण भारत की 6 सूबेदारी प्रदान कर दी थी।

फरूखसीयर के समय 'सर जॉन शरमन' के नेतृत्व में अंग्रेजों का एक दल इसके दरबाद में आया। इस दल में शामिल डॉ. हैमिल्टन ने फरूखसीयर को जानलेवा बीमारी से निरोग कर दिया। खुश होकर फरूखसीयर ने एक फरमान 1717 ई. में जारी किया। इसके फसलस्वरूप ईस्ट इंडिया–कम्पनी को जहाँगीर के समय वाला सम्पूर्ण अधिकार मिल गया।

- इस फरमान को ईस्ट–इंण्डिया कम्पनी का **मेग्नाकार्टा** (महाअधिकार पत्र) कहा गया है।

सैय्यद बंधु और पेशवा के बीच 1719 में एक संधि हुआ। इस संधि शर्त के अनुसार बहुत सारा अधिकार मराठों को मिल गया।

- इस संधि को रिचर्ड टेम्पल ने मराठों के लिए मेग्नाकार्टा (महाअधिकार पत्र) कहा।

फरूखसीयर के समय बंदा बहादुर को गिरफ्तार कर हत्या कर दिया गया, जो बहुत बड़ी उपलब्धी माना गया है।

- इतिहास में सैय्यद बंधु को **राजा बनाने वाला या नृप निर्माता** कहा गया है।

साहू के साथ मिलकर सैय्यद बंधुओं ने फरूखसीयर की हत्या कर दी।

- **रफी–उद–दरताज और रफी–उद्–द्दौला (1719) :** सैय्यद बन्धुओं ने फरूखसीयर के बाद रफी–उद–दरजात को गद्दी पर बैठाया, लेकिन कुछ महा बाद उसे हटा कर रफी–उद–द्दौला को बैठाया। यह लोग योग्य शासक नहीं थे।
- रफी–उद–दौला को शाहजहाँ–II भी कहा गया है। यह सबसे कम समय तक मुगल बादशाह था, जबकि अकबर सबसे अधिक समय तक था।
- **मुहम्मद–शाह (रंगीला) (1719–1748) :** सैय्यद बन्धु ने इसको गद्दी पर बैठाया जिसका मूल नाम रौशन अख्तर था। यह राजनीतिक में कम और भोग विलास में, समृद्ध पूर्वक जीवन बिताने में अधिक रूचि रखता था, इसलिए इसके नाम के साथ रंगीला शब्द जुड़ गया।

इसने निजाम को आगे करते हुए सैय्यद बन्धुओं की हत्या करा दी।

- **निजाम–**इसका मूल नाम चिनकिलिच खाँ था। यह 1722 ई. में वजीर बना। 1724 में वजीर के पद से इस्तीफा दे दिया। मुगल सम्राज्य का

वास्तविक विघटन यहीं से शुरू हुआ।

- निजाम ने दक्षिण भारत में 6 सूबा (प्रांत) को मिलाकर स्वतंत्र हैदराबाद राज्य की स्थापना 1724 में किया। इसने हैदराबाद में आसफजाही वंश की स्थापना की। मुगल बादशाह मुहम्मद शाह ने इसको आसफजाह की उपाधि प्रदान की थी।
- **नादिरशाह**–यह ईरान के रहने वाले थे। इन्होंने **मुगल बादशाह मु. शाह** के समय भारत पर आक्रमण किया था।
- **नादिरशाह को ईरान का नेपोलियन कहा जाता है।**
- नादिरशाह ने 1739 में करनाल (हरियाणा) के युद्ध में मु. शाह को पराजित किया था और बंदी बना लिया था।
- नादिरशाह ने करनाल के युद्ध में विजयी होने के बाद दिल्ली पर आक्रमण किया था।
- मु. शाह रंगीला एकमात्र मुगल बादशाह है, जिनको विदेशियों ने बंदी बनाया था।
- **नादिरशाह अपने साथ मयूर सिंहासन (तख्त–ए–ताऊस) और उसमें लगा हुआ कोहिनूर हीरा ईरान ले गया।**
- मु. शाह रंगीला अंतिम मुगल बादशाह थे, जो मयूर सिंहासन पर बैठे थे।

  मु. शाह के समय पेशवा बाजीराव प्रथम ने भी अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए दिल्ली पर आक्रमण कर दिया।
- **अहमदशाह (1748-1754)**–इसके समय में गाजीउद्दीन नामक वजीर अधिक शक्तिशाली हो गया और वजीर ने मुगल बादशाह को अंधा djdsd S[kkusesaMky fn; kA d ky kaj esa v ky exhj&II के साथ मिलकर आदमशाह की हत्या कर दी गई।
- **आलमगीर–II (1759-1806) :** इसका मूल नाम अली गौहर था। इनके समय में 1760 में वांडीवास का युद्ध, 1761 में पानीपत का तृतीय युद्ध और 1764 में बक्सर का युद्ध हुआ। बक्सर के युद्ध में यह पराजित हुए तब 12 अगस्त, 1765 में लॉर्ड क्लाइब ने इनके साथ इलाहाबाद की संधि की।
- संधि शर्त के अनुसार शाह आलम–II ने अंग्रेजों को या ईस्ट इण्डिया कंपनी को **बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी (भू–राजस्व)** वसूल करने का अधिकार प्रदान कर दिया।
- मराठों के संरक्षण में शाह आलम–II ने कालांतर में इलाहाबाद की संधि का उल्लंघन कर दिया। 1803 AD में अंग्रेजों का दिल्ली पर पूर्ण रूप से नियंत्रण हो गया और मुगल बादशाह का अधिकार लाल किला के अंदर सिमट गया।
- **अकबर–II (1806-1837) :** यह पूर्ण रूप से अंग्रेजों के नियंत्रण में थे। इन्होंने राजा राम मोहन राय को अपनी पेंशन बढ़ाने के लिए राजदूत बनाकर 1830 में ब्रिटेन भेजा।
- इसी अवसर पर अकबर II ने राजा राम मोहन राय को **राजा** की उपाधि से सम्मानित किया।
- **बहादुर शाह–II/जफर (1837 - 1857/1862) :** यह अंतिम मुगल बादशाह था। इसने 1857 के विद्रोह में भाग लिया इसको दिल्ली में हुमायूँ के मकबरे से गिरफ्तार किया गया और पत्नी जीनतमहल के साथ वर्मा की राजधानी रंगून भेज दिया गया। इनकी पत्नी जीनतमहल को महक परी कहा गया है। बहादुरशाह जफर की 1862 में रंगून में ही मृत्यु हो गयी। इसकी मृत्यु पर प्रसिद्ध कथन ''ऐसा बदनसीब मुगल बादशाह जिसको अपने अंतिम समय में अपनी मातृभूमि में दो गज जमीन नसीब नहीं हुआ।''

  इस प्रकार बाबर के द्वारा स्थापित मुगल वंश 1862 में आकर पूर्ण रूप से समाप्त हो गया।

मराठा–साम्राज्य

आधुनिक भारत के इतिहास में मराठों ने सबसे अधिक और महत्वपूर्ण भूमिका दक्कन के क्षेत्र में निभाया था। शिवाजी के समय इन लोगों ने मुगलों को सबसे अधिक चुनौती प्रस्तुत की थी। पूणा जैसे छोटे से जागीर से उठकर शिवाजी ने मराठा साम्राज्य का निर्माण कर दिया, जिसको इतिहास में मराठवाड़ा कहा गया हैं उस समय मराठावाड़ा क्षेत्र में सम्पूर्ण महाराष्ट्र के साथ–साथ मध्य प्रदेश और कर्नाटक का कुछ भाग शामिल था। इसके अन्तर्गत हमलोग निम्नलिखित तथ्यों का अध्ययन कर सकते हैं–

- **स्रोत**–मराठों के बारे में जानकारी के लिए हमलोगों के पास कई महत्वपूर्ण स्रोत है, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- **सभासद**–यह दरबारी इतिहासकार था, जिन्होंने शिवाजी की जीवनी लिखा है, जिसका नाम **बखर** है। इस पुस्तक से शिवाजी के उपलब्धियों के साथ–साथ मराठों के बारे में भी जानकारी मिलता है।
- **खफी खाँ**–यह औरगंजेब के समय के प्रसिद्ध विद्वान थे जिन्होंने मुन्तखब–उल लुबाब नामक पुस्तक लिखा। इसने शिवाजी को 'शैतान का चतुर बेटा' कहकर संबोधित किया है। औरंगजेब ने शिवाजी को 'पहाड़ी चूहा' कहा है।
- **ग्रांट डफ**–इस विद्वान ने मराठों पर शोध का कार्य किया है और मराठों का इतिहास नामक पुस्तक की रचना की है, जिसमें विस्तारपूर्णक उल्लेख किया है।
- **समर्थ रामदास**–यह शिवाजी के अध्यात्मिक गुरू थे। इनकी प्रसिद्ध पुस्तक का नाम दसबोध है।
  इन्हीं के प्रेरणा स्रोत से शिवाजी ने इतने विशाल मराठा साम्राज्य का निर्माण किया था। शिवाजी के संदर्भ में रामदास का प्रसिद्ध कथन "उठो शिवाजी अब समय का निर्माण करो।"
- **बाजीराव प्रथम**–यह सबसे प्रसिद्ध पेशवा थे। इन्होंने हिन्दू–पद–पदशाही की रचना किया था, जिससे मराठों के बारे में जानकारी मिलता है।
- **हिन्दू–पद–पदशाही** की स्थापना शिवाजी ने किया था और इसको विस्तारित करने का श्रेय बाजीराव–I को दिया जाता है।
- **मराठों के उदय का कारण**–मराठों के उदय के महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित हैं–
- भौगोलिक कारण
- गोरिल्ला युद्ध प्रणाली का जनक मलिक अम्बर को माना जाता है।
  इसके बाद शिवाजी और बाजीराव-I ने इसको अधिक विकसित किया।
- औरंगजेब की हिन्दू विरोधी नीति
- भक्ति आंदोलन का प्रभाव
- भाषा एवं साहित्य का योगदान
- **शिवाजी का व्यक्तित्व :**

f'kokth dk ikjfHkd thou (1627 - 1680) :

– शिवाजी का जन्म – 20 जनवरी 1627
– जन्म स्थान – पूणा के समीप शिवनेर दूर्ग
– पिता का नाम – शाहजी भोसले
– माँ का नाम – जीजाबाई
– सौतेली माँ मा नाम – तुकाबाई मोहिते
– पुत्र का नाम – शम्भाजी
– दादा जी का नाम – कोणदेव
– राजनीति गुरू और संरक्षक का नाम – कोणदेव
– धार्मिक गुरू का नाम – समर्थ रामदा
– पत्नी का नाम – सांई बाबा निम्बालकर

शिवाजी का जन्म शिवनेर दूर्ग से हुआ था, जिसमें शिनेरी देवी का मंदिर स्थित था, जिनके नाम पर इनका शिवाजी नाम रख दिया गया। इनके पिता शहजी भोसले पूणा के जागीरदार थे और तुकाबाई मोहीते के साथ रहते थे, परिणामस्वरूप शिवाजी का अधिकांश बचपन अपनी माँ के साथ व्यतीत हुआ।

- शिवाजी के व्यक्तित्व पर सबसे अधिक प्रभाव माँ जीजाबाई का था, दूसरे व्यक्ति दादा जी थे।
  शिवाजी का विवाह 1640 AD में हुआ तब उनके पिता पूणा की जागीर शिवाजी को सौंप दिया और शिवाजी ने अपनी प्रारंभिक कार्यस्थली मावल प्रदेश को बनाया। इन्होंने शासक बनने के बाद दूर्ग जीतने का प्रयास शुरू किया।
- शिवाजी ने सर्वप्रथम 1644 में बीजापुर से तोरण का किला छीन लिया।
  1648 में इन्होंने जाबली किला और 1656 में पुरंदर के किला को भी जीत लिया। जाबली का किला सैन्य दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण था।

शिवाजी ने तोरण किला से लगभग पाँच किलोमीटर की दूरी पर रायगढ़ नामक किला का निर्माण कराया।

- शिवाजी ने रायगढ़ में अपनी राजधानी (1656 में) स्थापित किया।

शिवाजी ने जब अपने क्षेत्र का विस्तार करना शुरू किया पड़ोसी राज्य के साथ–साथ मुगलों से भी संघर्ष हुआ तब सैन्य अभियान किया गया, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–

सैन्य अभियान–

- **अफजन खाँ की हत्या (1659)–** शिवाजी ने बीजापुर से दूर्ग को छीन लिया था। बीजापुर के सेनापति अफजल खाँ ने अभियान किया और इस क्रम में पण्ढ़रपुर में बिठोवा मंदिर को तोड़ दिया। इसने अपना दूत कृष्ण जी भास्कर राव को शिवाजी के पास भेजा, जिसने षड्यंत्र के बारे में शिवाजी को बता दिया। परिणामस्वरूप 'पार' नामक स्थान पर शिवाजी ने अपने बघनखा से अफजल खाँ की हत्या कर दी, यह बहुत बड़ी विजय थी और शिवाजी मराठावाड़ा के क्षेत्र नायक बन गये।
- **शाईस्ता खाँ पर आक्रमण (1663)–** यह औरंगजेब के मामा थे। इनके शिविर पर शिवाजी खाँ पराजित हुए तब औरंगजेव ने दक्षिण भारत से हटाकर बंगाल भेज दिया।
- **सूरत की लूट (1664)–** यह एक औद्योगिक नगर था, जिसपर मुगलों का नियंत्रण था। अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए शिवाजी ने सूरत को लूट लिया।
- **पुरंदर की संधि (1665) –** यह संधि शिवाजी और जयसिंह के बीच सम्पन्न हुआ।

  जयसिंह मुगलों की तरफ से संधि में शामिल हुए थे। इस संधि के अनुसार 23 किला शिवाजी ने मुगलों को दिया जिसकी आमदनी 4 लाख हूण था। 12 किला शिवाजी के पास सुरक्षित बच गया जिकी आमदनी 1 लाख हूण था। इस संधि के द्वारा एक–दूसरे को सहायता देना, एक दूसरे पर आक्रमण नहीं करना शामिल किया गया, साथ ही शम्भाजी को 5000 का मनसब भी दे दिया गया।
- **आगरा की यात्रा (1666) –** जयसिंह के अनुरोध पर शिवाजी ने आगरा की यात्रा की। औरंगजेब ने राजदरबार में शिवाजी को भी 5000 का मनसब प्रदान कर दिया। अर्थात् अनको भी पुत्र की श्रेणी में शामिल कर दिया। नाराज होकर शिवाजी ने औरंगजेब को विश्वसघाती शब्द से संबोधित कर दिया। परिणामस्वरूप औरंगजेब ने शिवाजी, उनके पुत्र शम्भाजी और उनके 4000 समर्थकों को गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया।
- शिवाजी और शम्भाजी दों को आगरा के जयपुर भवन में कैद कर दिया गया।
- **सूरत की दूबारा लूट (1670) –** आगरा से निकलकर शिवाजी ने चार सालों में अपने खोये हुए सभी क्षेत्रों के साथ अन्य दूर्ग को भी जीत लिया और इसी क्रम में सूरत को दूबारा लूट लिया।
- शिवाजी को राजा की उपाधि औरंगजेब ने दिया था।
- **राज्याभिशेक (1674)–** शिवाजी ने अपनी राजधानी रायगढ़ में अपना राज्याभिषेक संपन्न कराया। काशी/बनारस के प्रसिद्ध विद्वान पंडित गंगाभट्ट या विशेश्वर ने शिवाजी का राज्यभिषेक संपन्न कराया। इस अवसर पर शिवाजी ने कई उपाधि को धारण किया। जैसे–**छत्रपति, गौ–ब्राह्मण प्रतिपालक, हैंदव धर्म उद्धारक, मराठा कुल–भूषण, मराठाकुल–वतम्भा।**
- **कर्नाटक (1676)**–यह शिवाजी का अंतिम सफल अभियान था। हैदराबाद के मदन्ना एवं अकन्ना नामक भाईयों के सहयोग से इनका अभियान सफल रहा।

  1680 में शिवाजी की मृत्यु हुई तब छात्रपति के रूप में शम्भाजी को नियुक्त किया गया।
- **शिवाजी का प्रशासन**–शिवाजी के प्रशासन को मराठा प्रशासन भी कहा जाता है। शिवाजी संगठनकर्ता, कुशल नेतृत्वकर्ता और महान प्रकाशक थे। इनके बाद बाजीराव-I को कुशल प्रशासक माना गया है। अध्ययन की सुविधा के लिए हमलोग इस प्रशासन को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। जैसे–

(i) केन्द्रीय प्रशासन

- **शासक**–इस प्रशासनिक व्यवस्था में शिवाजी सर्वोच्च अधिकारी थे। यह व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के भी सर्वोच्च अधिकारी थे।
- **मंत्रिपरिषद्**–प्रशासन में शिवाजी को सहयोग करने के लिए सचिवालय स्तर का मंत्रिपरिषद् गठित किया गया था, जिसको हुजुर–ए दफ्तर कहा गया है। इस मंत्रिपरिषद् में आठ सबसे प्रमुख मंत्री थे, जिनको अष्टधान कहा गया।
- **अष्टप्रधान शिवाजी के राजदरबार में रहते थे।**

अष्टप्रधान का वर्णन निम्नलिखित है।–

शब्दावली	अर्थ
पेशवा	प्रधानमंत्री
सुमन्त	विदेश मंत्री
अमात्य	वित्तमंत्री
सर–ए–नौबत	सेनापति
वाकयानवीस	गृहमंत्री/गुप्तचर विभाग का प्रधान
चिटनीश	राजकीय पत्र व्यवहार देखने वाला अधिकारी

पुरोहित	धार्मिक मामलों का अधिकारी
न्यायाधीश	न्याय करने वाला अधिकारी

- **सैन्य प्रशासन–**मावल प्रदेश के सैनिक इनकी सेना में सबसे अधिक थे। पैदल सैनिक को पायक कहा गया है। शिवाजी का सबसे मजबूत पक्ष सथायी सेना था, जिसको पागा कहा गया है। यह अश्वरोही सेना होता है, जिसका दो भागों में विभाजन किया गया था। जैसे–

1. **सिलहदार–**वैस सैनिक जिनको अश्व के साथ–सभी आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था स्वयं करना होता था, उसको सिलहदार कहते थे।
2. **बरगीर–**वैसे सैनिक जो अश्व के थ–साथ आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था सरकार की तरफ से ग्रहण करते थे, उसे बरगीर कहा गया।

शिवाजी ने तोप और गोला बारूद फ्रांसीसियों से प्राप्त किया था। इन्होंने जंजीरा द्वीप (अरब सागर) में स्थित सीद्धियों मुकाबला करने के लिए दरिया–सारंग के नेतृत्व में एक जलबेड़ा का गठन किया था।

- शिवाजी का जलबेड़ा मुंबई के समीप कोलाबा में स्थित था।

शिवाजी ने अपने सभी अधिकारियों को वेतन में भूमि के बदले नगद वेतन देने की व्यवस्था को लागू किया था।

- **राजस्व प्रशासन–** शिवाजी ने अन्नाजी दतों के नेतृत्व में भूमि का पैमाइश कराया। प्रारंभ में शिवाजी ने 33 % कर वसूल किया जिसे बाद में बढ़ाकर 40 % कर दिया गया। भूमि की पैमाइश के लिए शिवाजी ने काठी/मानकछड़ी का प्रयोग किया। 20 काठी बराबर 1 बीघा होता था।—
- **चौथ–**यह आय का सबसे प्रमुख स्रोत था, जो मुगल क्षेत्र या पड़ोसी क्षेत्र से 1/4 वसूल किया जाता था।

(ii) प्रांतीय प्रशासन–शिवाजी ने प्रशासनिक सुविधा के लिए अपने विशाल साम्राज्य को तीन प्रांतों में विभाजित किया था, जिसको स्वराज कहा गया है। यह प्रांत और उसके अधिकारी निम्नलिखित हैं–

प्रांत	अधिकारी
उत्तरी प्रांत	मोरोत्रियम्बक पिंगले
दक्षिणी प्रांत	अन्नाजी दत्तो
दक्षिण–पूर्वी प्रांत	दत्ताजी त्रियम्बक

- शिवाजी के राज्य को स्मिथ ने ''डाकू राज्य'' कहा है।

उपर्युक्त वर्णन से शिवाजी या मराठा प्रशान के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिल जाती है।

- **शिवाजी के उत्तराधिकारी (1680–1848)–**शिवाजी के मृत्यु के बाद छत्रपति के रूप में निम्नलिखित लोगों ने शासन व्यवस्था को संचालित किया था, जिसका संक्षिप्त वर्णन यहाँ पर किया जा सकता है–
- **शम्भाजी (1680–1689)–**इसी समय औरंगजेब के पुत्र अकबर ने विद्रोह करते हुए स्वयं को मुगल बादशाह घोषित कर दिया था। जब सैन्य अभियान किया गया तब अकबर भागकर शम्भाजी के पास चला गया।
- शम्भाजी ने उज्जैन के प्रसिद्ध विद्वान कवि कलश को अपना संरक्षक नियुक्त किया था।

औरंगजेब ने ईस्लाम धर्म स्वीकार करने का प्रस्ताव रखने का प्रया किया बदले में शंभाजी ने उसकी पुत्री जीनत–उल–निशा से विवाह का प्रस्ताव रख दिया। परिणामस्वरूप औरंगजेब के आदेश पर शंभाजी की हत्या कर दी गई, जिसे मराठों के इतिहास में बर्बर हत्याकांड कहा गया है।

- **राजाराम (1689 – 1700)–**शंभाजी के पुत्र शाहू औरंगजेब के कैद में थे इसलिए राजाराम को छत्रपति घोषित किया गया। राजाराम ने प्रतिनिधि नामक एक नये पद का सृजन किया और शाहू के प्रतिनिधि के रूप में शासन व्यवस्था को संचालित किया।
- राजाराम ने रायगढ़ से राजधानी परिवर्तित करके सतारा में स्थापित किया।
- राजाराम एकमात्र छत्रपति है, जो कभी भी गद्दी पर आसीन नहीं हुए।
- **ताराबाई (1700 – 1707)–**राजाराम की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी ताराबाई एक छोटे से बालक शिवाजी–II को छत्रपति घोषित करके स्वयं रक्षिका बन गई। शिवाजी के बाद ताराबाई ने सभी खोये हुए मराठा क्षेत्र को वापस प्राप्त कर लिया।
- मराठों के इतिहास में ताराबाई सबसे योग्य और महत्वपूर्ण महिला थी।

1707 ई. में खेड़ा के युद्ध में शाहू से पराजित हो गई और संधि शर्त के अनुसार अब ताराबाई और उनका परिवार कोल्हापुर चला गया।

- **शाहू–I (1707 - 48)** – मुगल बाइशाह बहादुर शाह–I ने इसको कैद खाने से 1707 ई. में मुक्त कर दिया। परिणामस्वरूप ताराबार्द के साथ संघर्ष हुआ, जिसमें धन्नाजी जादव शाहू की तरफ से शामिल हुए थे और खेड़ा के युद्ध में ताराबाई पराजित हो गई। इस प्रकार शाहू को छत्रपति घोषित किया गया।

इसके समय में 1719 में सैय्यद बंधुओं ने संधि किया था। इसी के समय में सैय्यद बंधुओं ने मिलकर फरूखसियर की हत्या भी कर दी।

- **रामराजा (1748 – 1777) –** इनके समय में पेशवा का पद वंशानुगत हो गया। इसी समय में 1761 में पानीपत का तृतीय युद्ध हुआ था। इसी के समय में शाह आलम द्वितीय को अंग्रेजों के कैद से मुक्त कराकर पुनः दिल्ली की गद्दी पर बैठाया गया था।
- **शाहू-II (1777 - 1808)** – इसने लार्ड वेलेजली के साथ सहायक संधि पर हस्ताक्षर कर दिया और अंग्रजों के अधीन हो गया।
- **प्रतापसिंह (1808 -1837) -** यह नाम मात्र के छत्रपति थे। अंग्रेंजों ने इन पर पूर्ण रूप से नियंत्रण स्थापित कर लिया था।

- **शाह–जी–अप्पासाहिब (1837 – 1848) –**
- यह अंतिम छत्रपति थे।
- लार्ड डलहौजी ने **विलय का सिद्धांत के अन्तर्गत 1848 में सर्वप्रथम सतारा** को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।

इस प्रकार सतारा को मिलाने के बाद शिवाजी का वंशज और उनके द्वारा स्थापित राज्य 1848 में समाप्त हो गया।

- **पेशवा–**मराठों का उत्कर्ष शिवाजी के बाद पेशवाओं के अधीन हुआ और इन्हीं लोगों के काल में मराठों का पतन भी हो गया। कुछ महत्वपूर्ण पेशवाओं का नाम निम्नलिखित है–
- **बालाजी विश्वनाथ (1713 – 1720) –** यह महाराष्ट्र के चित्तपावन ब्राह्मण कुल से संबंधित थे। यह भू–राजस्व के बहुत बड़े विशेषज्ञ थे, इसलिए शाहू ने इनको अपनी सेवा में शामिल किया। इनकी योग्यता से प्रभावित होकर सेनाकर्ते के पद पर आसीन कर दिया। यह पद सेनापति के ऊपर का पद माना गया हैं 1713 ई. में शाहू ने इनको अपना पेशवा नियुक्त कर लिया।

  इनके समय में सैय्यद बंधुओं के साथ संधि किया गया, जिसमें इस पेशवा ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। संधि शर्त के अनुसार 15000 सैनिकों की सहायता देने की बात शामिल किया गया। चौथ और सरदेशमुखी वसूलने की बात भी शामिल किया गया। एक–दूसरे की सहायता करना भी इसमें शामिल कर लिया गया। इसलिए इस संधि को मराठों का मेग्नाकार्टा (महाधिकार पत्र) कहा गया है।
- **बाजीराव–I (1720 - 1740)** – यह सबसे योग्य पेशवा थे। इनको लड़ाकू पेशवा कहा गया है। शिवाजी और ताराबाई के समान इन्होंने मराठा साम्राज्य को विस्तारित किया था। बाजीरात-I के द्वारा शाहू को संबोधित करते हुए प्रसिद्ध कथन ''आओ हम इस पुराने वृक्ष के खोखले तने पर प्रहार करें, शाखाएँ तो स्वयं गिर जाएँगी और हमलोग मराठा पताका को कृष्णा से लेकर अटक तक फहरा देंगे।''

  जवाब में शाहू का कथन–''आप योग्य पिता के योग्य पुत्र हैं, निश्चित रूप से इस कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं।''

  बाजीराव–I ने गुजरात और मालवा के साथ बुंदेलखंड को भी जीत लिया। बुंदेलखंड की विजय इनकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। बुंदेलखंड की राजकुमारी मस्तानी के साथ बाजीराव–I का प्रेम संबंध था। इतिहासकारों के अनुसार वह प्रशासन में भी हस्तक्षेप करती थी। इसलिए इतिहास में बाजीराव–I की आलोचना की गयी।
- इस पेशवा ने शिवाजी के बाद गुरिल्ला युद्ध पद्धति/छापामार युद्ध प्रणाली का सबसे अधिक प्रयोग किया था।
- इसने हिन्दू–पद पदशाही का सबसे अधिक विस्तार किया था।

  इसने अपनी शक्ति को प्रदर्शित करते हुए मुहम्मद शाह रंगीला के समय दिल्ली पर आक्रमण कर दिया था।
- **बालाजी बाजीराव (1740 – 1761) :** इनको इतिहास में नानासाहब कहा गया है।
- इनके समय में पेशवा का पद वंशानुगत हो गया।
- इसी के समय में 1761 में पानीपत का तृतीय युद्ध हुआ था।

  यह अंतिम महत्वपूर्ण पेशवा थे। इन्होंने छत्रपति के साथ 1750 में संगोला की संधि किया परिणामस्वरूप पेशवा का पद वंशानुगत हो गया। इसने हैदराबाद के निजाम को पराजित करके 1752 में झलकी की संधि किया। परिणामस्वरूप हैदराबाद का कुछ क्षेत्र इसको प्राप्त हुआ।
- **पानीपत का तृतीय युद्ध–14 जनवरी 1761** को यह युद्ध मराठा और नादिरशाह का सेनापति अहमद शाह अब्दाली के बीच हुआ, जिसमें मराठे पराजित हो गये। अहमद शाह अब्दाली अफगानी था। लूटपाट करने के उद्देश्य से यह आक्रमण किया था। इस युद्ध मराठा तोपखाना का नेतृत्व करने के उद्देश्य से यह आक्रमण किया था। इस युद्ध में मराठा तोपखाना का नेतृत्व इब्राहिम खाँ गार्दी ने किया था।
- इस युद्ध में मराठों की तरफ से वास्तविक सेनापति सदाशिव राव भाउ थे, जबकि नाममात्र का सेनापति विश्वासराव भाउ था।

  इस युद्ध में कुशल नेतृत्व का अभाव, सीमित संसाधन, आम जनता की सहानुभूति प्राप्त नहीं होना और अहमद शाह अब्दाली की कुशल युद्ध नीति ने मराठों को पराजित कर दिया और इसी पराजय के कारण इस पेशवा की भी मृत्यु हो गई।
- **माधव नारायण राव (1761 - 1772)**– पानीपत के तृतीय युद्ध के बाद मराठों की स्थिति को इस पेशवा ने सुधारने का प्रयास किया था और बहुत हद तक सफल भी होते जा रहा था। 1772 में इसकी मृत्यु हो गई। इसके बारे में कहा गया है पानीपत के तृतीय युद्ध ने जितना क्षति नहीं पहुँचाया, उससे कई गुणा अधिक क्षति इसकी असामयिक मृत्यु ने पहुँचा दिया।
- **नारायण राव (1772 – 1773)–** इसके समय में एक नये चरित्र रघुनाथ राव या राघोवा का उदय हुआ जो इस पेशवा के चाचा थे, जिन्होंने नारायण राव की हत्या कर दी और अंग्रेजों के शरण में चला गया ।
- **माधव नारायण राव**-II (1774 - 1795)– नारायण राव की विधवा गंगाबाई ने जिस पुत्र को जन्म दिया उसी को माधव नारायण राव द्वितीय के नाम से पेशवा बनाया गया। प्रशासन को चलाने के लिए 12 व्यक्तियों का प्रशासनिक संगठन बनाय गया, जिसको बारभाई कहा गया है। इसमें महादजी सिंधिया और नाना फड़नवीश सबसे अधिक शक्तिशाली थे।
- नाना फड़नवीश का मूल नाम बालाजी जनार्दन भानु था। इनको मराठों का मेकियावेली कहा गया है।

  इस पेशवा के समय मराठा साम्राज्य कई भागों में विभाजित हो गया था। जैसे–

राज्य	वंश	राज्य	वंश
सतारा	छात्रपति	पूणा	पेशवा

कोल्हापुर	ताराबाई	ग्वालियर	सिंधिया
बड़ौदा	गायकवाड़	इंदौर	होल्कर
नागपुर	भोसले		

egknt hfl fa/k; k vkSj ukuk QMuohl ds fu;a=.k l s mcdj bl is'kok us vkRegR;k dj fy;kA bl ds iwoZ j k?kok us vaxzstksa ds lkFk l fa/k fd;k FkkA tSl s&

- **सूरत की संधि (1775)** – यह संधि अंग्रेज और राघोवा के बीच हुआ। राघोवा को पेशवा बनाने के बदले में बेसिन, सालसेट और थाने का अंग्रेजों ने क्षेत्र प्राप्त कर लिया। यही संधि युद्ध का कारण बना।
- **प्रथम आंग्ल–मराठा युद्ध (1775 – 1782)** – 1782 में सालबाई की संधि के द्वारा यह युद्ध समाप्त हुआ। संधि कराने में महादजी सिंधिया ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी।
- **पुरंदर की संधि (1776)** – यह संधि भी अंग्रेज और राघोवा के बीच हुआ। इस संधि के अनुसार सूरत की संधि को रद्द किया गया, लेकिन अंग्रेजों ने बेसिन, सालसेट और थाने का क्षेत्र मराठों को वापस नहीं किया।
- **बाजीराव–II (1796 – 1818)** – यह अंतिम पेशवा था। यह रघुनाथ राव का पुत्र था। मराठों के पतन में सबसे अधिक जिम्मेवारी इसी का माना गया है, क्योंकि यह सबसे अयोग्य पेशवा था। इसने जसवंत राव होल्कर के भाई की हत्या कर दी और अंग्रेजों के शरण में जाकर बेसिन की संधि पर हस्ताक्षार कर दिये, जो युद्ध का कारण बना।
- **द्वितीय आंग्ल–मराठा युद्ध (1803 – 1806)** – इसमें मराठे संयुक्त रूप से शामिल हुए थे। 1803 में सुर्जी अर्जुन गाँव की संधि, 1804 में देवगाँव की संधि और 1806 में राजपुर घाट की संधि के द्वारा यह युद्ध समाप्त हुआ।
- **तृतीय–आंग्ल–मराठा युद्ध (1817 – 1818)** – यह काल साम्राज्यवादी प्रवृत्ति के गवर्नर जनरल लॉर्ड हेस्टिंग्स का काल था। इसको सहायक संधि को विस्तार करने के लिए याद किया जाता है।
- मराठों के पूर्ण पतन कराने का श्रेय लॉर्ड हेस्टिंग्स को दिया गया हैं

1817 में लॉर्ड हेस्टिंग्स ने बाजीराव द्वितीय के साथ ग्वालियर की संधि किया। इस संधि शर्त के अनुसार–II ने मराठा संघ्ज्ञ के अध्यक्ष पद को छोड़ दिया। बाजीराव-II अंतिम रूप से कोरेगाँव और अष्टि के युद्ध में पराजित हुआ तथा आत्म समर्पण कर दिया परिणामस्वरूप 1818 में कानपुर की संधि इनके साथ किया गया। संधि शर्त के अनुसार पेशवा को कानपुर के समीप बिठुर नामक स्थान पर भेज दिया गया और पेशवा का पद समाप्त कर दिया गया। 1853 में बिठुर में ही इसकी मृत्यु हो गई। इसने दुदुपंत (नानासाहेब) को गोद लिया था।

- **मराठों के पतन का कारण**–तत्कालिन परिस्थितियों में कई कारणों ने मिकर मराठों का पतन कर दिया जैसे–

1. अयोग्य उत्तराधिकारी
2. सहानुभूति की कमी
3. कुशल नेतृत्व का अभाव
4. अहमदशाह अब्दाली का आक्रमण

सिक्ख आंदोलन (1469 – 1849)

- सिक्ख का शाबिदक अर्थ शिष्य होता है और इसका साहित्यिक अर्थ सीखने वाला होता हैं इस आंदोलन के जनक गुरूनानक देव थे। इस आंदोलन के जनक गुरूनानक देव थे। इस आंदोलन में 10 सिख गुरू, बंदाबहादुर और रंजीत सिंह ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। इस आंदोलन का प्रारंभिक स्वरूप धार्मिक था, लेकिन आगे चलकर इसका स्वरूप राजनीतिक हो गया, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- **गुरूनानक देव (1469 – 1539)** – यह सिख धर्म के प्रवर्तक थे। इन्होंने सिख आंदोलन को भी शुरू किया था। यह सिख धर्म के प्रथम गुरू थे। इनका जन्म 1469 में पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की राजधानी लाहौर में तलवंडी के पास हुआ था।
- तलवंडी को वर्तमान समय में नानकालना–साहिब कहा जाता है।

firkdkuke& dkywpa egrk
ekrkdkuke & rIrk
cgu dkuke & ukudh
iRuhdkuke & Iqy{kkh
iq= dkuke & Jhpa

IYrkuij esacbZunhdsfdukjs1499 esbudksKku dhiklr gqvkvkjSbl dhdsI kFkfl [k/keZdkm; HkhgqvkA blgksusviuserksdkizpkj&izlkj I axhr dsek/; e ls'kq fd;k] ftI esbudkfiz; f'k"; ejnkukjckc uked ok|; ;a= ctkdj budkI kFknsrkFkkA blgksusI R; uke dhitwkdhiZkkdksHkh'kq fd;kA

- इन्होंने संगत और पंगत अर्थात धर्मशाला और लंगर व्यवस्था की प्रथा को भी शुरू किया।
- गुरूनानक देव कबीरदास के समान मानवतावादी कवि भी थे। इन्होंने जात–पात, छुआछुत, ऊँच–नीच और अंधविश्वास का विरोध किया। 1539 ई. में करतारपुर में इनकी मृत्यु हो गई तब इनके प्रिय शिष्य लहना सिंह गुरू अंगद के नाम से गुरू के पद पर आसीन हुए।
- **गुरू अंगद (1539 – 1552)** – यह सिखां के दूसरे गुरूथे, जिनके बचपन का नाम लहना सिंह था।
- **इन्होंने गुरूमुखी लिपित को जन्म दिया था।**
- **इन्होंने लंगर व्यवस्था को अनिवार्य कर दिया।**
- **इन्होंने गुरूनानक देव की जीवनी को लिखा था।**
- **गुरू अमरदास (1552 – 1575)** – यह गुरू अंगद के प्रिय शिष्य थे। इनके समय में सिख धार्मिक साम्राज्य का विस्तार हो गया था, इसलिए इसको 22 भागों में विभाजित करके एक–एक प्रधान की नियुक्ति कर दिया गया।

  इन्होंने सती प्रथा और मदीरा पीने की प्रथा का विरोध किया था। हिन्दू विवाह पद्धति से अलग हटकर सिक्खों के लिए एक नई विवाह पद्धति को लागू किया, जिसे लवन पद्धति कहा गया है।

  इन्होंने गोईन्दवाल नामक स्थान पर एक विशाल सरोवर का निर्माण कराया जो, आगे चलकर विश्वविख्यात हुआ।

  अकबर ने इनकी पुत्री बीबीभानी को करमुक्त जमीन उपलब्ध कराया था और पंजाब का एकसाल का कर भी माफ कर दिया था। गुरू अमरदास के दामाद चौथे गुरू के रूप में नियुक्त हुए।
- **रामदास (1575 – 1581)** –
- **इनके समय से गुरू का पर वंशानुगत हो गया।**
- **इन्होंने 1577 में अमृतसर की स्थापना की थी।**

  रामदास ने अकबर के द्वारास प्राप्त 500 बीघा जमीन पर चकगुरू, या रामदासपुर नामक नये नगर का निर्माण कराया जो अमृतसर के नाम से विख्यात हुआ।
- गुरू रामदास ने अमृतसर में स्वर्ण मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ कराया और इसको पूरा कराने का श्रेय अर्जुनदेव को दिया जाता है।

  गुरू रामदास मुगल बादशाह अकबर के परम मित्र भी थे।
- **अर्जुनदेव (1581 – 1600)** – यह सिक्खों के पाँचवें गुरू थे और अब तक के सबसे लोकप्रिय गुरू थे। इनके समय में सिख आंदोलन बहुत अधिक विस्तारित रूप ग्रहण कर चुका था।
- इनके समय में स्वर्ण मंदिर का निर्माण कार्य पूरा हुआ।
- **इन्होंने सिक्खों के पवित्र ग्रंथ गुरू ग्रंथसाहिब या आदिग्रंथ की रचना की थी।**

  आदिग्रंथ में प्रारंभ के पाँच सिख गुरू, 18 हिंदू संत और कबीरदास, रैदास, नामदेव के साथ बाबा फरीद के उपदेशों को भी शामिल किया गया था।
- गुरू अर्जुनदेव ने मसनद प्रथा को प्रारंभ किया था, जिसके अन्तर्गत सिख लोग अपनी आय का 10% गुरू के पास जमा करते थे।
- इन्होंने स्वर्ण मंदिर परिसर में हरमंदिर साहिब का निर्माण कराया था।

  जहाँगीर के पुत्र खुसरो ने अपने पिता के विरूद्ध विद्रोह करते हुए स्वयं को मुगल बादशाह घोषित कर दिया था। जब अभियान किया गया तब

यह भागकर गुरू के शरण में चला गया।

- **जहाँगीर ने इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं करने पर गुरू अर्जुनदेव की हत्या करायी थी।**
- **गुरू हरगोविन्द (1606 – 1645)** – यह गुरू अर्जुनदेव के पुत्र थे। इनके समय में सिख आंदोलन का स्वरूप धार्मिक के साथ–साथ राजनीतिक भी हो गया, क्योंकि पिता की हत्या करने से मुगलों के साथ संघर्ष शुरू हुआ।
- इन्होंने स्वर्ण मंदिर परिसर में अकालतख्त या प्रभु का सिंहासन की स्थापना की।
- मुगलों के साथ संघर्ष करने के लिए सिक्खों को पहली बार लड़ाकू बनाने का प्रयास इनके द्वारा शुरू किया गया।
  इन्होंने स्वयं को सच्चा बादशाह घोषित किया और अपने अनुयायियों को मांस खाने का भी आदेश जारी कर दिया। इन्होंने बाज और शस्त्र तथा छत्र को प्रतीय चिन्ह के रूप में अपनाया और अमृतसर की घेराबंदी कराकर स्वयं को शासक के रूप में परिवर्तित कर दिया।
- **गुरू हरराय (1645 – 1661)** – औरंगजेब ने इनको दिल्ली दरबार बुलाया। इन्होंने अपने बड़े पुत्र रामराय को भेज दिया और रामयाय ने झूठ का सहारा लेकर धार्मिक मामलों में औरंगजेब को संतुष्ट कर दिया। परिणामस्वरूप गुरू हरराय ने रामराय के बदले अपने छोटे हरकिशन को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।
- **गुरू हरकिशन (1661 – 1664)** – इनको भी दिल्ली दरबार में बुलाया गया। दिल्ली पहुँचने पर चेचक हो जाने के कारण इनकी मृत्यु हो गई तब गुरू हरगोविन्द के पुत्र गुरू तेगबहादुर को गुरू बनाया गया।
- **गुरू तेगबहादुर (1665 – 1675)** – इनके बचपन का नाम त्यागमल था। इनको बाकलाबाबा भी कहा गया है। इन्होंने भारतवर्ष में घूमकर अपने अनुयायियों की संख्या को बढ़ाने का कार्य शुरू किया था। कश्मीर के सूबेदार के बहकावे में आकर औरंगजेब ने इनको गिरफ्तार कर लिया।
- इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं करने पर दिल्ली के समीप शीशगंज नामक स्थान पर औरंगजेब ने इनकी हत्या कर दी।
- **गुरू गोविन्द सिंह (1675 – 1708)** – यह सिक्खों के दसवें और अंतिम गुरू थे। इन्होंने गुरू के पद को समाप्त कर दिया तथा गुरू ग्रंथ साहिब को गुरू मानने का संकल्प जारी किया। इन्होंने आनंदपुर को अपना प्रारंभिक कार्यस्थली बनाया।

  इनका जन्म 1666 में पटना साहिब में हुआ था। इनकी माँ का नाम गुजरीबाई था। इनका नौ साल तक का बचपन पटना साहिबामें ही व्यतीत हुआ और पिता की हत्या के बाद अंतिम गुरू के रूप में स्थापित हुए।
- इन्होंने पाहुल प्रणाली की प्रथा को जन्म दिया था।
- इन्होंने **13 अप्रैल, 1699** में वैशाखी के दिन आनंदपुर साहिब में **खालसा** की स्थापना की थी।
- इन्होंने सिक्खों को पूर्ण रूप से सैन्य व्यवस्था में परिवर्तित कर दिया।
- वाहे गुरू बोकर अभिवादन करने की प्रथा इन्होंने शुरू की थी।
- इनको संत सिपाही भी कहा जाता है।

  इनके साथ मुगलों का संघर्ष सबसे अधिक हुआ परिणामस्वरूप दो मुख्य युद्ध किया गया। जैसे–

1. **आनंदपुर का प्रथम युद्ध (1701)** – इस युद्ध में मुगल सेना पराजित हो गई और गुरू गोविन्द सिंह की सेना विजयी हुई।
2. **आनंदपुर का द्वितीय युद्ध (1703)** – इस युद्ध में मुगल विजयी हुए और औरंगजेब ने इनके दो पुत्र जोरावर सिंह और फतेह सिंह दोनों को जीवित ही दीवार में दफन करा दिया।

   इस युद्ध में पराजय के बाद गुरू गोविन्द सिंह को आनंदपुर के साथ–साथ अंबाला के समीप लौहगढ़ के दूर्ग को भी छोड़ना पड़ा, जिसका निर्माण इन्होंने स्वयं कराया था।

- गुरू गोविन्द सिंह के नाम के साथ पाँच ककार जुड़ा हुआ है जैसे–कैश, कंघ, कच्छा, कड़ा और कृपाण।

  इन्होंने दशवाँ बादशाह, विचित्रचित और इसमग्रंथ नामक पुस्तक की रचना किया था। इन्होंने अपने अंतिम समय में औरंगजेब को जो पत्र लिखा उसे हफरनामा कहा गया हैं
- 10 अस्थायी सदस्य महासभा द्वारा 2 वर्ष के लिए चुने जाते हैं।

  महाराष्ट्र के नान्देड़ के हजूर साहिब में गुलखाँ नामक पछान ने 1708 ई. में इनकी हत्या कर दिया। तब इनके प्रिय शिष्य बंदा बहादुर ने सिख आंदोलन का नेतृत्व किया।
- **बंदा बहादुर**–गुरू गोविन्द सिंह की हत्या के बाद इनके सबसे प्रिय शिष्य बंदा बहादुर ने सिक्ख आंदोलन का नेतृत्व किया। इसने लौहगढ़ को अपनी राजधानी बनाया।
- **बंदा बहादुर का मूल नाम लक्ष्मणदासस था।**

फरूखर्शियर के समय में बंदा–बहादुर की हत्या कर दी गयी तब सिख धर्म दो भागों में विभाजित हुआ जैसे–

(i) तत्खालसा–जो सिख प्राचीन परंपरा को मनाते थे, वह तत्खालसा कहलाए।

(ii) बंदई–जो बंदा बहादुर के अनुयायी थे, उनको बंदई कहा गया।

बंदा बहादुर के मृत्यु के बाद सिख आंदोलन कुछ समय के लिए स्थित हुआ, क्योंकि सिक्खों ने अपना–अपना मिस्ल स्थापित कर लिया था।

- **मिस्ल**–मिस्ल एक अरबी शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ एक समान या एक जैसा होता है। सरल शब्दों में राज्य को मिस्ल कहा गया है, जिसकी संख्या इस समय 12 थी। इसमें सबसे शक्तिशाली सुकरचकिया मिस्त था, जिसकी स्थापना रंजीत सिंह के दादा जी चरतसिंह ने किया था।
- **रंजीत सिंह (1780 – 1839) :** रंजीत सिंह ने सिख आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। इनका जन्म 1780 में हुआ था। इनके पिता

का नाम महासिंह और माँ का नाम राजकौर था।

- **रंजीत सिंह सुकरचकिया मिस्ल के थे।**
  1798 में पिता की मृत्यु के बाद यह सुकरचकिया के प्रधान बने। इसी समय अहमद शाह अब्दाली का पौत्र जमान शाह ने पश्चिमोत्तर भारत पर आक्रमण किया था। वापसी के क्रम में उसकी कुछ महत्वपूर्ण तोप चिनाब नदी में गिर गयी। रंजीत सिंह इस तोप को सुरक्षित रूप में जमान शाह के पास भेज दिया। खुश होकर हमान शाह ने इनको लाहौर का क्षेत्र प्रदान कर दिया।
- इन्होंने लाहौर को अपनी राजनीतिक राजधानी तथा अमृतसर को अपनी धार्मिक राजधानी बनाया।
  इन्होंने अपनी सेना को मजबूत करने के लिए फ्रांसीसी विशेषज्ञ की सहायता ली। जैसे–कोर्ट और गार्डनर के सहयोग से इन्होंने तोपखाने का पुनर्गठन किया।
- **रंजीत सिंह ने लाहौर में तोप बनाने की फैक्ट्री को स्थापित किया था।**
  इनके पैदल सैनिक को फौज–ए–आईन कहा गया है। इसको मजबूत बनाने के लिए फ्रांसीसी विशेषज्ञ ऐलार्क और वेंचुरा का सहयोग लिया गया। रंजीत सिंह ने लाहौर में एक उच्च न्यायालय को भी स्थापित किया था, जिसको अदालत–उल–आला कहा गया हें यह एक धर्म निरपेक्ष शाषक थे। इन्होंने खालसा के नाम पर शासन किया और गुरूनानक देव तथा गुरू गोविंद सिंह के नाम का सिक्का जारी किया और बादशाह की उपाधि धारण कर ली। जब क्षेत्र का विस्तार हुआ तब इन्होंने सिख साम्राज्य को 4 प्रांतों में विभाजित कर दिया जैसे लाहौर, पेशावर, मुल्तान और कश्मीर।
- प्रसिद्ध फ्रांसीसी यात्री **जैकयूमाँ** ने रंजीत सिंह को **भारत का लघु नेपालियन** कहा है।
  रंजीत सिंह के दरबार में सबसे विश्वासपात्र व्यक्ति दीवान दीनानाथ और फकीर अजीजुउद्दीन थे। जब इनके क्षेत्र का और विस्तार हुआ तब अंग्रेजों ने 1809 में एक संधि किया।
- **अमृतसर की संधि (1809)** – यह संधि रंजीत सिंह और चार्ल्स मेटकाफ के बीच हुआ। संधि शर्त के अनुसार अंग्रेज और इनके राज्य की सीमा सतलज नदी को मान लिया गया। इसका उद्देश्य रंजीत सिंह के साम्राज्य विस्तार पर अंकुश लगाना था।
  रंजीत सिंह, अंग्रेज और शाहशूजा के बीच (1838 – 1839) में त्रिदलीय संधि हुआ। संधि शर्त का एक मात्र उद्देश्य था, रूस की बढ़ती शक्ति को रोक देना। **इस संधि के द्वारा शाहशुजा ने रंजीत सिंह को कोहीनूर का हीरा प्रदान किया।** 1839 में रंजीत सिंह की मृत्यु हो गई। तब उनके पुत्र खड़गसिंह गद्दी पर आये लेकिन गद्दी के लिए नौनीताल सिंह और शेरसिंह भागकर अंग्रेजों की शरण में चला गया परिणामस्वरूप दो युद्ध हुये। जैसे–
- **प्रथम आंग्ल–सिख युद्ध (1845–1846)** – इस युद्ध में सिख पराजित हुए और 1846 में लाहौर की संधि की गयी। संधि शर्त के अनुसार रंजीत सिंह के सबसे छोटे पुत्र दिलीप सिंह को महाराज बनाया गया और उसकी माँ बीबी साहिबा या जिंदा कोक संरक्षिका बना बदया गया। 1846 में ही भैरोवाल की संधि किया गया और इस संधि शर्त के अनुसार दिलीप सिंह से उसकी माँ को अलग करके शेखपुरा भेज दिया गया।
- **द्वितीय आंग्ल–सिख युद्ध (1848 – 1849)** – इस युद्ध का मुख्य कारण मुल्तान में मूलराज के द्वारास किया गया विद्रोह था। ऐलोक्जेंडर गफ ने चिलियानवाला युद्ध का नेतृत्व किया था। लेकिन चार्ल्स नेपियर ने अंतिम रूप से चिनाब नदी के किनारे पराजित कर दिया।
  लॉर्ड डलहौजी ने 1849 में पंजाब को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया। दिलीप सिंह और उनकी माँ को ब्रिटेन भेज दिया गया। इन्हीं लोगों के साथ कोहीनूर हीरा भी ब्रिटेन चला गया और महारानी विक्टोरिया को दे दिया गया। यह आंदोलन 1849 में समाप्त हुआ।

आंग्ल–मैसूर संबंध

- विजयनगर साम्राज्य के अन्तर्गत वाडियार वंश की स्थापना हुयी अर्थात मैसूर स्वतंत्र हो गया। इस समय मैसूर का शासक चिक्का कृष्णराज था, लेकिन वास्तविक शक्ति नंदराज और देवराज नामक भाइयों के हाथों में केन्द्रित था। इस समय दीवान के पद पर खांडेराव थे, जो बहुत अधिक शक्तिशाली थे। इसी राजनीतिक घटनाक्रम में हैदरअली का उदय हुआ।
- **हैदरअली**–हैदरअली का जन्म कर्नाटक के कोलार जिला में बुदीकोट नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता फतेह मोहम्मद मैसूर सेना में शामिल थे। परिणामस्वरूप हैदर अली भी कालांतर में इसी सेना में शामिल हो गये। अपनी योग्यता के बल पर सेनापति बन गये। दीवान खांडेराव को गिरफ्तार कर लिया, राज बंधुओं की हत्या करा दी ओर 17641 में मैसूर का शासक हैदरअली बन गये।
- हैदरअली ने **डिंडीगुल/डिप्टीजल** में फ्रांसीसियों के सहयोग से आधुनिक शस्त्रागार का निर्माण किया।
  हैदरअली ने क्षेत्र विस्तार के क्रम में सुदा, सेन्दा, कन्नड़ और मालाबार के क्षेत्र को जीत लिया।
  परिणामस्वरूप इनके राज्य की सीमा अंग्रेजों की सीमा से मिल गया। इसलिए चार युद्ध हुए जैसे–
  I आंग्ल–मैसूर युद्ध (1767 - 1769) – मद्रास की संधि
  II आंग्ल–मैसूर युद्ध (1780 - 1784) – मंगलौर की संधि
  III आंग्ल–मैसूर युद्ध (1790 - 1792) – श्रीरंगपट्टनम की संधि
  IV आंग्ल–मैसूर युद्ध (1799)
- **I-आंग्ल–मैसूर यूद्ध**–यह युद्ध मद्रास की संधि के द्वारा समाप्त हुआ। संधि शर्त के अनुसार एक–दूसरे के जीते हुए क्षेत्र वापस करना था। एक–दूसरे पर आक्रमण नहीं करना था और तीसरा कोई व्यक्ति आक्रमण करता है। तो एक–दूसरे को सैन्य सहायता देना था। लेकिन हैदरअली ने करूर का क्षेत्र अंग्रेजों का नहीं दिया।
- **I-आंग्ल–मैसूर युद्ध**–मराठों ने जब हैदरअली पर आक्रमण किया तब अंग्रेजों ने मद्रास की संधि शर्त के अनुसार हैदरअली का साथ नहीं दिया, बल्कि माही जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र पर नियंत्रण कर लिया, जो युद्ध का कारण बना।
  हैदरअली ने 1781 में पोर्टोनोवा ने युद्ध में कर्नल बेली को पराजित कर दिया। लेकिन 1782 में सर आयरकुट से हैदरअली पराजित हो गये। 1782 में मृत्यु के पूर्व हैदरअली ने कर्नल ब्रेथवेट को पराजित कर दिया था। इनकें मृत्यु के बाद टीपू सुल्तान ने नेतृत्व संभाल लिया और मंगलौर की संधि किया।
- **III-आंग्ल–मैसूर युद्ध**–फ्रांसीसियों के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ षड्यंत्र रचने का आरोप लगाकर टीपू सुल्तान पर अंग्रेजों ने आक्रमण कर दिया और श्री रंगपट्टनम की संधि हुआ। संधि शर्त के अनुसार टीपू को अपना आधा राज्य और युद्ध क्षतिपूर्ति के रूप में तीन करोड़ रूपये अंग्रेजों को देना पड़ा परिणामस्वरूप आर्थिक और सामरिक रूप से टीपू सुल्तान बहुत अधिक कमजोर हो गये।
- **IV-आंग्ल–मैसूर युद्ध**–इस युद्ध का मूल कारण सहायक संधि पर हस्ताक्षर नहीं करना था, लेकिन अंग्रेजों ने टीपू सुल्तान पर भी षड्यंत्र रचने का आरोप लगाकर आक्रमण कर दिया। वेलेजली ने स्वयं सेना का नेतृत्व किया।

बंगाल पर अंग्रेजों का अधिकार

- इस समय बंगाल में बिहार और डड़ीसा भी शामिल था।बिहार और उड़ीसा के साथ–साथ बंगाल खनिज संपदा वाला महत्वपूर्ण राज्य था। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी बंगाल सबसे महत्वपूर्ण था। बिहार में शोरा का भंडार था, जिसका प्रयोग मुख्य रूप से बारूद गोला में किया जाता था। उपर्युक्त कारणों के चलते अंग्रेजों ने बंगाल पर अधिकार करने का सफल प्रयास किया, जिसमें बंगाल के नवाबों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, जिसका वर्णन निम्नलिखित है–
- **मुर्शिदकुली खाँ (1717 – 1727) –** औरंगजेब के समय में 1700 ई. में यह बंगाल का सूबेदार बना था और 1717 में इसने बंगाल में स्वतंत्र सत्ता की स्थापना कर दिया और यहीं से एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में बंगाल, बिहार और उड़ीसा का उदय हुआ।
- इसने मुर्शीदाबाद नामक नये नगर का निर्माण कराया।
- इसने ढाका से राजधानी परिवर्तित करके **मुर्शिदाबाद** में स्थापित किया।
- **शुजाउद्दीन (1727–1739) –** इसने बंगाल, बिहार और उड़ीसा को एक क्षेत्र के रूप में संयुक्त करके प्रशासनिक व्यवस्था को कायम किया था, जो इसकी सबसे महत्वूपर्ण उपलब्धि है।
- **सरफराज खाँ (1739) –** इसके समय में अलीवर्दी खाँ नामक नये चरित्र का उदय हुआ, जिसने सरफराज का वध किया और स्वयं बंगाल का नवाब बन गया।
- **अलीवर्दी खाँ (1740–1756) –** अब तक का यक सबसे महत्वपूर्ण नवाब था।
- अलीवर्दी खाँ ने अंग्रेज (यूरोपीय) की तुलना मधुमक्खी को (अंग्रेज) अगर नहीं छोड़ा जाये तो वह शहद देती है और अगर छोड़ दिया जाये तो काट–काट कर मार डालती है।''

  अलीवर्दी खाँ को पुत्र नहीं था। तीन पुत्रियों में से अमीना बेगम का विवाह पटना में, घसीटी बेगम का विवाह पूर्णिया में हुआ थ। अलीवर्दी खाँ ने जैसे ही अपना उत्तराधिकारी अमीना बेगम का पुत्र सिराजुद्दौला को घोषित किया विरोध का सामना करना पड़ा।
- **सिराजुद्दौला (1756–1757) –** अलीवर्दी खाँ के नाती सिराजुद्दौला बंगाल का नवाब बना। मौसी घसीटी और भाई शौकत जंग ने इसका विरोध किया। नवाब के सेनापति मीरजाफर इसका सबसे बड़ा विरोधी था। कलकत्ता के जगत सेठ, आमीचंद और बिहार के उप दीवान राय दुर्लभ भी अंग्रेजों के साथ मिल गए।

  जब सिराज गद्दी पर आया तब कंपनी ने **Fort Viliam** की घेराबंदी शुरू कर दिया। नवाब ने आदेश जारी किया। नहीं मानने पर अभियान किया गया और नवाब ने कलकत्ता पर अधिकार करते हुए इसका नाम बदलकर अलीनगर कर दिया।
- **काली कोठरी की घटना (Black hole) (1756)** – सिराजुद्दौला ने फोर्ट विलियम से गिरफ्तार 146 अंग्रेजों की 14 फीट चौड़ा और 18 फीट लंबा एक छोटे से कमरे में कैद कर दिया। अगले दिन दम घुटने से 123 अंग्रेजों की मृत्यु हो गई।
- Black hole की घटना सिराजुद्दौला से संबंधित है और इसको बताने वाला अंग्रेज हालबेल था।

  ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने नाराज होकर लॉर्ड क्लाइब को मद्रास से कलकत्ता बुलाया, जिसने कलकत्ता पर अधिकार करते हुए सिराजुद्दौला के साथ अलीनगर की संधि की।
- **प्लासी का युद्ध (23 June, 1757)** – यह स्थल बंगाल के नदिया जिला में स्थित है विद्वानों के अनुसार इस युद्ध का परिणाम पहले से तय था, क्योंकि नवाब के सभी महत्वपूर्ण व्यक्ति अंग्रेजों से मिल गए।
- यह युद्ध अंग्रेज और सिराजुद्दौला के बीच हुआ था, जिसमें अंग्रेज विजयी हुए।
- प्लासी के युद्ध का अंग्रेजों की तरफ से नेतृत्व **लॉर्ड क्लाइव** ने किया था।

  नवाब की तरफ से मोहनलाल और मीरमदान ने अंतिम समय तक साथ दिया, लेकिन भागने के क्रम में मीरजाफर के पुत्र मिरन ने सिराजुद्दौला की हत्या कर दी।
- प्लासी के युद्ध की तुलना 1526 में हुए पानीपत के प्रथम युद्ध के साथ किया गया है।
- प्लासी के युद्ध को **बंगाल का प्रथम क्रांति** कहा गया है।
- प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजों ने बंगाल में अपनी **राजनीतिक सत्ता** को स्थापित कर दिया, जिसका श्रेय लॉर्ड क्लाइब को दिया जाता है।
- **मीरजाफर (1757–1760) :** यह अंग्रेजों के सहयोग से गद्दी पर आया था, इसलिए 24 परगना की जमींदारी अंग्रेजों को प्रदान किया।
- मीरजाफर को लॉर्ड क्लाइब का **गधा या गीदड़** कहा गया है।
- मीरजाफर के बारे में कथन–''मीरजाफर एक ऐसा थैला था, जिसमें जब चाहो हाथ डालकर धन निकाला जा सकता था।''
- मीर जाफर को हटाना बंगाल का **दूसरा क्रांति** कहलाया।
- **मीर कासिम (1760–1763) : मीरकासिम ने मुर्शीदाबाद से राजधानी परिवर्तित करके मुंगेर में स्थापित किया।**
- इसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बर्द्धमान, चटगाँव और मिदनापुर का जिला दे दिया।

- मीरकासिम ने मुंगेर में बँदूक और तोप बनाने का फैक्ट्री स्थापित किया।
- **दस्तक प्रथा**–यह बक्सर युद्ध का कारण था, जो मीरकासिम से संबंधित है। इस प्रथा के अन्तर्गत जिस व्यापारी के पास दस्तक नामक परिचय पत्र होता था वह बिना कर दिये व्यापार कर सकता था। अंग्रेज लोग इसका लाभ उठाते थे, बाद में अंग्रेज व्यापारियों ने इस परिचय पत्र को भारतीय व्यापारियों के हाथों बेचने का कार्य शुरू किया। मीरकासिम को राजस्त की हानि होने से उसने दस्तक प्रथा को समाप्त कर दिया। अब अंग्रेज और भारतीय व्यापारी समकक्ष हो गये, परिणामस्वरूप मीरकासिम पर अभियान किया गया।

  मीरकासिम मुंगेर से भागकर पटना आ गया और यहाँ 148 अंग्रेजों की हत्या कर दिया। इसे इतिहास में **पटना हत्याकांड** कहा गया है।
- **बक्सर का युद्ध (22 अक्टूबर 1746) :** इस युद्ध का तात्कालिक कारा दस्तक प्राप्ति थी। मीरकासिम, अवध के नवाब शुजाउद्दौला, मुगल बादशाह शाहआलम–II की संयुक्त सेना को अंग्रेजों ने पराजित कर दिया। इस प्रकार भारत की सम्पूर्ण शक्ति यहाँ पराजित हो गई।
- बक्सर के युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व **हेक्टर मुनरो** ने किया था।
- इस युद्ध में विजय के बाद अंग्रेजों ने पूर्ण रूप से राजनीतिक सत्ता को स्थापित कर दिया।
- इस युद्ध की तुलना 1527 के खानवा के युद्ध के साथ किया जाता है।
- इस युद्ध को बंगाल का **तीसरा क्रांति** कहा गया।
- **इलाहाबाद की संधि (1765) –** इलाहाबाद की प्रथम संधि मुगल शासक शाहआलम–II के साथ किया गया। संधि शर्त के अनुसार शाहआलम–II को 26 लाख रूपये वार्षिक पेंशन और कड़ा तथा इलाहाबाद का क्षेत्र दिया गया।
- इस संधि के द्वारा **शाहआलम–II** ने अंग्रेज/ईस्ट इण्डिया कंपनी को **बंगाल, बिहार, और उड़ीसा** की दीवानी प्रदान की।

  इलाहाबाद की दूसरी संधि अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ किया गया। संधि शर्त के अनुसार शुजाउद्दौला से कड़ा एवं इलाहाबाद का क्षेत्र लेकर शाहआलम–II को दिया गया। साथ ही 50 लाख रूपये युद्ध क्षति पूर्ति के रूप में वसूल किया गया।

  इस प्रकार अंग्रेजों ने बंगाल पर नियंत्रण कर लिया, जिसमें वहाँ के नबाव भी जिम्मेदार थे।

गवर्नर / गवर्नर–जनरल / वायसराय

(1757 - 1950)

जब ईस्ट इण्डिया कंपनी का क्षेत्र बहुत अधिक विस्तारित हो गया तब लंदन में स्थित बोर्ड ऑफ कंट्रोल / डायरेक्टर ने भारत में प्रशासन करने के लिए एक अधिकारी की नियुक्ति किया, जिसको गवर्नर कहा गया और यह बंगाल में सर्वप्रथम नियुक्त हुआ, क्योंकि तीनों प्रेसीडेंसी में बंगाल सबसे महत्वपूर्ण था।

- **1773 के अधिनियम** के द्वारा बंगाल के **गवर्नर** को गवर्नर **जनरल (महाराज्यपाल)** बना दिया गया।
- **1833 के अधिनियम** के द्वारा बंगाल के गवर्नर जनरल को **भारत का गवर्नर जनरल** बना दिया गया।
- **1858 के अधिनियम** के द्वारा भारत के गवर्नर जनरल को **वायसराय** कहा गया।

जब गवर्नर जनरल कार्यपालिका के प्रति उत्तरदायी था, तब उसे गवर्नर जनरल कहा गया अर्थात् भारत में वह गवर्नर जनरल के रूप में शासन करता था, लेकिन वही व्यक्ति ब्रिटिश संसद के प्रति या व्यवस्थापिका के प्रति उत्तरदायी होता था, तब उसको वायसराय कहा जाता था।

- बंगाल का प्रथम गवर्नर – **लॉर्ड क्लाइब / रॉबर्ट क्लाइब**
- बंगाल का प्रथम गवर्नर जनरल – **वारेन हेस्टिंग्स**
- भारत के प्रथम गवर्नर जनरल – **लॉर्ड विलियम बेंटिक**
- भारत के प्रथम वायसराय – **लॉर्ड कैनिंग**
- स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल – वायसराय – **लॉर्ड लुई माउण्टबेटन**
- स्वतंत्र भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल / वायसराय – सी. राजगोपालाचारी।
- ईस्ट इण्डिया कम्पनी का स्वरूप जब व्यापारिक से राजनीतिक हुआ और इनके क्षेत्र का विस्तार हुआ तब बंगाल के क्षेत्र में गवर्नर के नाम से एक अधिकारी की नियुक्ति की गयी। इनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–

लॉर्ड क्लाइब	–	1757 – 1760
हालवेल	–	1760
वैंसीटार्ट	–	1760 – 1765
लॉर्ड क्लाइब	–	1765 – 1767
बल्सर्ट	–	1767 – 1769
कार्टियर	–	1769 – 1772
वारेन हेस्टिंग्स	–	1772 – 1785

लॉर्ड क्लाइब (1757 – 1760) :

- **यह बंगाल का प्रथम गवर्नर था।**
- **यह भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का संस्थापक था।**
- इसने भारत / बंगाल में राजनैतिक सत्ता को स्थापित किया था।

लॉर्ड क्लाइब सर्वप्रथम ब्रिटिश सेना में रसोइया के रूप में शामिल हुआ था और अपनी योग्यता के बल पर सेनापति बन गया। मद्रास में इसकी नियुक्ति हुई थी। कर्नाटक की राजधानी अरकाट पर अधिकार करके इसने अपनी योग्यता को साबित कर दिया।

- इसने **1757 में प्लासी** का युद्ध और **1759 में वेदरा** के युद्ध का नेतृत्व किया था।
- इसे **स्वर्ण से उत्पन्न** गवर्नर कहा गया हें
- **इसने भारत में ब्रिटिश प्रभु सत्ता को स्थापित किया,** जिससे 1947 में मुक्ति मिली।
- **हालवेल (1760)** – यह अस्थायी गवर्नर थे।
- **वैंसीटार्ट (1760 – 1765)** – इसके समय में 1761 में पानीपत का तृतीय युद्ध और 1764 में बक्सर का युद्ध हुआ था।
- **लॉर्ड क्लाइब (1765 – 1767) :** यह प्रथम व्यक्ति है, जिसको दुबारा गवर्नर बनाकर भेजा गया।

इसने 1765 में शाहआलम–II के साथ और शुजाउद्दौला के साथ इलाहाबाद की संधि संपन्न किया था। क्लाईब ने मु. रजा खान को बंगाल / मुर्शिदाबाद का तथा राजा सिताब राय को बिहार का उप–दीवान नियुक्त किया।

- **द्वैध शासन (1767 – 1772)** – द्वैध शासन अर्थात **दीवानी और निजामत** का अधिकार अंग्रेजों के पास सुरक्षित हो जाना। निजामत अर्थात् रक्षा से संबंधित मामला और विदेश विभाग से संबंधित प्रशासन को इसके अंतर्गत शामिल किया गया है।
- बंगाल में **द्वैध शासन** को **लॉर्ड क्लाइव** ने लागू किया था।
- **वारेन हेस्टिंग्स ने 1772** में द्वैध शासन को समाप्त किया था।
- **1919 के अधिनियम** द्वारा सर्वप्रथम **प्रांतो के द्वैध शासन** को लगाया था।
- 1935 के अधिनियम द्वारा **प्रांतों के द्वैध शासन** को समाप्त किया गया।
- **1935 के अधिनियम** के द्वारा **केन्द्र में द्वैध शासन** को लगाया गया।
- **बल्सर्ट (1767 – 1769)** – इसके समय में प्रथम आंग्ल–मैसूर युद्ध संपन्न हुआ।
- **कार्टियर (1769 – 1772)** – इसके समय में बंगाल में भयंकर अकाल पड़ गया और सरकार की तरफ से किसी भी प्रकार का राहत कार्य संपन्न नहीं किया गया। परिणामस्वरूप आलोचना होने लगा इसलिए कार्टियर को वापस बुलाया गया और बारेन हेस्टिंग्स को गवर्नर बाकर भेजा गया।

बंगाल के गवर्नर जनरल :

- ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना के बाद ब्रिटेन के व्यापारियों ने सरकार पर दबाव बनाना गुरू कर दिया। यह दबाव ईस्ट इण्डिया कंपनी पर नियंत्रण करने से था। परिणामस्वरूप ब्रिटेन की सरकार ने एक अधिनियम 1773 में पारित किया और इसी अधिनियम के द्वारा बंगाल के गवर्नर को गवर्नर जनरल/महाराज्यपाल बना दिया गया। इसके अंतर्गत पद वृद्धि के साथ–साथ अधिकार एवं कार्य में वृद्धि किया गया। महत्वपूर्ण गवर्नर जनरल का उल्लेख निम्नलिखित है–

वारेन हेस्टिंग्स	–	1772 – 1785
मैकफर्सन	–	1785 – 1786
लॉर्ड कार्नवालिस	–	1786 – 1793
सर जॉन शोर	–	1793 – 1798
लॉर्ड वेलेजली	–	1798 – 1805
लॉर्ड कार्नवालिस	–	1805
सर जॉर्ज बार्लो	–	1805 – 1807
लॉर्ड मिन्टो प्रथम	–	1807 – 1813
लॉर्ड हेस्टिंग्स	–	1813 – 1823
लॉर्ड एमहर्स्ट	–	1823 – 1828
लॉर्ड विलियम बेंटिक	–	1828 – 1835

वारेन हेस्टिंग्स (1772 – 1785) :

- यह 1773 के अधिनियम के द्वारा को बंगाल के गवर्नर से गवर्नर जनरल बना दिये गए। इन्होंने सभी क्षेत्रों में कार्य को संपन्न किया था।
- **प्रशासनिक कार्य**–इसने प्रशासन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया था, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- यह बंगाल के **प्रथम गवर्नर जनरल** थे। इन्होंने बंगाल में द्वैध शासन को **1772** में समाप्त कर दिया था।
- इसने अवध को ध्यान में रखते हुए **सुरक्षा प्रकोष्ठ की नीति/घेरे की नीति/रिंगफैंस की नीति** को लागू किया था।

  इलाहाबाद की संधि टूटने के बाद इसने शाह आलम द्वितीय से कड़ा एवं इलाहाबाद का क्षेत्र वापस लेकर बवध के हाथों मे 50 लाख रूपये में बेच दिया। साथ ही मुगल बादशाह की 26 लाख रूपये पेंशन को भी समाप्त कर दिया।
- **सामाजिक कार्य**–इस क्षेत्र में भी इसने कार्य किया जैसे–
- इसने 1781 में मुस्लिम लड़कियों के लिए एक मदरसा को स्थापित किया।

  इसके समय में मनुस्मृति, भागवत् गीता और अभिज्ञानशाकुंतलम् आदि ग्रंथ का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया गया।
- **विलियम विलकिन्स** ने इसके आदेश पर **मनुस्मृति** का अंग्रेजी भाषा में **'ए–कोड ऑफ जैन्टू लॉ'** के नाम से अनुवाद किया।
- 1784 में **सर विलियम जोन्स** ने **द–एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल (कलकत्ता)** की स्थापना कलकत्ता में किया था।
- **आर्थिक कार्य**–इसने आर्थिक क्षेत्र में भी सुधार का कार्य किया था और राजकोश्ष को बड़ाने के साथ–साथ पूर्ण रूप में आर्थिक नियंत्रण भी स्थापित किया। अब पटना, हुगली, मुर्शीदाबाद, ढाका और कलकत्ता से कर वसूल किया जाने लगा। इसने 1774 में कलकत्ता में एक राजस्व विभाग को भी स्थापित कर दिया।
- **अन्य कार्य**–इसने अवध के बेगम को धन देने के लिए प्रताड़ित किया, जिसके लिए आलोचना किया गया है। इसने बंगाल के ब्राह्माण नंदकुमार को झूठे मुकदमे में फसाकर फाँसी की सजा दिला दी, जिसके लिए आलोचना का पात्र बना।

रेगुलेटिंग एक्ट (1773) :

- ब्रिटिश संसद में यह अधिनियम पारित हुआ, जो 1774 में पूर्ण रूप से लागू हुआ। इसका मुख्य प्रावधान निम्नलिखित है–
- इस अधिनियम के द्वारा बंगाल के गवर्नर को गवर्नर जनरल बना दिया गया।
- इस अधिनियम के द्वारा मद्रास और बम्बई प्रेसीडेंसी को कलकत्ता प्रेसीडेंसी के अधीन किया गया।
- इस अधिनियम के द्वारा कलकत्ता में **1774** में सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना की गयी।

  इस न्यायालय के अन्तर्गत तीनों प्रेसीडेंसी को अधिकार क्षेत्र में लाया गया और एलिजा इम्पे को प्रथम मुख्य न्यायाधीश बनाया गया।
- **पिट्स इण्डिया एक्ट (1784)** – ब्रिटेन में सरकार बदलने के कारण यह 1784 में लाया गया, जिसका मुख्य प्रावधान निम्नलिखित है–
- इस अधिनियम के द्वारा बंबई और मद्रास प्रेसीडेंसी को कलकत्ता प्रेसीडेंसी को कलकत्ता प्रेसीडेंसी के अधीन किया गया।
- इस अधिनियम के द्वारा कलकत्ता मे 1774 मे सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना की गयी

  इस न्यायाल के अन्तर्गत तीनों प्रेसीडेंसी को अधिकार क्षेत्र में लाया गया और एलिजा इम्पे को प्रथम मुख्य न्यायाधीश बनाया गया।
- **पिट्स इण्डिया एक्ट (1784)** – ब्रिटेन में सरकार बदलने के कारण यह 1784 में लाया गया, जिसका मुख्य प्रावधान निम्नलिखित है–
- यह अधिनियम के द्वारा बंबई और मद्रास प्रेसीडेंसी को पूर्ण रूप से बंगाल प्रेसीडेंसी के अधीन कर दिया गया।
- इस अधिनियम कें द्वारा 6 कमीशनरों की एक बोर्ड का गठन किया गया और संपूर्ण अधिकार इन लोगों को दे दिया गया। इसी के विरोध में वारेन हेस्टिंग्स ने इस्तीफा दे दिया।

  ब्रिटेन वापस जाने पर विरोधी दल के नेता लॉर्ड बर्क ने ब्रिटिश संसद में इन पर महाभियोग लाया। अंततः वारेन हेस्टिंग्स को बरी करते हुए, मान की तलवार' से सम्मानित किया गया।
- **यह प्रथम गवर्नर जनरल** है, जिनपर **महाभियोग** लाया गया था।
- **लॉर्ड विलियम विलकिंस** ने **भागवत गीता** और **हितोपदेश** का भी अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया था।
- **मैकफर्सन (1785–1786)** – यह अस्थायी गवर्नर जनरल था। इसने संपूर्ण भारतीय ब्रिटिश साम्राज्य को 23 जिला में विभक्त करके शासन किया था।

लॉर्ड कार्नवालिस (1786 – 1793) :

- यह स्थायी गवर्नर के रूप में नियुक्त हुए।
- इसको भारत में **सिविल सेवा** का जनक माना गया है।
- इसको भारत में **पुलिस सेवा** का भी जनक माना गया है।

  भारतीय सिविल सेवा को 'इस्पात का चौखट' कहा गया है। इसने न्यायिक प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए कार्नवालिस कोड को लागू किया, जो **पृथक्करण** (विकेन्द्रीकरण) पर आधारित था।
- **स्थायी बंदोबस्त (1793)** – इसका जनक लॉर्ड कार्नवालिस था। इस व्यवस्था को जमींदार या इस्तमारी, या विश्वेदारी या सूर्यास्त कानून या परमानेन्ट सेटलमेंट भी कहा गया है। साल के आखिरी दिन सूर्य डूबने से पहले लगान देना होता था, नहीं तो जमींदारी को नीलाम कर दिया जाता था।

  इस व्यवस्था के अन्तर्गत अब सरकार और किसान के बीच बिचौलिये के रूप में जमींदार को जन्म दे दिया गया। यह लोग 89 प्रतिशत कर सरकार को देते थे। 11 प्रतिशत इनके खर्च के लिए होता था। इस व्यवस्था से कृषकों की दशा दयनीय हो गयी।
- यह सर्वप्रथम **बंगाल, बिहार और उड़ीसा** में लागू किया गया।
- सर जॉन शोर के सहयोग से लॉर्ड कार्नवालिस ने 1793 में इस व्यवस्था को लागू किया था।
- **सर जॉन शोर (1793–1798)** – यह भू–राजस्व प्रशासन के बहुत बड़े जानकार थे, और उदारवादी प्रवृत्ति के थे।
- इसने **तटस्थ / अहस्तक्षेप** की नीति का पालन किया था।

लॉर्ड वेलेजली (1798–1805) –

- इसको **बंगाल का शेर** कहा जाता है।
- **सहायक संधि**–लॉर्ड वेलेजली को सहायक संधि के लिए याद किया जाता है।
- डुप्ले को सहायक संधि का **जनक** माना जाता है।
- सहायक संधि को लोकप्रिय बनाने का कार्य वेलेजली ने किया। कुछ विद्वानों के अनुसार सहायक संधि का जनक वेलेजली था।

  इस संधि के अनुसार राज दरबार में एक अंग्रेज अधिकारी नियुक्त किया जाता था। एक अंग्रेज सैन्य टुकड़ी भी नियुक्त किया जाता था। इसका खर्च उस राज्य को देना होता था। संधि मानने वाला राज्य अधिकारी के अनुमति के बिना विदेशों से संपर्क स्थापित नहीं कर सकता था। इस प्रकार संधि शर्त के अनुसार आंतरिक एवं बाह्या नीति (विदेश नीति) पर पूर्ण नियंत्रण हो गया।
- सहायक संधि पर सर्वप्रथम **1798 में हैदराबाद** के निजाम ने हस्ताक्षर किया था।

  1799 में तंजौर, 1801 अवध, 1802 में पेशवा ने हस्ताक्षर किया। इसने सिविल सेवा में प्रशिक्ष्ज्ञण के लिए कलकत्ता में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना की, लेकिन बोर्ड ऑफ डायरेक्टर के आदेश पर इस कॉलेज को बंद कर दिया गया।

लार्ड कार्नवालिस (1805)

- यह प्रथम गवर्नर जनरल था, जिसको दुबारा भारत बुलाया गया था।
- यह प्रथम गवर्नर जनरल है, जिसकी मृत्यु भारत में हुई।

सर जॉर्ज बार्लो (1805 – 1807) :

- इसके समय में 1806 में मद्रास के समीप वेल्लौर नामक स्थान पर सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। माथे पर पगड़ी और तिलक लगाना तथा कानों में कुंडल नहीं धारण करने के लिए सैनिकों ने विद्रोह किया था। इस विद्रोह को लॉर्ड विलियम ने कुचल दिया।
- इसके समय में भारत में सर्वप्रथम सैनिक विद्रोह हुआ।

लॉर्ड मिण्टो–(1807–1813) :

- इसके समय में 1813 का अधिनियम लागू हुआ, जिसका मुख्य प्रावधाान निम्नलिखित है–
- इस अधिनियम के द्वारा **ईस्ट इण्डिया कम्पनी** के **व्यापारिक एकाधिकार** को समाप्त किया गया।
  लेकिन चीन के साथ व्यापार और चाय का व्यापार अभी भी कम्पनी ही कर सकती थी।
- इस अधिनियम के द्वारा पहली बार **शिक्षा पर खर्च के लिए 1 लाख रूपये** का प्रावधान किया गया।
- इस अधिनियम के द्वारा पहली बार कानूनी रूप से **ईसाई धर्म प्रचारकों** को भारत आने की अनुमति मिली।
  इसके समय में 1809 में अमृतसर की संधि हुआ और इसने मेलकम को अपना राजदूत बनाकर भारत भेजा था।

लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813–1823) :

- इसके समय में प्रथम आंग्ल–नेपाल युद्ध (1814–1816) हुआ था, जिसमें नेपाल पराजित हुआ। सुगौली की संधि के द्वारा यह युद्ध समाप्त हुआ। बुटाविल पर अधिकार को लेकर यह युद्ध हुआ था। संधि शर्त के अुनसार सिक्किम, तराई का क्षेत्र और कुमाऊँ गढ़वाल का क्षेत्र अंग्रेजों को मिला, लेकिन सर्वाधिक लाभ नेपाली लोगों (गोरखा) को अपनी सेना में शामिल करना था।
- इसको **पिण्डारियों** का दमन का श्रेय और **मराठों** का दमन का श्रेय दिया जाता है।
  पिण्डारी लोग मथुरा के आसपास लूटपात करते थे, जिनकों फाँसीगर भी कहा गया है। इसके नेता मोहम्मद वासिल ने आत्महत्या कर लिया, चीतु का शेर खा गया और करीम खाँ को गोरखपुर में एक छोटा सा जमींदार दे दिया गया।
- **महालवाड़ी व्यवस्था**–महाल का शाब्दिक अर्थ समूह होता है अर्थात् सामूहिक रूप से कृषि कार्य करते हुए सरकार को लगान अदा करना महालवाड़ी व्यवस्था कहलाता है। जमींदारी व्यवस्था 19 प्रतिशत भू–भाग पर लागू किया था, जबकि यह व्यवस्था 30 प्रतिशम भूमि पर लागू किया गया था। **हाल्ट मेकैंजी** के सहयोग से यह लागू किया गया था।
- सर्वप्रथम महालवाड़ी व्यवस्था **संयुक्त प्रांत (अवध), मध्य प्रांत (मध्य प्रदेश) और पंजाब में** लागू किया गया।
- **लार्ड एमहर्स्ट (1813–1828)** – इसके समय में तीन महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख किया जा सकता है। जैसे–
- **I-आंग्ल–बर्मा युद्ध (1824–1826)** – बर्मा के जंगलों पर नियंत्रण करने के लिए और अपने क्षेत्र में विस्तार के लिए अंग्रेजों ने अभियान किया और सफल रहे।
- **यांडबू की संधि (1826)** – संधि शर्त के अनुसार आराकोन और तिनासिरम नामक क्षेत्र अंग्रेजों को मिला साथ ही संधि शर्त के अनुसार 50 लाख रूपये वसूल किया गया। इस प्रकार अंग्रेज बर्मा में भी प्रवेश कर गये।
- **बैरकपुर का घेरा (1826)** – यहाँ के सैनिकों ने बर्मा जाने से इंकार कर दिया, क्योंकि हिंदू धर्म के अनुसार समुद्र की यात्रा करना पाप माना जाता था। परिणामस्वरूप सैनिकों को दण्डित किया गया।

भरतपुर के गवर्नर जनरल (1833–1857)

- 1833 के अधिनियम के द्वारा बंगाल के गवर्नर जनरल को भारत का गवर्नर जनरल बना दिया गया, क्योंकि अब ईस्ट इंडिया कम्पनी का क्षेत्र बहुत अधिक विस्तार हो गया था। प्रमुख गवर्नर जनरल के उपलब्धियों का वर्णन निम्नलिखत है–

लॉर्ड विलियम बेंटिक	(1828 – 1835)
चार्ल्स मेटकाफ	(1835 – 1836)
लॉर्ड ऑकलैण्ड	(1836 – 1842)
लॉर्ड ऐलनबरो	(1842 – 1844)
लॉर्ड हार्डिंग–I	(1844 – 1848)
लॉर्ड डलहौजी	(1848 – 1856)
लॉर्ड कैनिंग	(1856 – 1862)

- **लॉर्ड विलियम बेंटिक (1828–1833) :**
- यह अब तक के गवर्नर जनरल में सबसे महत्वपूर्ण था। इसने सभी क्षेत्रों में कार्य को संपन्न किया था जैसे–

प्रशासनिक कार्य :

- यह भारत का प्रथम गवर्नर जनरल था।

इसने हस्तक्षेप और अहस्तक्षेप दोनों नीति का पालन किया था। यह 1828–1833 तक बंगाल का गवर्नर जनरल रहा और 1833–1835 तक भारत का गवर्नर जनरल रहा। इसने गारो और खासी को ब्रिटिश साम्राज्य मे मिला गया, लेकिन जोधपुर, कोटा और बुंदी के क्षेत्र में हस्तक्ष्ज्ञेप नहीं किया।

सामाजिक कार्य :

- इस क्षेत्र में बेंटिक ने सबसे महत्वपूर्ण कार्य किया था। जैसे–
- **इसने 1829 में अनुच्छेद 17 का प्रयोग करते हुए सती प्रथा को प्रतिबंधित कर दिया।**

यह कानून सर्वप्रथम बंगाल में लागू किया गया, लेकिन 1830 में बंबई और मद्रास प्रेसीडेंसी में भी लागू कर दिया गया।

- **सती प्रथा को प्रतिबंधित कराने में भारत के तरफ से सबसे महत्वपूर्ण भूमिका राजा राम मोहन राय ने निभाया था।–**

इसने 1830 में कानून बनाकर बाल हत्या को गैर–कानूनी घोषित किया। राजपूत समाज में पुत्री के जन्म होने पर उसकी हत्या कर दी जाती थी।

- **बेंटिक ने कर्नल स्लीमैन के सहयोग से ठगी प्रथा का अंत कर दिया।**

न्यायिक कार्य :

- इसने कर्नवालिस द्वारा स्थापित अपीलीय न्यायालय को समाप्त कर दिया और संपूर्ण अधिकार जिलाधिकारी को सौंप दिया। इसने 1835 में लॉर्ड मैकाले की अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया। मैकाले के रिपोर्ट के अनुसार सभी न्यायालयों में फारसी भाषा के साथ–साथ क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग की अनुमति दे दी गयी।

शिक्षा संबंधी कार्य :

- इस समय शिक्षा को लेकर विवाद उत्पन्न हो गया था। कुछ विद्वान प्राच्य शिक्षा/प्राचीन शिक्षा और कुछ पाश्चात्य शिक्षा के समर्थक थे। प्राच्यस शिक्षा में भारतीयों के साथ–साथ अंग्रेजों **जेम्स प्रिंसेप** और **विल्सन ने** भी विश्वास किया था। ट्रैवलियन, मैकाले और एलिफिंस्टन ने अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन किया।
- भारतीयों में राजाराम मोहन राय ने अंग्रेजी शिक्षा/पाश्चात्य शिक्षा का समर्थन किया था।

बेंटिक ने लॉर्ड मैकाले की अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया, जिसके रिपोर्ट के अनुसार शिक्षा में सुधार किया गया।

निस्यंदन का सिद्धांत :

- इस सिद्धांत के अन्तर्गत मैकाले ने यह प्रस्ताव दिया कि उच्च वर्ग के लोगों को शिक्षा दिया जाए और उनसे छन कर शिक्षा निम्न वर्ग के लोगों के पास पहुँच जायेगा।
- लॉर्ड मैकाले के रिपोर्ट के आधार पर 1835 ई. में अंग्रेजी भाषा को शिक्षा का माध्यम बना दिया गया।
- 1835 ई. में ही भारत में सर्वप्रथम कलकत्ता में मेडिकल कॉलेज की स्थापना किया गया।

रैय्यतवाड़ी व्यवस्था :

- रैय्यत का शाब्दिक अर्थ किसान होता है। यह व्यवस्था सीधे सरकार और किसानों से जुड़ा होता था, जिसमें बिचौलिये को स्थान नहीं दिया गया था। यह व्यवस्था 51 प्रतिशत भू–भाग पर लागू किया गया।
- **सर टॉमस मुनरो ने 1792 में मद्रास के बारामहल क्षेत्र में इस व्यवस्था को लागू किया।**

लेकिन विलियम बेंटिक के समय इसका विस्तार किया गया।

- विनगेट और मार्टिन बर्ड के सहयोग से इसे लागू किया गया था।
- एलिफिंस्टन के सहयोग से बम्बई में भी इसको लागू किया गया। इस व्यवस्था के अन्तर्गत किसान जब तक लगान अदा करते उनको भूमि से बेदखल नहीं किया सकता था।
- **यह व्यवस्था सर्वप्रथम मद्रास, असम और बंबई में लागू किया गया 1833 का अधिनियम :**
- इस अधिनियम का मुख्य प्रावधान निम्नलिखित है–
- **इस अधिनियम के द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यापारिक एकाधिकार को पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया गया।**
- इस अधिनियम के द्वारा 1833 में विधि–आयोग का गठन किया गया था।
- इस अधिनियम के द्वारा बंगाल के गवर्नर–जनरल को भारत का गवर्नर जनरल बना दिया गया।
- इस अधिनियम के द्वारा रूप, रंग, जाति, स्थान के आधार पर भेदभाव को समाप्त किया गया।

चार्ल्स मेटकॉफ (1835–1836) :

- यह भारत के संदर्भ में थोड़ा उदारवादी माना गया है। इसने 1835 ई. में भारतीय प्रेस पर से प्रतिबंध को हटा दिया और स्वतंत्रता प्रदान किया।
- **चार्ल्स मेटकॉफ को भारतीय प्रेस का मुक्ति दाता कहा गया है।**

  भारत के लोग खुश होकर कलकत्ता में इसके नाम पर मेटकॉफ हॉल का निर्माण कराया। इसने मुगलकालीन सिक्का को प्रतिबंधित किया और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नाम से सिक्का जो जारी किया।

लॉर्ड ऑकलैण्ड (1836–1842)

- इसके समय में रंजीत सिंह, शाहशुजा और अंग्रेजों के बीच त्रिदलीय संधि हुआ था।

आंग्ल–अफगान युद्ध (1839–1842) :

- इस युद्ध का मुख्य कारण रूस की बढ़ती हुई शक्ति को रोकना था। इस युद्ध में अंग्रेज पराजित हो गये, इसलिए ऑकलैण्ड को वापस बुला लिया गया।

ऐलनबरो (1842–1844)

- इसके समय में प्रथम आंग्ल अफगान युद्ध समाप्त हुआ और 1843 में सिंध का विलय कर लिया गया।
- सिंध विलय का श्रेय चार्ल्स नेपियर को दिया जाता हे।
- **1844 में इसने कानून बनाकर दास प्रथा को समाप्त कर दिया।**

लॉर्ड हार्डिंग–(1844–1848) :

- इसके समय में प्रथम आंग्ल–सिख (1845–46) युद्ध हुआ था, जिसमें अंग्रेज विजयी रहे। इसने 1844 में कानून बनाकर नर–बलि प्रथा को समाप्त किया।
- **नर बलि प्रथा खोण्ड नामक जनजाति में प्रचलित था।**

लॉर्ड डलहौजी (1848–1856) :

- अब तक के गवर्नर जनरल या आनेवाला वायसराय में सबसे अधिक साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का व्यक्ति लॉर्ड डलहौजी था। इसके कार्यो का वर्णन निम्नलिखित है–
- **प्रशासनिक कार्य**–इसने प्रशासन के क्षेत्र में कई कार्य संपन्न किया था। जैसे–
- **द्वितीय आंग्ल–बर्मा युद्ध (1848–1852) :** इस युद्ध में अंग्रेज विजयी हुए और बर्मा का क्षेत्र तथा पीगु को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।
- इसने युसुफ हुकर और डॉ कैंपबेल के साथ सिक्किम वासियों के द्वारा दुर्व्यवहार करने का आरोप लगाकर सिक्किम को भी ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।
- इसी के समय में II- आंग्ल–सिख युद्ध हुआ था। 1849 में पंजाब को भी ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।
- **विलय का सिद्धांत**–लॉर्ड डलहौजी की सबसे अधिक आलोचना विलय के सिद्धांत के लिए किया जाता है, **जिसे गोद लेने वाले प्रथा का निषेध या राज्य अपहरण की नीति/व्यपगत की नीति/राज्यपाल नीति/dorctrin of laps कहा गया है।**

  इस नीति के अन्तर्गत अगर किसी राज्य के पास अपना वास्तविक पुत्र नहीं था उसको राज्य से वंचित कर दिया गया और ब्रिटिश साम्राज्य में उस राज्य को मिला लिया गया।
- **सर्वप्रथम सतारा को विलय सिद्धांत के अन्तर्गत मिलाया गया।**

  1849 में जैतपुर और संभल, 1850 में बघाट, 1852 में उदयपुर, 1853 झाँसी, 1854 में नागपुर को मिला लिया गया।
- **1856 में कुशासन का आरोप लगाकर ब्रिटिश साम्राज्य में अवध को मिला लिया।**
- **सार्वजनिक कार्य**–इसने 1853 में लोकसेवा विभाग की स्थापना किया था। **इसने 1853 में भारत में सर्वप्रथम टेलीग्राफ सेवा शुरू की थी।**
- **भारत में सर्वप्रथम कलकत्ता से आगरा के बीच टेलीग्राफ सेवा की शुरूआत की गयी।**

  इसने टेलीग्राफ सेवा विभाग की स्थापना कलकत्ता में किया और औशेंधनेसी को इसका अध्यक्ष बनाया।
- **इसे भारत में डाक सेवा का जनक भी माना जाता है।**

  डाक विभाग अधिनियम के द्वारा 2 पैसे की दर पर पत्र को भेजने की व्यवस्था की गयी।
- डलहौजी डाक टिकट का जनक भी भारत में माना जाता है। इसने कराची से डाक टिकट के प्रचलन का शुभारंभ किया।
- **भारत में लॉर्ड डलहौजी रेलवे का जनक माना जाता है।**
- **भारत में सर्वप्रथम 1853 में बम्बई से थाने के बीच 34 किमी. की दूरी तक यह रेल चलाया गया।**

भारत में मद्रास में रेलवे परिचालन को सर्वप्रथम शुरू करना था, लेकिन यह महाराष्ट्र में शुरू हुआ। इसने सिंधु, सुल्तान और कावेरी नामक तीन इंजन का प्रयोग किया गया था और इस रेल का नाम Black beauty था।

- इसने 1854 में सार्वजनिक निर्माण विभाग की स्थापना भी की।
- **वाणिज्य व्यापार**–इसने वाणिज्य व्यापार के विकास के लिए कराँची, बम्बई के बन्दरगाह को आधुनिकीकरण करके व्यापार के लिए खोल दिया। इसी के समय में गंगा नहर और सोन नहर को सिंचाई व्यवस्था के लिए खोल दिया गया।
- **शिक्षा संबंधी कार्य**–इसने लॉर्ड मैकाले की रिपोर्ट की समीक्षा के लिए 1854 में चार्ल्स वुड की अध्यक्षता में एक शिक्षा आयोग का गठन किया। इसने अपनी रिपोर्ट में उच्च शिक्षा को प्राथमिकता दी।
- **वुड डिस्पैच को भारतीय शिक्षा का मेग्नाकार्टा कहा गया है।**
- **1853 का अधिनियम–1853 के अधिनियम के द्वारा भारत में सर्वप्रथम प्रतियोगिता परीक्षा के आधार पर नियुक्ति की व्यवस्था की गयी।**
- विश्व में सर्वप्रथम **चीन** में प्रतियोगिता परीक्षा की शुरूआत हुई थी।
- आधुनिक काल में **प्रशा** में सर्वप्रथम प्रतियोगिता परीक्षा का प्रारंभ हुआ था।

भारत के वायसराय :

- 1858 के अधिनियम के द्वारा भारत के गवर्नर जनरल को अब वायसराय बना दिया गया, जिन लोगों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–

लॉर्ड कैनिंग	–	1856–1862	लॉर्ड एल्गिन–I	–	1862–1863
सर–जॉन लॉरेंस	–	1863–1869	लॉर्ड मेयो	–	1869–1872
लॉर्ड नार्थब्रुक	–	1872–1876	लॉर्ड लिट्न	–	1876–1880
लॉर्ड रिपन	–	1880–1884	लॉर्ड डफरिन	–	1884–1888
लॉर्ड ऐल्गिन–II	–	1894–1899	लॉर्ड कर्जन	–	1899–1905
लॉर्ड मिण्टो–II	–	1905–1910	लॉर्ड हार्डिंग–II	–	1910–1916
लॉर्ड चेम्सफोर्ड	–	1916–1921	लॉर्ड रीडिंग	–	1921–1926
लॉर्ड इरविन	–	1926–1931	लॉर्ड विलिंगटन	–	1931–1936
लॉर्ड विलिंगटन	–	1931–1936	लॉर्ड लिनलिथगो	–	1936–1944
लॉर्ड वेवेल	–	1944–1947	लॉर्ड माउंटबेटन	–	1947–1948
सी. राजगोपालाचारी	–	1948–1950			

लॉर्ड कैनिंग (1856 – 1862) :

- **यह भारत का प्रथम वायसराय था।**
- **इसके समय में 1857 का विद्रोह हुआ।**
- 1857 के विद्रोह के समय ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लॉर्ड पामर्स्टन थे।
- इसके समय में 1856 में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित हुआ।
- विधवा पुन र्विवाह के लिए भारतीयों में सबसे अधिक कार्य ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने किया था।
- इनके समय में वुड डिस्पैच के आधार पर विश्वविद्यालय शिक्षा को अधिक महत्व दिया गया। साथ ही कानून संहिता (कोड) को लागू किया गया।
- 1857 में इसके समय में तीनों प्रेसीडेंसी में जैसे–**बंगाल, बंबई और मद्रास** में एक–एक विश्वविद्यालय की स्थापना किया गया।
- इसके समय में 1862 में तीनों प्रेसीडेंसी अर्थात् **कलकत्ता, बम्बई और मद्रास** में एक–एक उच्च न्यायालय को स्थापित किया गया।

1858 का अधिनियम :

- 187 के विद्रोह के बाद यह अधिनियम लाया गया जिसके मुख्य प्रावधान निम्नलिखित है–
- **इस अधिनियम के द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन को समाप्त कर दिया गया** और संपूर्ण अधिकार ब्रिटिश संसद या ब्रिटिश क्राउन को दे दिया गया।

  इस अधिनियम के द्वारा भारत मंत्री या भारत का सचिव का पद बनाया गया, जो ब्रिटिश संसद का सदस्य होता था और भारत की संपूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था की जिम्मेवारी इसी को दे दिया गया। इसकी सहायता के लिए 15 सदस्यों की भारतीय परिषद् का गठन किया गया। इसमें सात कंपनी के और आठ ब्रिटिश सरकार के सदस्य होते थे।
- भारत का प्रथम सचिव/भारतीय मंत्री लॉर्ड स्टेनले था।

  इस अधिनियम के द्वारा भारतीय सैनिकों की संख्या को कम किया गया। गोरखा और पठानों ने साथ दिया था तो इनकी संख्या बढ़ायी गयी। आधुनिकतम हथियार भारतीय सैनिकों से वापस ले लिया गया।

- इसी अधिनियम के द्वारा भारत के गवर्नर जनरल को भारत का वायसराय कहा गया।
- लॉर्ड कैनिंग ने महारानी विक्टोरिया के अध्यादेश/राजकीय पत्र को इलाहाबाद में पढ़कर सुनाया था, जिसमें गोरे और काले के भेद–भाव को प्रतिबधिंत किया था।
- **एल्गिन प्रथम (1862–1863)**–इसके समय में बहावी आंदोलन का केन्द्र गढ़मलका को पूर्ण रूप से ध्वस्त कर दिया गया।

सर जॉन लॉरेंस (1863 – 1869)

- इसके समय में उड़ीसा और बुंदेलखंड में अकाल पड़ गया। परिणामस्वरूप रिचर्ड कैंपबेल की अध्यक्षता में राहत दिलाने के लिए अकाल आयोग का गठन किया गया।
- इसके समय में 1865 में भारत और यूरोप के बीच टेलीग्राफ सेवा शुरू हुई।

bl dsl e; esaLots ugj dkfuekZkijwkgqvk Fkk और इसने लॉर्ड डलहौजी के समय G.T. Road का पूननिर्माण कराया था।

लॉर्ड मेयो (1869 – 1872) :

- इसने कृषि के क्षेत्र में सुधार के लिए कलकत्ता में 1872 में कृषि विभाग की स्थाना की। इसकी के समय में भारत में सर्वप्रथम वित्त व्यवस्था में सुधार किया गया।
- 1872 में इसके समय में भारत में सर्वप्रथम जनगणना का कार्य शुरू हुआ।

इसने राजघराने के सदस्यों के लिए अजमेर में मेयो कालेज का निर्माण कराया था यह कैदियों की दशा को सुधारना चाहता था। इसकी क्रम में अंडमान निकोबार के सेल्यूलर जेल में निरीक्षण कर रहा था, तब शेर अली नामक अफगानी ने इसकी हत्या कर दी।

- यह प्रथम वायसराय है, जिनकी हत्या भारत में कर दी गयी।

लॉर्ड नार्थब्रुक (1872 – 1876) :

- इसके समय में अफगान की समस्या एक बार पुनः सामने दिखई पड़ने लगी, जिसमें यह उग्र नीति का समर्थक था। इसके समय में बंगाल में अकाल पड़ गया। बर्मा से चावल मांगकर राहत कार्य संपन्न कराने का प्रयास किया गया। लेकिन यह प्रयास बहुत ही कम था।
- इसके समय 1872 में बाबा रामसिंह ने पंजाब में कूका आंदोलन को चलाया था।
- इसके समय में 1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती ने बंबई में आर्य समाज की स्थापना की थी।
- इसके समय में सर सैय्यद अहमद खाँ ने 1875 में अलीगढ़ आंदोलन को संचालित किया था।

यह अफगान नीति के विरोध में इस्तीफा देकर वापस चला गया।

लॉर्ड लिटन (1876 – 1880) :

- यह साहित्य के क्षेत्र में लेखक के रूप में उच्च कोटि का विद्वान था। सम्पूर्ण वायसराय में इसके जैसा निबंध लेखक कोई नहीं था। इसे मेरिडिथ ओवन कहा गया। इसने जो भी कार्य किया वह भारत और भारतीयों के विरूद्ध था। जैसे–
- **भारतीय राजपद अधिनियम – (1876) :** इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया को सम्मानित करना था।
- इस अधिनियम के द्वारा भारत में पहली बार महारानी विक्टोरिया के सम्मान में दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया।
- महारानी विक्टोरिया को कैसर–ए–हिन्द की उपाधि से 1877 में सम्मानित किया गया।
- **वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट**–(भारतीय भाषा समाचार पत्र अधिनियम – 1876) इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य भारत में क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र को प्रतिबंधित करना था। जबकि अंग्रेजी भाषा के समाचार पत्र पर यह लागू नहीं था।
- इस अधिनियम को लॉर्ड लिट्न ने लागू किया और लॉर्ड रिपन ने हटा दिया।
- यह अधिनियम सोमप्रकाश को लक्ष्य में रखकर लाया गया था।
- सोमप्रकाश के संपादक ईश्वरचन्द्र विद्यासागर थे। यह बंगाली भाषा में कलकत्ता से प्रकाशित होता था।
- **अमृत बाजार पत्रिका** ने इस अधिनियम से बचने के लिए बंगाली भाषा से अपने को अंग्रेजी भाषा में परिवर्तित कर लिया।

अमृत बाजार पत्रिका कलकत्ता से प्रकाशित होता था, जिसके संपादक मोती लाल घोश और शिशिर कुमार घोष थे।

- भारत का पहला समाचार पत्र का नाम **बंगाल गजट** है, जिसके संपादक **जेम्स आगस्टस हिक्की** थे। यह अंग्रेजी भाषा में कलकत्ता से प्रकाशित होता था।
- भारत का प्रथम हिन्दी समाचार पत्र **उर्दन्तमार्तण्ड** है, जिसके संपादक पंडित जुगल किशोर शर्मा थे।
- **भारतीय शस्त्र अधिनियम (1878)**–इस अधिनियम के द्वारा बिना लाइसेंस लिए हथियार नहीं रखा जा सकता था। पकड़े जाने पर 3 साल का कैद या आर्थिक जुर्माना या दोनों से दण्डित किया जा सकता था। हथियार को छुपाने पर 7 साल की सजा या आर्थिक जुर्माना या दोनों से दण्डित किया जा सकता था। यह अधिनियम अंग्रेज और एंग्लो–इण्डियन पर लागू नहीं होता था।
- **भारतीय नागरिक सेवा अधिनियम (1878 – 1879)**–इस अधिनियम का उद्देश्य भारतीयों को सिविल सेवा में जाने से रोकना था। इस

अधिनियम के द्वारा आयु को घटाकर 21 वर्ष से 19 वर्ष कर दिया गया।

- सत्येन्द्र नाथ टैगोर प्रथम भारतीय थे, जो सिविल सेवा में पास किये थे और दूसरे व्यक्ति का नाम सुरेन्द्र नाथ बनर्जी है।

लॉर्ड रिपन (1880 – 1884) :

- लिट्न के बाद यह भारत के वायसराय बने और सभी क्षेत्र में अच्छा कार्य किया इसलिए भारतीयों ने इनको सज्जद रिपन कहा है। Flowrance Nightangle ने रिपन को भारत का उद्धारक कहा है।
- 1881 में इसके प्रथम फैक्ट्री एक्ट को लागू किया, जो बाल श्रमिकां को ध्यान में रखकर लाया गया था।
- 1881 में इसी के समय में भारत में सर्वप्रथम विधिवत रूप से या **दसवर्षीय जनगणना की शुरूआत** हुई।
- 1882 में इसने वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट को समाप्त कर दिया।
- रिपन का सबसे महत्वपूर्ण कार्य **1882 में स्थानीय स्वाशासन को** जन्म देना था।
- भारत में मद्रास में सर्वप्रथम नगरपालिका की स्थापना की गयी थी।

  वुड डिस्पैच की समीक्षा के लिए 1882 में विलियम हंटर की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग का गठन किया गया और इसी के आधार पर शिक्षा की व्यवस्था की गयी थी।
- हंटर आयोग के रिपोर्ट के आधार पर भारत में **पहली बार प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा** पर ध्यान दिया गया।
- रिपन ने सिविल सेवा में आयु सीमा को 19 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष कर दिया।
- **इल्बर्ट विधेयक (1882)** – रिप ने इस विधेयक को कानून का रूप दिया जिसके अन्तर्गत अब भारतीय जज भी अंग्रेज जजों के समान अंग्रेजों के मुकदमों की सुनवाई कर सकते थे। परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने इसका विरोध शुरू कर दिया, जिसे इतिहास में **श्वेत विद्रोह** कहा गया है। लॉर्ड रिपन इल्बर्ट विधेयक के विरोध में इस्तीफा देकर वापस चले गये।

लॉर्ड डफरिन (1884 – 1888) :

- 1885 में इसके समय में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। इसने महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए महिला डफरिन फंड की स्थापना की।

लॉर्ड लेंसडाउन (1888 – 1894) :

- इसने स्वीकृत अवस्था विधेयक (The age of concent Act) पारित किया जो बाल विवाह से संबंधित था। इस अधिनियम के द्वारा लड़कियों के विवाह की आयु को बढ़ाकर 10 वर्ष से 12 वर्ष कर दिया।
- इसने मार्टिमर ड्यूरेण्ड को सीमा के निर्धारण के लिए भेजा था जिसके नाम पर ड्यूरेण्ड सीमा नाम रख दिया गया। यह वर्तमानमें पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच निर्धारित है। लेकिन उस समय भारत और अफगानिस्तान के बीच निर्धारित था।
- 1893 में इसी के समय स्वामी विवेकानंद शिकागो धर्म सम्मेलन/संसद में भाग लेने के लिए अमेरिका गये थे।

लॉर्ड एल्गिन–II (1894 – 1999) :

- इसका प्रसिद्ध कथन–''भारत को तलवार के बल पर जीता गया है और तलवार के बल पर नियंत्रण रखा जायेगा।''

  इसके समय में भारत में क्रांतिकारी आंदोलन की शुरूआत हुआ और तिलक को 18 माह की जेल की सजा सुनायी गयी।

लॉर्ड कर्जन (1899 – 1905) :

- लॉर्ड कर्जन का काल मंडल, आयोग और भूल के लिए याद किया जाता है। कांग्रेस के बारे में इसका प्रसिद्ध कथन–''कांग्रेस अब लड़खड़ा रही है और मैं अपने कार्यकाल के दौरान इसको मरते हुए देखना चाहता हूँ।''

  लॉर्ड कर्जन ने सभी क्ष्ज्ञेत्रों में कार्य संपन्न किया था, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- इसने 1899–1900 के बीच अकाल से राहत दिलाने के लिए सर एंटिनी मैकडोनाल्ड की अध्यक्षता में अकाल आयोग का गठन किया।
- 1900 ई. में पंजाब भूमि अलगाव अधिनियम पंजाब प्रांत में भूमि स्वामित्व के हस्तांतरण को सीमित करने उद्देश्य से लागू किया गया।
- इसने कृषि के विकास के लिए 1901 ई. में सर स्कॉट कॉलिन मैनक्रीफ की अध्यक्षता में सिंचाई आयोग का गठन किया। इसने 1902 ई. में सर टॉमस रेले की अध्यक्षता में एक शिक्षा आयोग का गठन किया, जिसके रिपोर्ट के आधार पर 1904 में विश्वविद्यालय अधिनियम को पारित किया गया और शिक्षा पर विश्वविद्यालय ाक नियंत्रण स्थापित कर दिया गया।
- 1902 में एण्ड्रू फेजर की अध्यक्षता में पुलिस आयोग का गठन किया तथा केन्द्रीय गुप्तचर विभाग की स्थापना की।
- इसने 1904 भारतीय उधार सहकारी अधिनियम को पारित किया, जिसके आधार पर कम ब्याज लेकर ऋण देने की व्यवस्था की गयी।
- इस प्रकार भारत में 1904 से सहकारी आंदोलन शुरू हुआ।
- इसने प्रथम वायसराय था, जिसने प्राचीन स्मारख की देखभाल के लिए पुरातत्व विभाग की स्थापना की।,

- इसने ब्रिटेन की मुद्रा पाउण्ड को भारत में कानूनी रूप से जारी करने की प्रथा को लागू किया।
- इसने 1905 ई. में कलकत्ता में रेलवे बोर्ड का गठन किया। रेल विशेषज्ञ रॉबर्टसन के सहयोग से रेलवे का विकास किया। आजादी के पहले भारत में सबसे अधिक रेल का विकास इसी के समय में हुआ था।
- इसने किचनर के सहयोग से सैन्य व्यवस्था में भी सुधार किया और किचनर से मतभेद हो जाने के कारण इस्तीफा देकर वापस चला गया।
- गोपाल कृष्ण गोखले ने इसकी तुलना औरंगजेब से किया है।

लॉर्ड मिण्टा–II (1905 – 1910) :

- इसके समय में लाल–बाल और पाल के नेतृत्व में बंग–भंग आंदोलन तेजी से आगे बढ़ रहा था, जो सरकार नहीं चाहती थी। सरकार हिन्दू और मुस्लिम के बीच एकता को समाप्त करना चाह रही थी। इसी संदर्भ में आगा खाँ के नेतृत्व में मुस्लिमों का एक शिष्ट मंडल शिमला में मिला। लॉर्ड मिण्टो ने मुस्लिम लीग की स्थापना में सहयोग कर दिया।
- ढाका के नवाब सलीमउल्लाह के नेतृत्व में 1906 ई. में ढाका में मुस्लिम लीग की स्थाना हुई।
  मुस्लिम लीग का मुख्य उद्देश्य मुस्लिमों को शिक्षित करना और भारत की राजनीति में अधिक से अधिक भागीदारी को सुनिश्चित करना था। कालांतर में मु. अली जिन्ना इसेके नेता बन गये।
- 1907 ई. में कांग्रेस के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस में पहली बार विभाजन हुआ।
  बंग–भंग विरोधी आंदोलन 1908 में इसके समय में समाप्त हुआ।
- **1909 का अधिनियम–**इस अधिनियम को मार्ले–मिण्टो सुधार अधिनियम भी कहा जाता है। इसके द्वारा संप्रदायिकता के आधार पर पृथक निर्वाचन की व्यवस्था की गयी, जो देश विभाजन का कारण भी बना।
- 1909 के अधिनियम में पहली बार मुस्लिमों के लिए संप्रदायिकता के आधार पर पृथक निर्वाचन की व्यवस्था की गयी।

लॉर्ड हार्डिंग–II (1910 – 1916) :

- इसके समय में 1911 में दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया, जिसमें ब्रिटेन के सम्राट जॉर्ज पंचम अपनी पत्नी के साथ आये थे। इसी दिल्ली दरबार में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया। जैसे–
- 1911 में बंगाल विभाजन को रद्द किया गया और इसे 1912 में लागू किया गया।
- 1911 में दिल्ली दरबार में कलकत्ता से राजधानी परिवर्तित करके राजधानी दिल्ली में स्थापित करने की घोषणा की गयी और 1912 में दिल्ली को राजधानी बनाया गया।
  y kWMZ gkfMZ x&II जब राजधानी दिल्ली में प्रवेश कर रहे तब क्रांतिकारियों ने इनके ऊपर बम से प्रहार कर दिया। जिसके लिए दिल्ली षड्यंत्र कांड चलाया गया और रासबिहारी बोस को मुख्य अभियुक्त बनाया गया।
- 1911 में बिहार को बंगाल से अलग करने की घोषणा करने की घोषणा की गयी और 1 अप्रैल, 1912 को अलग किया गया, साथ ही उड़ीसा भी शामिल था।
- 1936 में उड़ीसा को बिहार से अलग किया गया।
- 1956 में राज्यपूनर्गठन आयोग के सिफारिश पर बिहार को स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित किया गया।
- 15 नवम्बर 2000 ई. को बिहार से अलग झारखंड राज्य को बनाया गया।
- 1912 में बिहार में पटना के बांकीपुर में कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन हुआ।
- इसी के समय 1914 में प्रथम विश्वयुद्ध शुरू हुआ था।
- 1916 में लखनऊ अधिवेशन में नरम दल और गरम दल का विलय हुआ।

लॉर्ड चेम्सफोर्ड (1916 – 1921) :

- पटना उच्च न्यायालय की स्थापना 1916 में हुई।
- इनके समय में 1917 में सफल चंपारण सत्याग्रह का संचालन किया था।
- सेडलर आयोग के रिपोर्ट पर पटना विश्वविद्यालय की स्थापना 1917 में किया गया।
- 1918 में अहमदाबाद और खेड़ा आंदोलन का सफल संचालन भी गाँधी जी ने किया।
- इसी के समय में 1918 में प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हुआ।
- 1919 में अमृतसर में जालियाँवाला बाग हत्याकांड को अंजाम दिया गया, जिसमें हजारी निर्दोश भारतीयों की हत्या कर दी गयी।
- 1919 में रॉलेक्ट एक्ट को लागू की गयी जिसे ''बिना वकील, बिना दलील और बिना अपील का कानून कहा गया।''
- गाँधी जी जालियाँवाला बाग हत्याकांड रॉलेक्ट एक्ट के विरोध में अंग्रेजी सरकार कहा और 1919 में सक्रिय रूप से राजनीति में शामिल हो गया।
- 1919 में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ खिलाफत आंदोलन को चलाया गया और अखिल भारतीय खिलाफत समिति का अध्यक्ष गाँधीजी को बनाया

गया।

1919 का अधिनियम :

- इसको मॉण्टेग्यू–चैम्सफोर्ड सुधार अधिनियम भी कहा जाता है, जिसको मॉण्टेग्यू की देन माना गया है। इसका मुख्य प्रावधान निम्नलिखित है–
- इस अधिनिमय के द्वारा प्रांतों में सर्वप्रथम द्वैध शासन को लागू किया गया।
- इस अधिनियम द्वारा अब साम्प्रदायिकता के आधार पर सिक्खों को भी शामिल कर लिया गया।
- इस अधिनियम के द्वारा पहली बार उत्तरदायी सरकार की व्यवस्था की गयी।
- इस अधिनियम के द्वारा पहली बार भारत में महिलाओं को मत देने का अधिकार दिया गया।
- इस समय ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लायड जॉर्ज थे।
- यह अधिनियम पूर्ण रूप से 1921 में लागू हुआ।
- 1920 ई. में गाँधीजी के नेतृत्व में व्यापक पैमाने पर असहयोग आंदोलन चलाया गया।

लॉर्ड रीडिंग (1921 – 1926) :

- 5 फरवरी 1922 ई. में चौरी–चौरा नामक स्थान पर 22 पुलिस कर्मियों को लोगों ने जला दिया। परिणामस्वरूप गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को समाप्त कर दिया।
- 1923 में देशबंधु चितरंजनदास और मोतीलाल नहेरू ने स्वराज दल की स्थापना की।
- बिठ्ठल भाई पटेल प्रथम भारतीय थे, जो विधानमंडल के अध्यक्ष चुने गय।
- 1924 में कांग्रेस के बेलगाँव अधिवेशन में गाँधी जी को अध्यक्ष बनाया गया।
- 1925 में सत्य भक्त नामक व्यक्ति ने कानपुर में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की और स्वयं सचिव बन गया।
- 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (R.S.S) की स्थापना 1925 में नागपुर में केशव बलिराम हेडगेवार ने किया था।
- 1925 में कानपुर अधिवेशन में सरोजिनी नायडू को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया। यह प्रथम भारतीय महिला थी।

लॉर्ड इरविन (1926 – 1931) :

- 1927 में लंदन में साइमन आयोग का गठन किया गया, जो 1928 में बंबई पहुँचा। इसमें किसी भी भारतीय को शामिल नहीं किया गया था इसलिए सभी जगह विरोध हुआ।
- 1927 में ऑल इण्डिया स्टेट पीपुल्स कॉन्फ्रेंस का गठन किया गया था।
- 1928 में मोतीलाल नेहरू ने नेहरू रिपोर्ट को प्रस्तुत किया, जिसमें प्रथम लक्ष्य स्वायत शासन और दूसरा लक्ष्य पूर्ण स्वतंत्रता घोषित किया गया था।
- **बारदोली सत्याग्रह (1928)** – यह गुजरात में सरदार बल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में चलाया गया, जो सफल किसान आंदोलन था। इसकी सफलता पर बारदोली की महिलाओं ने इनको सरदार की उपाधि से सम्मानित किया।
- बल्लभभाई पटेल को लौह पुरूष तथा भारत का बिस्मार्क कहा गया है।
- 1929 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज का लक्ष्य घोषित किया गया।
- गाँधी जी ने 12 मार्च 1930 में साबारमती से डांडी की यात्रा शुरू की थी और 6 अप्रैल 1930 में सविनय अवज्ञाा आंदोलन को शुरू कर दिया।
- 1930 में लंदन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें कांग्रेस शामिल नहीं हुई।
- 1931 में दरभंगा के महराज कामेश्वर सिंह ने ''द इण्डियन नेशन'' अखबार का प्रकाश पटना से प्रारंभ किया।
- 5 मार्च 1931 गाँधी–इरविन के बीच समझौता हुआ और गाँधी जी II-गोलमेज सम्मेलन में शामिल होने के लिए लंदन चले गये।

लॉर्ड विलिंगटन (1931 – 1936) :

- 1931 में लंदन के जेम्स पैलेस नामक महल में II-गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसके अध्यक्ष ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रेम्जे मैक्डोनाल्ड थे और इस समय ब्रिटेन के शासक जॉर्ज पंचम थे।
- इसी अवसर पर विंस्टन चर्चिल ने गाँधीजी को अर्द्धनंगा फकीर कहा था।

  गाँधी ने राजपूताना नामक जहाज से यात्रा किया था। संप्रदायिकता के आधार पर II-गोलमेज सम्मेलन असफल घोषित किया गया। जिसमें मु. अली जिन्ना और बाबा साहब अम्बेडकर ने सम्प्रदायिकता की शर्त को रखा था।
- 1932 में लंदन में ही III-गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- तीनों गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने वाले एक मात्र भारतीय बाबा साहब अम्बेडकर थे।

- 1932 में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने हरिजनों को अलग करने के लिए सांप्रदायिक अधिनियम की घोषणा की, जिसको मैकडोनाल्ड अधिनिर्णय भी कहा गया है।
- 1932 में बाबा साहेब अम्बेडकर और गाँधी जी के बीच पूना समझौता हुआ और हरिजनों के लिए सीटों की संख्या बढ़ाकर 71 से 147 कर दिया गया।

  इसी अवसर पर गाँधी जी ने आछूतों को हरिजन कहा। बाबा साहेब अम्बेडकर ने सर्वप्रथम अछुत शब्द का प्रयोग किया था।
- इसी के समय में 1935 का अधिनियम लाया गया।

लॉर्ड लिनलिथगो (1936 – 1944) :

- **1935 का अधिनियम–** यह अधिनियम 1937 में पूर्ण रूप से लागू हुआ, जिसमें 321 अनुच्छेद था जो 10 भागों में विभाजित था। इसके कुछ मुख्य प्रावधान निम्नलिखित है–
- इस अधिनियम के द्वारा सर्वप्रथम केन्द्र में द्वैध शासन लगाया गया।
- इस अधिनियम के द्वारा अब सांप्रदायिकता के आधार पर हरिजनों को हिन्दुओं से अलग किया गया।
- इस अधिनियम के द्वारा बर्मा को भारत से अलग किया गया। इस अधिनियम के द्वारा प्रांतों की द्वैधशासन को समाप्त किया गया। इस अधिनियम के द्वारा एक संघीय न्यायालय की स्थापना की व्यवस्था की गयी।
- इस अधिनियम के द्वारा बिहार में उड़ीसा को 1936 में अलग किया गया।
- इस अधिनियम के द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक के गठन का प्रावधान किया गया और बिहार अलग राज्य बना।

  1935 के अधिनियम के द्वारा 1937 में 11 प्रांतों में चुनाव हुआ। जिसमें बंगाल और पंजाब के कांग्रेस की सरकार नहीं बना। पंजाब में कृषक प्रजा पार्टी और संघवादी दल की संयुक्त सरकार बना और बंगाल में मुस्लिम लीग ने कई दलों के साथ मिलकर सरकार बनाया। यह सरकार 28 माह तक चला।
- 1935 के अधिनियम को जवाहरलाल नेहरू ने ''दासता का नया चार्टर'' कहा।

  1939 में जब II विश्वयुद्ध शुरू हुआ तब अंग्रेजी सरकार ने मंत्रीमंडल से परामर्श लिये बिना सभी भारतीयों को युद्ध में शामिल कर दिया। इसलिए नाराज होकर मंत्रीमंडल ने 1939 में इस्तीफा दे दिया।
- 1939 में जब कांग्रेस ने इस्तीफा दिया तब मुस्लिम लीग ने खुश होकर 1939 में ही मुक्ति दिवस मनाया।
- 1940 में गाँधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह की शुरूआत किया, जिसमें प्रथम सत्याग्रही बिनोवा भावे और दूसरे सत्याग्रही जवाहरलाल नेहरू को बनाया गया।
- **लाहौर अधिवेशन (1940)–** यह मुस्लिम लीग का ऐतिहासिक अधिवेशन था जिसमें पहली बार पाकिस्तान की माँग की गयी और इसके अध्यक्ष मु. अली जिन्ना थे।
- पाकिस्तान शब्द का जनक चौधरी रहमत अली थे।
- ''नाउ और नेवर'' पैम्पफ्लेट रहमत अली ने लिखा था। इसकें सर्वप्रथम पाकिस्तान का उल्लेख किया था।

  1942 में क्रिप्स प्रस्ताव को लाया गया जिसमें सांप्रदायिकता की बात को शामिल किया गया था इसलिए कांग्रेस ने इनको मामने से इंकार कर दिया।
- क्रिप्स प्रस्ताव के संदर्भ में गाँधी जी का कथन–''यह एक ऐसा चेक है, जिसका बैंक दिवालिया होने वाला है।'' (पोस्ट डेटेड चेक)
- 1943 में मुस्लिम लीग ने करॉंची अधिवेशन में बॉंटो और भागो का नारा दिया था।

लॉर्ड वेवेल (1944 – 1947) :

- **वेवेल योजना (1945)**–लॉर्ड वेवेल ने शिमला में एक सर्वदलीय सम्मेलन का आयोजन किया, जिसको शिमला सम्मेलन कहा जाता है। मु. अली जिन्ना की संप्रदायिकता की बात को लेकर शिमला सम्मेलन को असफल घोषित कर दिया गया।

  1945 में II विश्व युद्ध समाप्त हुआ और अमेरिका तथा चीन ने ब्रिटेन पर भारत को स्वतंत्र करने का दबाव बनाना शुरू किया।
- **कैबिनेट मिशन (1946)–** इसमें पेंथिक लॉरेंस, ऐ.बी. अलेक्जेण्डर, स्टेफोर्ड क्रिप्स शामिल थे।
- कैबिनेट मिशन के अध्यक्ष पेंथिक लॉरेंस थे।

  इसी मिशन के रिपोर्ट के आधार पर भारतीय संविधान सभा का गठन हुआ और सितम्बर 1946 में मिशन के रिपोर्ट को कांग्रेस ने मानते हुए अंतरिम सरकार का गठन किया। पाकिस्तान का उल्लेख नहीं होने से मुस्लिम लीग ने कैबिनेट मिशन के रिपोर्ट को मानने से इंकार कर दिया और प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस शुरू कर दिया।

  1946 में मुस्लिम लीग ने प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस प्रारंभ की और सिलहट और नोआखली में सात हजार हिन्दुओं का कत्ल कर दिया गया। गाँधीजी अपने सचिव प्यारेलाल के साथ दंगाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करके शांति की अपील की। मुस्लिम लीग के पाँच सदस्य बाद में जवाहरलाल नेहरू की अंतरिम सरकार में शामिल हुए।
- **नौसेना विद्रोह (1946)**–खान–पान, वेतन और गोरे–कालों का भेदभाव को लेकर भारतीय नौ सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। बंबई के तलवार

नामक जहाज से यह विद्रोह शुरू हुआ। कराँची में हिन्दुस्तान नामक जहाज से यह विद्रोह शुरू हुआ था। लेकिन मु. अली जिन्ना और सरदार पटेल के अनुरोध पर नौ सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया।

लॉर्ड माउण्टबेटन (1947 – 1948) :

- इस समय ब्रिटेन में क्लीमेंट एटली की सरकार थी, जिसने जून 1948 के पहले भारत को स्वतंत्र करने की घोषणा कर दी।

  लॉर्ड माउण्टबेटन जवाहर लाल नेहरू के मित्र थे। इन्होंने देश विभाजन पर गाँधीजी को मना लिया, लेकिन मौलाना अबुल कलाम आजाद अंतिम समय तक विभाजन के खिलाफ थे। लॉर्ड माउण्टबेटन आजाद अंतिम समय तक विभाजन के खिलाफ थे। लॉर्ड माउण्टबेटन ने अपा रिपोर्ट सरकार को सौंप दिया और इसी रिपोर्ट के आधार पर भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 को 4 जुलाई, 1947 में ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत किया गया, जो 18 जुलाई, 1947 में पारित हो गया।
- **भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 –** इसका मुख्य प्रावधान निम्नलिखित है–
- इस अधिनियम के द्वारा 14 अगस्त 1947 में पाकिस्तान और 15 अगस्त 1947 में भारत स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्थापित हुआ।
- पाकिस्तान के प्रथम प्रधानमंत्री लियाकत अली और प्रथम गवर्नर जनरल मु. अली जिन्ना थे।
- इस अधिनियम में यह व्यवस्था की गयी कि भारत और पाक राष्ट्रमंडल का सदस्य बने रहना चाहते हैं या नहीं चाहते हैं, यह उन पर निर्भर है।
- इस अधिनिमय में यह व्यवस्था किया गया कि जब तक भारत का संविधान पूर्ण रूप से लागू नहीं हो जाता तब तक 1935 के अधिनियम से काम चलाया जायेगा।
- इस अधिनियम के द्वारा भारतीय राज्यों को यह स्वतंत्रता दी गयी कि वह भारत या पाक में शामिल हो सकते हैं या स्वतंत्र भी रह सकते हैं। सरदार बल्लभ भाई पटेल की अध्यक्षता में राज्य विभाग की स्थापना की गयी थी।

  सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्रयास से अधिकांश राज्य भारत में शामिल हुए केवल हैदराबार, जूनागढ़ और कश्मीर ने विरोध किया था, लेकिन बाद में इनको भी मिला लिया गया।

सी. राजगोपालाचारी (1948 – 1950) :

- यह स्वतंत्र भारत के प्रथम एवं अंतिम भारतीय गवर्नर जनरल या वायसराय थे।

  26 जनवरी 1950 में जब संविधान पूर्ण रूप से लागू हुआ तब यह पद स्वतः ही समाप्त हुआ और राष्ट्रपति का पद सर्वोच्च हो गया। क्योंकि 26 जनवरी 1950 को भारत प्रजातंत्र के साथ–साथ गणतंत्र राष्ट्र के रूप में भी स्थापित हुआ।

1857 के विद्रोह के पूर्व महत्वपूर्ण विद्रोह/आंदोलन

- भारत के विभिन्न क्षेत्रों में आम लोगों के द्वारा 1857 के पहले विद्रोह या आंदोलन किया गया। विद्रोह का मुख्य कारण आर्थिक कारण था और अधिकांश विद्रोह असफल भी हो गया। इन विद्रोहों में आदिवासी लोगों ने सबसे सशक्त विद्रोह किया, क्योंकि इन लोगों का जीवन–यापन जंगलों पर आधारित था, लेकिन दीकू (बाहरी लोग) ने जब इनके क्षेत्र में प्रवेश किया तब दनकी झुम–पडु की कृषि बाधित हो गयी और अंग्रेजों ने इन लोगों को इसाई धर्म में भी परिवर्तित करना शुरू कर दिया। इसलिए अपने में से एक नेता का चुनाव कर इन लोगों ने विद्रोह कर दिया। कुछ महत्वपूर्ण विद्रोह या आंदोलन निम्नलिखित हैं–

विद्रोह या आंदोलन	काल	नेतृत्वकर्ता
संन्यासी विद्रोह	1763-1788	दीर्जी नारायण , केना सरकार
चुआर विद्रोह	1766	दुर्जन सिंह
दीवान वेलाटम्पी का विद्रोह	1805-1809	बेलाटम्पी
बघेरा विद्रोह	1818-1820	
पाइक विद्रोह	1817-1818	बक्शी जगबंधु
हो / होज विद्रोह	1820	
भील विद्रोह	1825	सेवरम
पागलपंथी विद्रोह	1825	करमशाह, टीपू
अहोम विद्रोह	1828	गोमधर कुँअर
रामोशी विद्रोह	1829	चितर सिंह
बहाबी विद्रोह	1830	सैय्यद अहमद
कोल विद्रोह	1831	बुद्धु भगत/बिन्दराय
खाशी विद्रोह	1833	तिरूत सिंह
फरायजी	1838	हाजी शरियतुल्ल दूदू मियाँ
सन्थाल विद्रोह	1855–1856	सिद्धु–कान्हू

- **सन्यासी विद्रोह**–इस विद्रोह का प्रारंभिक कारण धार्मिक था। तीर्थ यात्रा कर के विरोध में यह शुरू हुआ, लेकिन इसमें साधु संतों के साथ आम लोग भी शामिल हो गये। यह बंगाल में शुरू हुआ और आगे चलकर इसका स्वरूप राजनीतिक हो गया तब अंग्रेजों ने इसे कुचल दिया।
- इस विद्रोह का उल्लेख **बंकिमचन्द्र चटर्जी की पुस्तक आनंदमठ** में किया गया है।
- **बंदे–मात्रम आनंद मठ से लिाय गया है, जो हमारे देश का राष्ट्रीय गीत भी है।**
- **चुआर विद्रोह**–इस विद्रोह का मुख्य कारण आर्थिक था और यह बंगाल के मिदनापुर जिला में शुरू हुआ, जो असफल हो गया।
- **दीवान वेलाटम्पी का विद्रोह**–यह केरल के त्रावणकोर राज्य के शासक थे। जब सहायक संधि पर हस्ताक्षर नहीं किया तब अंग्रेजों ने अभियान किया और 1809 में इनको फाँसी दे दी गयी।
- **बघेरा विद्रोह**–यह विद्रोह गुजरात के बड़ौदा में शुरू हुआ था, जिसको सरकार ने दबा दिया।
- **पाइक विद्रोह**–यह विद्रोह उड़ीसा के क्षेत्र में प्रारंभ हुआ था, जो सफल नहीं रहा।
- **हो/होज विद्रोह**–तात्कालिन समय में बिहार के छोटानागपुर क्षेत्र मे हो जनजाति के लोगों ने इस विद्रोह को शुरू किया था। अन्य विद्रोहों के समान इसे भी दबा दिया गया।
- **भील विद्रोह**–मध्य भारत के क्षेत्र में भील जनजाति के लोगों ने बाहरी लोगों के कारण इस विद्रोह को प्रांरभ किया था, जो असफल रहा।
- **पागलपंथी विद्रोह**–यह अर्द्धधार्मिक संप्रदाय था बंगाल के क्षेत्र में करमशाह ने इस विद्रोह को शुरू किया था। इनके बाद इनके पुत्र टीपू ने नेतृत्व यिका।
- **अहोम**–यह असम के क्षेत्र में किया गया था।
- **खाशी विद्रोह**–वर्तमान में मेघालय के क्षेत्र में यह विद्रोह हुआ जब अंग्रेजों ने इस क्षेत्र में सर्वेक्षरण का कार्य शुरू किया। खाम्पटी और सिहपो जनजाति ने मिलकर यह आंदोलन चलाया था।
- **फरायजी आंदोलन**–बंगाल के क्षेत्र में हाजी शरियुल्ला ने इसे शुरू किया। इसके बाद इनके पुत्र दुदु मियाँ ने नेतृत्व प्रदान किया था।
- **संाािल विद्रोह**–1857 के विद्रोह के ठीक पूर्व यह सबसे महत्वपूर्ण और सफल विद्रोह था। भागलपुर और राजमहल पहाड़ी के बीच के क्षेत्र को **दमन–ए–कोड** कहा गया है, जहाँ संथाल निवास करते थे।
- पीरपैंती के युद्ध में संथालों ने मेजर बारो को पराजित कर दिया।
- संथाल विद्रोह को हुल विद्रोह भी कहा गया है।

1856 ई. मे संथाल पगना अधिनियम पारित करके सभी अधिकार संथालों को पूर्व के समान दे दिया गया। इस प्रकार उपर्युक्त सभी विद्रोह या आंदोलन ने 1857 के विद्रोह की पृष्ठभूमि को तैयार कर दिया।

1857 के बाद महत्वपूर्ण विद्रोह/आन्दोलन

- 1857 के क्रांति के बाद आन्दोलन और विद्रोह का सिलसिला जारी रहा। भले ही यह सीमित पैमाने पर किया गया हो लेकिन इस आन्दोलन और विद्रोह के माध्यम से अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध अपनी भावनाओं को प्रदर्शित किया, जिसका वर्णन निम्नलिखित है–
- **नील आंदोलन (1859–1860)**–बंगाल के क्षेत्र में नादिया जिला के गोविन्दपुर गाँव से इस आन्दोलन का शुरूआत हुई। **विष्णु विश्वास** और **दिगम्बर विश्वास** ने इस आनदोलन का नेतृत्व प्रदान किया। यह आन्दोलन नील की खेती के विरूद्ध किया गया था।
- इस आंदोलन का विस्तारपूर्वक उल्लेख 'नील दर्पण' नामक नाटक ग्रंथ में किया गया है, जिसके लेखक का नाम **दीनबंधु मित्र** है।
- 'नील दर्पण' का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद मधुसूदन दत्त ने किया था।
- **हिन्दू पैट्रियाट** के सम्पादक **हरिशचंद मुखर्जी** ने इस आन्दोलन को पूर्ण रूप से अपना समर्थन दिया।
- ब्रिटिश सरकार ने 1860 में इस समस्या को सुलझाने हेतु नील आयोग का गठन किया और इस आयोग के रिपोर्ट के आधार पर नील की खेती को प्रतिबंधित कर दिया। इस प्रकार 1857 के विद्रोह के ठीक बीद यह सबसे महत्वपूर्ण सफल आन्दोलन था।
- **कूका आन्दोलन (1872)**–पंजाब के क्षेत्र में संचालित किया गया था। प्रवर्तक **भगत जवाहर मल** थे, लेकिन लोकप्रिय बनाने का कार्य **बाबा राम सिंह** ने किया। 1885 में इनको गिरफ्तार कर रंगून भेज दिया गया। इस प्रकार यह विद्रोह असफल रहा।
- **पावना विद्रोह (1873–1876)**–यह विद्रोह भी बंगाल के क्षेत्र में संचालित किया गया था। यह विद्रोह अंग्रेजी सरकार के खिलाफ नहीं बल्कि जमींदारों के खिलाफ किया गया था। । यूसूफ सराय नामक स्थान पर कृषक संघ की स्थापना कर शम्भु पाल और इसान चन्द्र राय के नेतृत्व में यह आन्दोलन चलाया गया। इस आन्दोलन के क्रम में महत्वपूर्ण कथन–''हम महामहीम के रैयत होकर रहना चाहते हैं। जमींदारों का नहीं।''
- बंगाल किरायदारी अधिनियम 1885 में पारित किया गया था।
- **मुण्डा विद्रोह (1899–1900)** इस विद्रोह के जन्मदाता **बिरसा मुंडा** थे। मुख्य केन्द्र राँची तथा उसके आस–पास का क्षेत्र था। इस विद्रोह को **उलगुलान** भी कहा जाता हैं, जिसका अर्थ महान् हलचल होता है।
- बिरसा मुंडा का जन्म 1874 में राँची के तमाड़ थाना के उलिहातू या चलाखद गाँव में हुआ था। इनके गुरू का नाम **आनंद पाण्डेय** था। इन्होंने 1895 में स्वयं को ईश्वर का दूत घोषित कर दिया।
- अंग्रेजी सरकार ने अपनी पूर्ण शक्ति लगाकर इस विद्रोह को कुचल दिया और बिरसा मुंडा को गिरफ्तार कर राँची कीी जेल में कैद कर दिया जहाँ, 1900 ई. में उनकी मृत्यु हो गयी। इन्होंने सिंहबोगा की पूजा और आत्मशुद्धि पर ध्यान देने का उपदेश दिया था। साथ ही मदिरापन पर रोक लगाने संबंधी अनुरोध किया।

  भले ही यह आन्दोलन असफल हो गया, लेकिन इसी परिपेक्ष में 1908 में छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम पारित किया गया, जिसके अन्तर्गत बेगारी प्रथा को समाप्त किया गया और खुँटकठी प्रथा को जारी रखने का प्रावधान किया गया ।
- **ताना भगत आन्दोलन (1914)**–यह आन्दोलन उराँव गति द्वारा बिहार में जातरा भगत के नेतृत्व में चलाया गया था। यह आन्दोलन गाँधीजी के आन्दोलन से मिलता जुलता आन्दोलन है। इस आन्दोलन में हिंसा की गुंजाईश नहीं थी। आगे चलकर यह आन्दोलन गाँधीजी के अन्दोलन के साथ मिल गया।
- **उत्तर प्रदेश का किसान आन्दोलन (1918–1920)**–उत्तर प्रदेश में 1918 में गौरीशंकर मिश्र, द्विज नारायण झा और मदन मोहन मालवीय के सहयोग से किसान सभा का गठन किया गया। लेकिन इस आन्दोलन से जुड़ गये।

  बाबा रामचन्द्र के सहयोग से 1920 में प्रतापपुर में अवध किसान सभा का गठन किया गया और इसी के द्वारा उत्तर प्रदेश के किसान आंदोलन को संचालित किया गया।
- **मोपला विद्रोह (1921)**–यह विद्रोह केरल के मालाबार क्षेत्र में हुआ था। अली मुसालियार नामक व्यक्ति ने आन्दोलन को संचालित किया था। इस विद्रोह में रैयत वर्ग मुस्लिम और जमींदार वर्ग हिन्दू थे। प्रारम्भ में गाँधीजी ने भी समर्थन किया थ, लेकिन जब इसका स्वरूप आर्थिक से बदलकर धार्मिक हुआ और साम्प्रदायिक रूप ग्रहण कर लिया तब गाँधीजी ने अपना समर्थन वापस ले लिया
- बिहार किसान आंदोलन– गाँधीजी ने 1917 में सफल चम्पारण सत्यागह का संचालन किया था। चम्पारण सत्याग्रह के दौरान पटना लॉन या बाँकीपुर मैदान का नाम गाँधी मैदान 1918 में हो गया। जनवरी 1918 में गाँधीजी ने इस मैदान से लोगों को सम्बंधित किया था।

  बिहार में किसान आंदोलन के सर्वप्रप्रथम नेता स्वामी सहजानंद सरस्वती थे। 1929 में बिहार प्रादेशिक किसान सभा का गठन किया गया बिहटा में एक विशाल किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया । स्वामी सहजानंद सरस्वती ने अखिल भारतीय संयुक्त किसान सभा का भी गठन किया था। इनका लेख हुँकार से प्रकाशित होता था। मु. जुबैर हुसैन ने मुंगेर में किसान सभा का गठन किया था। 1936 में लखनऊ में अखिल भारतीय किसान सभा का प्रथम अध्यक्ष भी स्वामी सहजानंद सरस्वती को बनाया गया था।
- **तेभागा आन्दोलन (1946)**–आजादी के ठीक पहले यह सबसे महत्वपूर्ण आन्दोलन था। **बंगाल** के क्षेत्र में इस आन्दोलन को संचालित किया गया था। **भुवन सिंह** और कम्पाराम सिंह ने इस आन्दोलन का नेतृत्व प्रदान किया था।

  आजादी के पूर्व किसानों ने जो आंदोलन किया वह भले ही पूर्ण रूप से सफल नहीं रहा लेकिन स्वतंत्रता के बाद जब प्रथम पंचवर्षीय योजना सरकार ने लागू किया तब कृषि को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर किसानों की दशा को सुधारने का प्रयास किया गया।

1857 का विद्रोह

- 1857 के पूर्व जो विद्रोह या आंदोलन हुआ, वह क्षेत्रीय स्तर पर किया गया था। यह प्रथम विद्रोह था, जिसका स्वरूप पूर्व के विद्रोहों से व्यापक था, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित तथ्यों का अध्ययन किया जाता है–
- **कारण**–इस विद्रोह के कई कारण निम्नलिखित हैं–
- **राजनीतिक कारण**–राजनीतिक कारण के अन्तर्गत विलय का सिद्धान्त, उपाधियें का अंत, पेंशन की समाप्ति, राजाओं के साथ अपमानजनक व्यवहार आदि को शामिल किया जाता है।
- **सामाजिक कारण**–इसके अन्तर्गत अंग्रेजों ने अच्छा कार्य किया था, फिर भी रूढ़िवादी भारतीयों ने इसका विरोध किया। जैसे–सती प्रथा पर प्रतिबंध, नरबली प्रथ, शिशु हत्या और दास प्रथा पर प्रतिबंध, विधवा पुनर्विवाह की अनुमति के साथ ही रेल डाक, तार आदि कार्यों का भी विरोध किया गाय।
- **आर्थिक कारण**–इसके अन्तर्गत तीन प्रकार की भू–राजस्व नीति, कृषि का व्यवसायीकरण, धन का निष्कासन, भारतीय कुटीर एवं लघु उद्योग का पतन आदि को शामिल किया जाता है।
- **जॉन सुलीवन का कथन**–''हमारी नीति उस स्पंज के समान है, जो गंगा नदी से सोख कर टेम्स में निचोड़ देती है।''
- **धार्मिक कारण**–माथे पर पगड़ी धारण करना, कानों में कुंडल, माथे पर टीका लगाना को प्रतिबंधित करना, इसाई धर्म में परिवर्तित कराना और 1856 के अधिनियम के द्वारा सभी सैनिकों को समुद्र पार करना अनिवार्य कर देना आदि को शामिल किया जाता है।
- **तात्कालिक कारण**–चर्बी वाला कारतूस इस विद्राहे का तात्कालिक कारण था। पुराने ब्राउन बैस बंदूक के स्थान पर नए एनफिल्ड रायफल आ गया, लेकिन इसमें प्रयोग किया जाने वाला कारतूस में गाय और सुअर की चर्बी मिला हुआ होता था, जिससे हिन्दु और मुस्लिम की धार्मिक भावनाएँ आहत हुई और विद्रोह शुरू हुआ।
- 29 मार्च 1857 को यह विद्रोह बैरकपुर से शुरू हुआ।

  मेरठ में 20वीं रेजीमेंट के सैनिकों ने 10 मई को विद्रोह शुरू हुआ। और 11 मई को दिल्ली पहुँच गये और मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर को अपना नेता चुन लिया। इस प्रकार यह विद्रोह भारत के विभिन्न क्षेत्रों में शुरू हुआ।
- **स्वरूप**–इस विद्रोह के स्वरूप का निर्धारिण किसी एक विद्वान के द्वारा नहीं किया जा सकता। विभिन्न विद्वानों ने अपना मत प्रस्तुत किया है–

मत		विद्वान का नाम
यह राष्ट्रीय विद्रोह था	–	डिजरायली
यह सैनिक विद्रोह था	–	सीले और लॉरेंस
यह प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था	–	विनायक दामोदार सावरकर
यह प्रथम राष्ट्रीय विद्रोह था	–	वी. डी. सावरकर
यह हिन्दू–मुस्लिम का षड्यंत्र था	–	जेम्स आउट्रम
यह इसाईयों के विरूद्ध धर्म युद्ध था	–	रीज
यह सभ्यता और बर्बरता का युद्ध था	–	टी. आर. होम्स
यह न तो प्रथम था, न राष्ट्रीय था और न न ही स्वतंत्रता संग्राम था	–	आर. सी. मजूमदार

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट है कि इस विद्रोह के स्वरूप का निर्धारण नहीं किया जा सकता, इसलिए आज भी इस पर शोध जारी है।

- **प्रमुख स्थान**–इस विद्रोह में भारत के तरफ से और अंग्रेजों के तरफ से नेतृत्व प्रदान किया गया, जिसको स्वतंत्रता निम्नलिखित रूपों में हमलोग देख सकते हैं–

स्थान	भारतीय नेतृत्व	अंग्रेजी नेतृत्व
दिल्ली	बहादुरशाह–II, बख्त खाँ	निकलसन और हडसन
कानपुर	नाना साहेब	कैंपबेल
लखनऊ	बेगम हजरतमहल	कैंपबेल
झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई	ह्यूरोज
ग्वालियर	तात्या टोपे	ह्यूरोज
बरेली	खान बहादुर खाँ	विसेन्ट आयर
फैजाबाद	मौलवी अहमदुल्ला	कर्नल रेनर्ड
फतेहपुर	अजीमुल्ला	कर्नल रेनर्ड
इलाहाबाद, बनारस	लियाकल अली	कर्नल नील
मेरठ	कदम सिंह	

मथुरा	देवी सिंह	
बिहार (जगदीशपुर)	वीर कुँवर सिंह	विसेन्ट आयर, विलियम टेलर
पटना	पीर अली	विसेन्ट आयर, विलियम टेलर
दानापुर	जोधारा सिंह	विसेन्ट आयर, विलियम टेलर

सर्वप्रथम इस विद्रोह को अंग्रेजी ने दिल्ली में कुचल दिया और मुगल बादशाह बहादुरशाह को रंगून भेजा गय और उनके सभी रिश्तेदारों की हत्या कर दिया गया।

कानपुर में नाना साहब ने नेतृत्व किया था, जिसका मूलनाम दुदुपंत था। यह कालांतर में नेपाल चले गये। इन्होंने बहादुरशाह–प का प्रतिनिधि स्वयं को घोषित किया था।

अवध या लखनऊ में बेगम हजरतमहल ने अपने पुत्र बिरजीश कदर को नवाब घोषित किया, लेकिन यह भी नेपाल चली गई।

रानी लक्ष्मी बाई के बचपन का नाम मनु बाई (मनिकर्णिका) था। इनका विवाह गंगाधर राव से हुआ था, इनके दत्तक पुत्र का नाम दामोदार राव था। इन्होंने अंग्रेज सेनापति विण्डहक को पराजित किया। लेकिन ग्वालियर के समीप काल्पी नामक स्थान पर वीरगति को प्राप्त हुई। ह्यूरोज का कथन–''यहाँ जो औरत सोई हुई है, वह सभी विद्रोहियों में एक मात्र मर्द है।''

तात्या टोपे–इनका मूल नाम रामचंद्र पंडुरंग था। यह राजस्थान के अलवर के जंगल में मानसिंह के बतलाने पर अंग्रेजों के हाथ लग गये। परिणामस्वरूप 1859 में इसको फाँसी दे दी और इसी के साथ 1857 का विद्रोह समाप्त हुआ।

वीर कुँवर सिंह–1857 के विद्रोह में यह सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। दानापुर के सैनिकों ने जगदीशपुर पहुँचकर इनको अपना नेता चुन लिया परिणामस्वरूप इन्होंने पूरे बिहार का नेतृत्व किया। वीरगति प्राप्त करने से पूर्व यह संपूर्ण आरा पर नियंत्रण स्थापित कर चुके थे।

अजीमुल्लाह–अजीमुल्लाह और रंगोजीबापू ने मिलकर लंदन में यह विद्रोह करने का षड्यंत्र रचा था। भारत मं इस विद्रोह को शुरू किया। इसके बाद मुजफ्फरपुर में यह विद्रोह शुरू हुआ।

- मुजफ्फरपुर जेल के कैदियों ने लोटा विद्रोह के माध्यम से इसमें साथ दिया।
- **असफलता का कारण–**इस विद्रोह के असफलता का कारण निम्नलिखित है–
- **कुशल नेतृत्व का अभाव–**बहादुरशाह–II योग्य नेतृत्वकर्ता नहीं थे, जबकि हडसन, कैम्पबेल आदि योग्य थे।
- **समिति संसाधन–**अंग्रेजों के विपरीत विद्रोहियों के पास सीमित संसाधन था। इसलिए असफल हो गया।
- **राष्ट्रीय भावना का अभाव–**इस समय राष्ट्रवाद का जन्म नहीं हुआ था। सभी विद्रोही अपने–अपने स्वार्थ के लिए लड़ रहे थे, इसलिए असफल हुआ।
- **शिक्षित वर्ग की उदासीनता–**भारत के शिक्षित वर्ग ने भारतीयों के मनोबल को बढ़ाने के बजाय मनोबल को तोड़ने का कार्य अपनी पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से किया, जो असफलता का कारण बन गया।
- **समय से पूर्व क्रांति का होना–**31 मई 1857 में एक साथ पूरे भारत में विद्रोह करठल त्ंदरममज लंकंअे पतना था। लेकिन 29 मार्च को ही यह प्रारंभ हो गया, इसलिए असफल हुआ।
- **परिणाम–**1857 के विद्रोह का परिणाम निम्नलिखित है–

(1) 1858 का अधिनियम पारित किया गया।

(2) आर्थिक शोषण के नये युग की शुरूआत अर्थात् भारत को अब कच्चा माल का निर्यातक और इंग्लैण्ड में बने हुए माल का आयातक बना दिया गया।

(3) हिन्दू–मुस्लिम के बीच एकता–यह सकारात्मक परिणाम था, जो राष्ट्रीय आंदोलन में भी दिखाई पड़ता है।

(4) राजवाड़ों के प्रति नीति में परिवर्तन

(5) सेना का पुनर्गठन–पील आयोग के रिपोर्ट के आधार पर भारतीय सैनिकों की संख्या को कम किया गया।

विविध तथ्य :

- इस विद्रोह के समय लॉर्ड कैनिंग ने भारतीय राजाओं को तरंग रोध कहा था जिसने, साथ दिया था।
- चर्बी वाले कारतूस से चलने वाली एनफिल्ड रायफल को दिसम्बर 1856 में सेना में शामिल किया गया था।
- 1 नवम्बर 1858 को भारतीय प्रशासन को ब्रिटिश ताज (क्राउन) के अधीन करने की घोषणा महारानी विक्टोरिया ने की।
- कमल का फूल और चपाती इस विद्रोह का प्रतीक चिन्ह था।
- इस विद्रोह का सबसे कमजोर कड़ी बहादुरशाह–II था।]
- बहादुरशार–II की पत्नी जीनतमहन ने अंग्रेजों के साथ मिलकर विद्रोहियों के खिलाफ षड्यंत्र किया था।
- अंग्रेजों के सबसे अहम दुश्मन मौलवी अहमदुल्ला थे।
- प्रसिद्ध उर्दू शायर मीरजा गालिब इस विद्रोह के समय दिल्ली में मौजूद थे।
- 1857 के विद्रोह का सरकारी लेखक सुरेन्द्रनाथ सेन थे।

सामाजिक–धार्मिक सुधार आन्दोलन

- प्राचीन काल में और मध्यकालीन काल में सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में सुधार के लिए आन्दोलन चलाया गया इसी पृष्ठभूमि में आधुनिक भारत के इतिहास में भी इस प्रकार के आन्दोलन को संचालित करने का श्रेय दिाय गया है। राजाराम मोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत या पिता कहकर के संबोधित किया गया है। इस आन्दोलन के कुछ महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित हैं–
  (i) पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव (ii) मध्यम वर्ग का उदय।
  (iii) भारतीयों में आत्म चेतना का संचार। (iv) भारत में ईसाई मिश्नरियों का आगमन।
  (v) ब्रिटिश सरकार के द्वारा किया गया पक्षपातपूर्ण कार्य।
- **ब्रह्म समाज (1828)** – इसके संस्थापक राजाराम मोहन राय थे, जिनका जन्म बंगाल में राधानगर गाँव में 1773 में हुआ था। ये रूढ़ीवादी ब्राह्मण परिवार से आते थे। यह मूर्ति पूजा के विरोधी थे। यह हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, अरबी, फारसी, संस्कृत, लैटिन और फ्रांसीसी भाषाओं के जानकार थे। इन्होंने पटना में अरबी और फारसी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया अंग्रेजी भाषा का ज्ञान इन्होंने अपने अधिकारी जॉन डिग्बी से प्राप्त किया था। इनके गुरू का नाम जमीं वैंथम था।
- राजाराम मोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का जनक, अग्रदूत और प्रभात तारा तथा नए भारत का पैगम्बर कहा गया है।
- इनको राजा की उपाधि मुगल बादशाह अकबर द्वितीय ने दिया था। यह एकेश्वरवाद में विश्वास करते थे।
- इन्होंने 1815 में आत्मीय समाज की स्थापना कलकत्ता में किया, जो आगे चलकर 1828 में ब्रह्म समाज कहलाया।
- 1825 में इन्होंने कलकत्ता में वेदान्त कॉलेज की स्थापना की।
- इनको भारतीय प्रेस और समाचार पत्र का जनक भी कहा जाता है।
- इनके कुछ महत्वपूर्ण पत्र–पत्रिका–संवाद कौमुदी
  तुहफात–उल–मुवाहिदिन
  गिफ्ट–टू–मोनोथेइस्ट
  प्रिसेप्ट–ऑफ–जीसम
  मिरातुल–अखबार, न्य टेस्टामेंट
- इसमें सबसे महत्वपूर्ण संवादकौमुदी है, जिसको प्रज्ञा का चाँद भी कहा जाता है।
- मुगल बादशाह अकबर द्वितीय के पेंशन को बढ़ाने के लिए ब्रिटेन जाने के क्रम में इनको राजा की उपाधि दी गयी। ब्रिटेन मे 1833 में बिस्टल मे मौजूद है।
- 182 में इन्हीं के प्रयास से विलियम बैंटिक ने सती प्रथा को प्रतिबंधित किया।
- **देवेन्द्रनाथ टैगोर**–राजाराम मोहन राय के मृत्यु के बाद बह्म समाज के नेतृत्वकर्ता देवेन्द्रनाथ टैगोर हो गये। देवेन्द्रनाथ टैगोर ने केशवचन्द्र सेन को ब्रह्मसमाज में दिक्षित कराया। देवेन्द्र नाथ टैगोर ने 183 में जोरासंकी में तत्वरंजिनी सभा की स्थापना की, जो आगे चलकर **तत्वबोधिनी** सभा कहलाया।
- इन्होंने तत्वबोधिनी नामक पत्रिका का सम्पादन भी प्रारम्भ किया।
- देवेन्द्रनाथ टैगोर और केशव चन्द्रसेन के बीच वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो गया। परिणामस्वरूप 1865 में ब्रह्म समाज में पहली बार विभाजन हुआ। आदि ब्रह्मसमाज के नेतृत्वकर्ता देवेन्द्रनाथ टैगोर और भारतीय ब्रह्म समाज के ब्रह्मसमाज के नेतृत्वकर्ता केशवचन्द्र सेन थे।
- **केशवचन्द्र सेन**–केशवचन्द्र सेन बाल विवाह के विरोधी थे, लेकिन अपनी छोटी पुत्री का विवाह बिहार कूच बिहार के महाराजा के साथ कर दिया। परिणामस्वरूप आनन्दमोहन बोस के नेतृत्व में उनके समर्थक केशवचन्द्र सेन से अलग हुए और 1878 में साधारण ब्रह्म समाज की स्थापना किया।
- **आर्य समाज**–इसके संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती थे। इन्होंने बम्बई में 1875 में आर्य समाज की स्थापना की। इनका जन्म 1824 में गुजरात के मौरवी के टकनपुरा गाँव में हुआ था। इनके बचपन का नाम मूलशंकर था। यह सबसे पहले स्वामी सम्पूर्णनन्द के सम्पर्क में आये जिन्होंने इनका नाम स्वामी दयानंद रख दिया। सम्पूर्णनन्द सरस्वती सम्प्रदाय से संबंधित थे, इसलिए स्वामीय दयानन्द के नाम के साथ सरस्वती शब्द भी जुड़ गया तब यह स्वामी दयानन्द सरस्वती कहलाये। ये मथुरा के प्रसिद्ध अंधे संत विरजानन्द के सम्पर्क में आये, जो इनके गुरू बन गये।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आगरा से अपने धर्म का प्रचार–पसार शुरू यिका और अजमेर में इनकी मृत्यु हो गयी। इनका प्रसिद्ध कथन–**''वेदों की ओर लौटो।''**
  ''बुरा से बुरा देशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा ही होता है''।
- **प्रसिद्ध ग्रंथ**–(i) सत्यार्थ प्रकाश (ii) पाखंड पताका।
  आर्य समाज स्वदेशी का सबसे बड़ा समर्थ था, इसीलिए वेलेन्टाइन शिरोल ने अपनी प्रसिद्ध ग्रंथ इण्डियन अनरेस्ट में आर्य समाज को भारतीय अशांति का जनक कहा।
  कालांतर में लाला हंसराज और लाला लाजपतराय ने इसमें सहयोग प्रदान किया। परिणामस्वरूप लाहौर में प्रथम एंग्लो–वैदिक कॉलेज की स्थापना की।
- 1902 में हरिद्वार में गुरूकूल कांगड़ी की भी स्थापना की गयी, जहाँ पर वैदिक रीति रिवाज के अनुसार शिक्षा का कार्य सम्पन्न किया जाता है।

- **अलीगढ़ आंदोलन (1875)**–यह आन्दोलन अलीगढ़ में सर सैयद अहमद खाँ के द्वारा चलाया गया। इस आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य मुस्लिम शिक्षा का विकास और भारतीय राजनीति में मुस्लिमों की भागीदारी को सुनिश्चित करना था।

  इन्होंने इस आन्दोलन के माध्यम से मुस्लिम समुदाय के आधुनिक बातों को शामिल करने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप पीरी–मुरीदी प्रथ का विरोध किया। इन्होंने अपने मतों के प्रचार प्रसार के लिए तहजीब–उल–अखलाक नामक पत्रिका का सम्पादन किया। इनकी प्रसिद्ध पुस्तक का नाम जाम–ए–जाम है। चिराग अली और शिबली नुमानी आदि ने सहयोग प्रदान किया था। इनका प्रसिद्ध कथन–''भारत एक सुन्दर बधू के समान है और हिन्दू तथा मुस्लिम उसकी दो सुन्दर आँखें हैं।''

  कालान्तर में सर सैय्यद अहमद खाँ ने साम्प्रदायिकता का सहारा लिया। अर्थात् साम्प्रदायिकता का प्रारम्भ यहीं से माना जाता है। इन्होंने अलीगढ़ में मोहम्मडन–एंग्लो–ओरिएण्टल कॉलेज का निर्माण 1875 में कराया, जो 1920 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के रूप में विख्यात हुआ।
- **रामकृष्ण मिशन (1896–1897) :** इसके संस्थापक स्वामी विवेकानंद थे। इनके बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। यह 1893 शिकागो धर्म सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया। शिकागो जाने के कर्म में खेतड़ी के महाराज ने स्वामी विवेकानंद नाम से संबांधित किया। इन्होंने शिकागो धर्म सम्मेलन में शून्य विषय पर भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से विश्व को अवगत कराया। इनकी प्रमुख शिष्या का नाम मारगेट नोबेल था। इनका नाम बदलकर सिस्टर निवोदिता रख दिाय गया। दो अन्य प्रसिद्ध शिष्या मैडम लुई और साण्डर्स का नाम बदलकर कृपानन्द और अभ्यानंद रख दिया।
- स्वामी विवेकानंद को नव हिंदूवाद का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि माना जाता है।
- सुभाष चन्द्र बोस ने इनको भारतीय पुनर्जागरण का ''अध्यात्मिक पिता'' कहा जाता है।

  स्वामी विवेकानंद रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे और उन्हीं की स्मृति में बंगाल के वेलूर में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। रामकृष्ण परमहंस की पत्नी का नाम शारदामणि था।
- **थियोसोफिकल सोसायटी (1875) :** इसकी स्थापना न्यूयॉर्क में मैडम हेलना पेट्रोवाना वालावस्की और सर हेनरी अल्कॉट ने किया था।
- मद्रास के समीप 1886 में अय्यार नामक स्थान पर इसका मुख्य केन्द्र बनाया गया।

  आयरलैंड की रहनेवाली श्रीमती एनी विसेंट ने सबसे अधिक इसका प्रचार–प्रसार किया। इन्होंने 1898 में बनारस में सेन्ट्रल स्कूल की स्थापना की, जो आगे चलकर 1916 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिसमें सबसे अधिक सहयोग **मदन मोहन मालवीय** का था।
- **प्रार्थना समाज (1867) :** केशवचन्द्र सेन के सहयोग से आत्माराम पांडूरंग और महादेव गोवन्दि राणाडे ने इसकी स्थापना किया गया था। महादेव गोवन्दि राणाडे को महाराष्ट्र का सुकरात कहा जाता है।
- **रहनुमाए–मज्यादन सभा (1851) –** इसकी स्थापना दादा भाई नौरोजी , नौरोजी फूरदौन जी और एस. एस. बंगाली ने किया। इसका मुख्य उद्देश्य पारसी महिलाओं के दशा में सुधार करना था। इन्होंने अपने प्रचार प्रसार के लिए रफ्त–ए–गोफ्तार नामक पत्रिका का सम्पादन भी किया।
- **यंग–बंगाल आन्दोलन (1826) –** यह आन्दोलन बंगाल में संचालित किया गया था। इस आन्दोलन के प्रवर्तक **हेनरी विवियन डिरेजियो** थे। यह कलकत्ता में स्थापित हिन्दू कॉलेज में हिन्दी के प्रसिद्ध शिक्षक थे। इतिहासकारों ने इनको प्रथम राष्ट्रवादी कवि की संज्ञा दी थी।

नोट : 1817 ई. में आयरलैंड के डेविड हेयर ने कलकत्ता में राजा राम मोहनराय के सहयोग से हिन्दू कॉलेज को स्थापित किया।

- **देवबंद आन्दोलन (1866–1867)**–यह आन्दोलन उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिला में चलाया गया। रशीद अहमद गंगोई और मोहम्मद कासिम नानावती के नेतृत्व में इस आन्दोलन को चलाया गया। इस आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य इस्लाम धर्म में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं करना था। इस आन्दोलन के सदस्यों ने अलीगढ़ आन्दोलन का विरोध किया और फतवा जारी किया।
- **अहमदिया आन्दोलन (1889)**–यह आन्दोलन पंजाब के जिला के गुरूदासपुर में चलाया गया। इसके प्रवर्तक का नाम मिर्जा गुलाम अहमद है। कालांतर में इन्होंने स्वयं को कृष्ण और ईसा मसीहा का अवतार घोषित कर दिया। परिणामस्वरूप यह आन्दोलन असफल हो गया।
- **सत्य शोधक समाज** इसके संस्थापक का नाम ज्योतिबा फूले था। इन्होंने महाराष्ट्र के क्षेत्र में निम्न जातियों के दशा में सुधार के लिए आन्दोलन को चलाया और गुलामगिरी नामक पुस्तक की रचना की।
- **बहिष्कृत हितकारिणी सभा (1924)**–इसके संस्थापक **बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर** थे। इन्होंने निम्न कुल/महार कुल में जन्म लिया था। लेकिन भारतीय संविधान के जनक माने जाते है।। इन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन के क्रम में अछूतों के लिए व्यापक पैमाने पर आन्दोलन को संचालित किया। 1932 मे इनके और गाँधीजी के बीच पूणा समझौता भी सम्पन्न हुआ। इन्होंने बहिष्कृत भारत नामक पत्रिका का सम्पादन किया। अंत समय में इन्होंने बौद्ध धर्म को अपना लिया।
- **आत्म–सम्मान आन्दोलन (1925)**–यह आन्दोलन दक्षिण भारत (तमिलनाडु) में अछूत वर्ग के लिए सबसे महत्वपूर्ण आन्दोलन था। इसके प्रवर्तक ई. वी. राधास्वामी नायंकर थे। यह आन्दोलन मंदिर में प्रवेश को लेकर चलाया गया।
- **अखिल भारतीय हरिजन संघ (1932)**–गाँधीजी ने इसकी स्थापना की थी। इन्होंने इसी अवसर पर अछूतों को हरिजन नाम दिया। घनश्याम दास बिड़ला ने इस आन्दोलन में गाँधीजी का महत्वपूर्ण साथ निभाया था।

  उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में हम कह सकते हैं कि इस आन्दोलन में निश्चित रूप से सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र को प्रभावित किया। इसने राष्ट्रीय आन्दोलन के मार्ग को भी तैयार किया।

विविध तथ्य :

- 1819 में ईसाई धर्म प्रचारकों ने कलकत्ता में तरूण स्त्री सभा की स्थापना की।
- 1849 में बेंथुन (बेटन) महोदय ने कलकत्ता में एक बालिका विद्यालय स्थापित किया।
- 1849 में बम्बई में गोपाल हरि देशमुख ने परमहंस मंडली की स्थापना की।
- गोपाल हरिदेशमुख को **लोकहितवादी** कहा जाता है।
- 1927 में अखिल भारतीय महिला संघ की स्थापना की, जिसमें सरोजनी नायडू ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी।
- 1930 ई. में शारदा अधिनियम पारित हुआ, तो बाल विवाह से संबंधित था। इस अधिनिमय के द्वारा अब लड़कियों की उम्र 14 साल तथा लड़कों की 18 साल हुई।
- 1956 में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित करवाया गया।
- 1956 में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम पारित हुआ, जिसके द्वारा पिता की सम्पत्ति में पुत्र के समान ही पुत्री को भी अधिकार दिया गया।
- 1955 में हिन्दू विवाह अधिनियम पारित हुआ, जिसके अंतर्गत हिन्दू धर्म में एक विवाह पद्धति का प्रावधान है।

राष्ट्रीय आन्दोलन (1885–1948)

- 1857 के क्रांति के बाद राष्ट्रीय एकता की बात निकलकर सामने आया। आधुनिक खोजों से यह स्पष्ट हो गया है कि राष्ट्रीय आन्दोलन की शुरूआत 1885 से हुई, जब कांग्रेस का जन्म हुआ। कॉंग्रेस ने ही अखिल भारतीय स्तर पर इस आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया। जिसके उदय का कारण निम्नलिखित है–
  (i) भारतीय समाचार पत्र और प्रेस की भूमिका
  (ii) पश्चिमी शिक्षा एवं साहित्य का योगदान
  (iii) बौद्धिक जागरण का प्रभाव
  (iv) अंग्रेजी सरकार की आर्थिक शोषण की नीति।

  भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को अध्ययन की सुविधा के लिए तीन भागों में विभाजित किया जाता है, जो निम्नलिखित हैं–
  नरमपंथी/उदारवादी काल (1885-1905)
  गरमपंथी/उग्रवादी काल (1905-1918)
  गाँधी युग (1919-1948)
- **नरमपंथी/उदारवादी काल (1885-1905)** – यह काल उदार विचारधारा के लोगों का काल था। इन लोगों के अनुसार संवैधानिक तरीका से सरकार के समक्ष अपने माँग को प्रस्तुत किया जाये। इस काल को उग्रवादियें ने भिक्षावृत्ति का काल कहा है। इस काल के प्रमुख नेता दादा भाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, डब्ल्यू. सी. बनर्जी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी आदि महत्वपूर्ण थे।
- **उग्रवादी काल/गरमपंथी (1905-1918)–** इस काल का नेतृत्व उग्र विचारधारा के लोगों ने सम्पन्न किया था। यह लोग विचार से उग्र थे न कि बम और पिस्तौल की राजनीति करते थे। इनके अनुसार स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। इस काल के नेतृत्वकर्ता में सर्वप्रमुख नाम बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल और अरविन्द घोष का नाम लिया जाता है।
- **गाँधी युग (1919-1948)**– गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका से 1915 में ही वापस आ गये थे, लेकिन सक्रिय रूप से राजनीति में इनका प्रवेश 1919 में हुआ। इन्हीं के नेतृत्व में महत्वपूर्ण आन्दोलन को संचालित किया गया और देश आजाद हुआ, इसीलिए इस काल को गाँधी युग की संज्ञा दी गयी।

कांग्रेस के पूर्व महत्वपूर्ण संगठन

- **बंगाल जमींदार सभा (1838)**–इसकी स्थापना द्वारिका नाथ टैगोर ने कलकत्ता में किया था। यह भारत प्रथम सार्वजनिक संस्था के रूप में स्थापित हुआ था। लेकिन यह केवल जमींदारों के हितों की रक्षा के लिए बनाया गया संगठन था। इसीलिए यह सफल नहीं हो सका।
- **ब्रिटिश इंडियन एसोसियेशन (1851)**–इसकी स्थापना कलकत्ता में हुई। इसकी संस्थापक सदस्य देवेन्द्र नाथ टैगोर, राधाकान्त देव और राजेन्द्र लाल मित्र थे। यह राजनीतिक माँग करने वाली भारत की प्रथम संस्था है।
- **नोट**–राधाकान्त देव ने ब्रह्म समाज का विरोध किया था और ब्रह्म समाज के समकक्ष 1830 में कलकत्ता में धर्म सभा की स्थापना की था।
- **ईस्ट इंडिया एसोसियेशन (1866)**–इसकी स्थापना दादा भाई नौरोजी ने लंदन में किया था। इस संगठन के द्वारा भारतीय समस्याओं को इंग्लैंड के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया।
- दादा भाई नौरोजी को **भारत का वयोवृद्ध नेता** (ग्रांड–ओल्डमैन ऑफ–इण्डिया) कहा गया है। यह प्रथम भारतीय थे, जो 1892 में उदारवादी दल के टिकट पर ब्रिटिश संसद के लिए चुने गए थे। यह प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने धन निष्कासन का सिद्धान्त प्रस्तुत किया था। **पावर्टी–एण्ड–अनब्रिटिश–रूल–इन इंडिया** इनकी एकमात्र व्यक्ति थे जो आजादी के पहले कांग्रेस के तीन बार अध्यक्ष बने थे। इनका कथन है–''अनिष्ठो का अनिष्ठ'' (धन निष्कासन के संबंध में) दूसरा कथन–''पीठ पर मार लो भैया, लेकिन पेट पर नहीं।''
- **पूर्णा सार्वजनिक सभा (1867)**–इसकी स्थापना महादेव गोविन्द रानाडे ने किया था। इसका भी वही उद्देश्य था, जो उपरोक्त संगठनों का था।

- **इंडियन एसोसिएशन (1876)**–कांग्रेस के पहले यह सबसे महत्वपूर्ण संगठन था। इसकी स्थापना कलकत्ता में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी और आनन्द मोहन बोस ने किया था। यह एक मात्र ऐसे व्यक्ति थे जो कांग्रेस की स्थापना के समय वहाँ मौजूद नहीं थे।
- **मद्रास महाजन सभा (1884)**–दक्षिण भारत में आन्दोलन को संचालित करने वाला यह महत्वपूर्ण संगठन था। इसके संस्थापक आनंद चारलु , जी. सुब्रह्ममण्यम और एम. वी. राघवाचारी थे। इनलोगों ने दक्षिण भारत के क्षेत्र में राष्ट्रीय भावना को जगाने का प्रयास किया।
- **बम्बे प्रेसिडेंसी (1885)**–महाराष्ट्र के क्षेत्र में खसकर बम्बई में इस संगठन को स्थापित किया गया। इसके संस्थापक फिरोजशाह मेहता, बदरूद्दीन तैयब जी और के. टी. तैलंग ने किया था। कांगेस के ठीक पहले इसको स्थापित किया गया था। जब कांग्रेस का जन्म हुआ इस प्रकार के क्षेत्रीय संगठन का अस्तित्व समाप्त हो गया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

- कांग्रेस एक लैटिन अमेरिकी शब्द, है जिसका शाब्दिक अर्थ लोगों का समूह होता है। भारत में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जन्मदाता ए. ओ. ह्यूम हैं। कांग्रेस के जन्म के साथ ही राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रारम्भ माना जाता है।
- 28 दिसम्बर 1885 को बम्बई के गोकुल दास तेजपाल संस्कृत विद्यालय में कांग्रेस नामक संगठन को स्थापित किया गया। पहले पूणा का चुनाव किया गया था, लेकिन महामारी फैल जाने के कारण स्थान परिवर्तन कर बम्बई कर दिया गया।
- स्थापना के समय 72 व्यक्ति शामिल थे, जिसमें अधिकांशतः वकील थे इसीलिए कांग्रेस को वकीलों का संगठन कहा गया। कांग्रेस ने अपने स्थापना के समय 9 प्रस्ताव को पारित किया। इसके कांग्रेस का जन्म सुरक्षा नली या निकास नली (सेफ्टी वॉल्व) या अभय कपाट तड़ित चालक के रूप में हुआ था।
- **ए. ओ. ह्यूम**–ऐलन ओक्टोवियन ह्यूम स्कॉटलैंड के निवासी थे। यह भारत में सिविल सर्विसेज के पद पर नियुक्त थे। अवकाश प्राप्ती के बाद यह शिमला में रहने लगे। इन्हें शिमला का संत और कांग्रेस का जनक कहा जाता है। यह 1885 से लेकर 1907 तक आजीवन कांग्रेस के महामंत्री (महासचिव) के पद पर कायम रहे।
- यह ब्रह्म विद्या के समर्थक थे।
- बेडरबर्न ने इनकी जीवनी को लिखा है।

कांग्रेस के महत्वपूर्ण सम्मेलन :

- कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष W.C. Banerjee थे। यह अधिवेशन बम्बई में 1885 में हुआ था।
- कांग्रेस के प्रथम पारसी अध्यक्ष दादा भाई नौरोजी थे और यह सम्मेलन कलकत्ता 1886 में हुआ था।
- 1887 के मद्रास अधिवेशन में प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदरूद्दीन तैयब जी थे।
- 1888 के इलाहाबाद अधिवेशन में प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष जॉर्ज यूल को बनाया गया।
- 1886 के कलकत्ता अधिवेशन में पहली बार राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम् गाया गया। इसके अध्यक्ष रहीमतुल्ला सयानी थे।
- 1906 में कलकत्ता अधिवेशन में पहली बार स्वराज की माँग की गयी। इसके अध्यक्ष दादा भाई नौरोजी थे।
- 1907 के सूरत अधिवेशन में पहली बार कांग्रेस में विभाजन हुआ और इसके अध्यक्ष रास बिहारी घोष थे। गरम दल और नरम दल का जन्म हुआ।
- 1911 के कलकत्ता अधिवेशन में पहली बार कांग्रेस के मंच से रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित राष्ट्रगान को गाया गया। इसके अध्यक्ष वी. एन. धर थे।
- 1912 में बिहार में पहली बार पटना में बाँकीपुर में कांग्रेस का महाधिवेशन हुआ, जिसके अध्यक्ष आर. नारायण माघोलकर थे।
- 1916 के लखनऊ अधिवेशन में नरमदल और गरम दल के बीच मिलन हुआ। मुस्लिम लीग और कांग्रेस के बीच समझौता हुआ, जिसे लखनऊ समझौता कहा गया है। इस समझौता में लीग की साम्प्रदायिक बातों को मानकर कांग्रेस ने सबसे बड़ी भूल कर दी। इस सम्मेलन के अध्यक्ष ए. सी. मजूमदार (अंबिका चरण मजूमदार) थे।
- 1917 के कलकत्ता अधिवेशन में श्री मती एनी बिसेन्ट को अध्यक्ष बनाया गया। यह प्रथम महिला थी, जो कांग्रेस की अध्यक्ष बनी।
- 1918 में दिल्ली अधिवेशन मे बाल गंगाधर तिलका को अध्यक्ष बनाया गया था, लेकिन वेलेंटाइन शिरोल के केस में सिलसिले में तिलक इंग्लैंड चले गए तब मदन मोहन मालवीय को अध्यक्ष बनाया गया।
- 1919 के अमृतसर सम्मेलन में कांग्रेस का दूसरा सम्मेलन हुआ जिसके अध्यक्ष देशबंधु चितरंजन दास थें इनको देशबंधु की उपाधि गाँधी जी ने दी थी।
- 1924 के वेलगाँव अधिवेशन में गाँधीजी को अध्यक्ष बनाया गया था।
- 1925 में कानपुर अधिवेशन में सरोजनी नायडू को अध्यक्ष बनाया गया। यह प्रथम भारतीय महिला थी, जो कांग्रेस की अध्यक्ष थी। इनको ''भारत कोकीला'' कहा गया है।
- 1926 के अधिवेशन में सभी कांग्रेसियों को खादी का वस्त्र पहनना अनिवार्य कर दिया गया। इसके अध्यक्ष श्री निवास अयंगर थे।
- 1929 में लाहौर में कांग्रेस का ऐसिहासिक सम्मेलन हुआ था, जिसके अध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू थे। इसी सम्मेलन में सर्वप्रथम पूर्ण स्वराज

का लक्ष्य घोषित किया गया। इसी सम्मेलन में रावी नदी के तट पर नेहरू ने सर्वप्रथम तिरंगा फहराया था। इसी सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक 26 जनवरी को स्वतंत्रता मनाया जायेगा। इस प्रकार प्रथम स्वतंत्रता दिवस 26 जनवरी, 1930 को मनाया गया। सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाने का भी निर्णय लिया गया।

- 1931 में करॉंची अधिवेशन में पहली बार कांग्रेस के मंच से मूल अधिकार की मॉंग की गयी। असके अध्यक्ष सरदार वल्लभ भाई पटेल थे।
- 1933 कलकत्ता अधिवेशन में नलनीसेन गुप्ता को प्रथम कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया। यह आजादी के पहले अध्यक्ष बनने वाली तीसरी महिला थे, तथा भारतीय महिला के संदर्भ में यह दूसरी महिला थी।
- 1936 लखनऊ और 1937 फैजपुर (महाराष्ट्र) अधिवेशन में जवाहर लाल नेहरू को अध्यक्ष बनाया गया था। फैजपुर अधिवेशन एकमात्र ऐसा अधिवेशन है जो गॉंव में सम्पन्न हुआ था।
- 1938 हरिपुरा (गुजरात) अधिवेशन में कांग्रेस के अध्यक्ष सुभाष चन्द्र बोस को बनाया गया था।
- 1939 में त्रिपुरी में गॉंधी जी द्वारा समर्थित उम्मीदवार पट्टाभिसीतारमैया को सुभाष चन्द्र बोस ने हराया और अध्यक्ष बन गये, लेकिन बाद में इस्तीफा दे दिया। इस्तीफा दे देने के बाद डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया।
- 1940 में हजारीबाग के रामगढ़ में अधिवेशन हुआ। बिहार में यह तीसरा (वर्तमान में झारखंड का पहला) सम्मेलन था। इसके अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजाद को बनाया गया था। आजादी के पहले यह सबसे कम उम्र के अध्यक्ष थे। आजादी के पहले यह सबसे अधिक समय तक कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर (1940–45) रहे थे।
- आजादी के समय आचार्य जे.बी. कृपलानी अध्यक्ष थे।

विविध तथ्य :

- बंकिमचन्द्र चटर्जी का कथन–''कांग्रेस के लोग पद के भूखे हैं।''
- गॉंधीजी का कथन–''अब कांग्रेस नामक संगठन को समाप्त कर देना चाहिए।''
- लॉर्ड कर्जन का कथन–''कांग्रेस अब लड़खड़ा रही है और मैं इसे करते हुए देखना चाहता हूँ।
- कांग्रेस के स्थापना के समय लॉर्ड डफरिन वायसराय था।
- 1888 में सर सैय्यद अहमद खॉं ने सरकार के समर्थन से कांग्रेस के विरोध में एंग्लो–मुस्लिम–डिफेंस एसोसिएशन की स्थापना की।
- बदरूद्दीन तैय्यब जी ने कांग्रेस में भर्ती होने का अभियान चलाया था।
- लॉर्ड डफरिन ऐसा प्रथम वायसराय था, जो कांग्रेस के स्थापना के समय मौजूद था।
- 1889 में कांग्रेस ने ब्रिटिश समिति का गठन किया और इंडिया नामक पत्रिका का सम्पादन भी शुरू किया।
- अरबिन्द घोष का कथन– ''कांग्रेस अब क्षेय रोग से मरने वाली है।
- तिलक ने कॉंग्रेस अधिवेशन को चापलुसों का सम्मेलन कहा।
- लाला लाजपतराय ने शिक्षित भारतीयों का मेल कहा।
- लाला लाजपतराय ने कांग्रेस को डफरिन की दिमाग का उपज कहा।
- कर्जन ने कांग्रेस को देश द्रोहियों का संगठन कहा।
- 1891 में कांग्रेस का एक और नाम राष्ट्रीयता रख दिया गया।
- कांग्रेस का पूर्व नाम इंडियन नेशनल यूनियन (भारतीय राष्ट्रीय संघ) था।
- 1892 में कलकत्ता विश्वविद्यालय की प्रथम महिला स्नातक कादम्बिनी गांगुली ने सर्वप्रथम महिला प्रतिनिधि के रूप में कांग्रेस के मंच से संबोधित किया।
- 1911 कलकत्ता अधिवेशन मे ब्रिटेन के शासक जॉर्ज पंचम और उनकी पत्नी भी उपस्थित थे।

उग्रवादी काल (1905–1918)

- उदारवादी काल के बाद राष्ट्रीय आन्दोलन को संचालित करने का कार्य उग्रवादियों ने किया। यह लोग स्वभाव से और अपनी बातों से उग्र थे, इसीलिए इस काल को उग्रवादी काल की संज्ञा दी गयी। उग्रवादी के उदय के निम्नलिखित कारण माने गये हैं–
  (i) ब्रिटिश शासन की सही चरित्र का पहचान।
  (ii) भारतीयों में आत्म सम्मान और आत्मविश्वास का प्रचार प्रसार।
  (iii) प्रशिक्षित नेतृत्व।
  (iv) अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव।
  (v) बंगाल का विभाजन।
- **बंग–भंग विरोधी/स्वदेशी आन्दोलन (1905–1908)**–लॉर्ड कर्जन ने जब बंगाल का विभाजन किया। इसके विरोध में बंग–भंग विरोधी आन्दोलन या स्वदेशी प्रारम्भ हो गया। ब्रिटिश सरकार के अनुसार प्रशासनिक सुविधा के लिए यह विभाजन किया गया। राष्ट्रवादियों के अनुसार राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करने के लिए और हिन्दू मुस्लिम की एकता को तोड़ने के लिए यह विभाजन किया गया था।

- बंगाल विभाजन की घोषणा 19 जुलाई 1905 को की गयी।
- बंगाल विभाजन के विरोध में 7 अगस्त 1905 को यह आन्दोलन शुरू हुआ।
- बंगाल विभाजन को कानूनी रूप से 16 अक्टूबर 1905 को लागू किया गया।
- इसी दिन शोक दिवस मनाया गया। लोगों ने गंगा में स्नान किया और उपवास व्रत का पालन किया। हिन्दू और मुस्लिम ने एक–दूसरे के कलाईयों पर राखी बाँधकर एकता को प्रदर्शित किया। इसी समय रवीन्द्र नाथ टैगोर द्वारा रचित राष्ट्रगान सबसे लोकप्रिय हुआ। उनके द्वारा रचित अमार सोनार बांग्ला नामक गीत भी काफी लोकप्रिय हुआ, जो आगे चलकर 1971 में बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान बना।
- प्रारम्भ में इस आन्दोलन में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, पृथ्वीश चन्द्र राय और कृष्ण कुमार मित्र ने सहयोग दिया। इन लोगों ने बंगाली, हितवादी और संजीवनी नामक पत्रिका के माध्यम से इसका प्रचार प्रसार किया। यह आन्दोलन अधिक क्षेत्रों में विस्तृत हो गया। जैसे–

क्षेत्र	नेतृत्वकर्ता
दिल्ली	हैदर रजा
मद्रास	चिदंबरम पिल्लै
बम्बई एवं पूणा	बाल गंगाधर तिलक
पंजाब	लाला लाजपत राय, अजीत सिंह

- **स्वदेशी आन्दोलन**–इस आन्दोलन के तीन महत्वपूर्ण कार्यक्रम निर्धारित किया गया जैसे–(i) स्वदेशी (ii) राष्ट्रीय शिक्षा (iii) बहिष्कार।

इन तीनों कार्यक्रमों को लेकर आन्दोलन को संचालित किया गया, जिसमें लाल, बाल और पाल का नाम सबसे महत्वपूर्ण है। इन लोगों के बारे में संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–

बाल गंगाधर तिलक :

- यह महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिला के रहनेवाले थे। इन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। यह स्वदेशी आन्दोलन और होमरूल आन्दोलन के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। इन्हें महाराष्ट्र का बेताज बादशाह कहा जाता है। इन्होंने कोल्हापुर राज्य के विरूद्ध संघर्ष किया था। परिणामस्वरूप पहली बार कारावास की सजा दी गयी थी इन्होंने 1893 में गणपति उत्सव और 1895 में शिवाजी उत्सव को प्रारम्भ किया। इन्होंने अखाड़ा और लाठी क्लब की स्थापना की तथा युवाओं को अपनी तरफ आकर्षित किया।
- इन्होंने मराठा (अंग्रेजी भाषा में) और केसरी (मराठी भाषा में) नामक पत्रिका के माध्यम से अपनी बातों को रखने का प्रयास किया। इसी में शिवाजी और अफजल खाँ से संबंधित लेख छपने के कारण राजद्रोह का मुकदमा चलाकर 1897 में 18 माह की जेल की सजा दी गयी।
- दादा भाई नौरोजी इनके राजनीतिक गुरू थे।
- इन्होंने दो महत्वपूर्ण ग्रंथ **''गीता रहस्य''** और **''द आर्कटिक–होम–ऑफ वेदाज''** की रचना की है।
- इनको वेलेन्टाइन शिरोल ने भारतीय अशांति का जनक कहा है। 1908 ई. में पुनः राजद्रोह का मुकदमा चलाकर 6 साल की सजा देकर बर्मा के माण्डले जेल भेज दिया गया।
- इनका दो महत्वपूर्ण कथन–
  (i) ''स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है इसे हम लेकर रहेंगे।''
  (ii) ''साल में एक बार मेढ़क की तरह टर्राने से कुछ होने वाला नहीं है।''
- इनकी मृत्यु 1 अगस्त, 1920 को बंबई में हुआ।

लाला लाजपत राय :

- इनको शेर–ए–पंजाब कहा गया है। इन्होंने तिलक के साथ मिलकर स्वदेशी आन्दोलन और राष्ट्रीय आन्दोलन में मुख्य भूमिका निभाया। इन्होंने पंजाबी, द पीपुल और यंग इंडिया के माध्यम से अपने विचारों का प्रचार–प्रसार किया। इनकी महत्वपूर्ण पुस्तक का नाम **अनहैप्पी–इंडिया** है।
- अंग्रेजी सरकार ने अजीत सिंह के साथ इनको भी 1908 ई. में देश निकाला की सजा दे दी। कालांतर में 1908 में लाहौर में साइमन आयोग के विरोध के क्रम में लाठी प्रहार के कारण इनकी मृत्यु हो गयी। इनके मृत्यु पर गाँधी जी का कथन–''भारतीय राजनीतिक सौर मंडल का एक और सितारा डूब गया।'' लाला लाजपतराय का कथन–''मेरे ऊपर पड़े हुए लाठी का एक–एक प्रहार अंग्रेज सरकार के ताबूत में कील के समान होगा।''
- लाला लाजपतराय के हत्या का बदला भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद आदि ने मिलकर सांडर्स को गोली मारकर लिया।

विपिन चन्द्र पाल :

- यह भी स्वदेशी आन्दोलन के प्रमुख स्तम्भ थे। इन्होंनं प्रारम्भ में लाल और बाल के साथ मिलकर सरकार का विरोध किया। लेकिन 1908 में जब यह ब्रिटेन से लौटकर आये तब उनका विचार बदल गया था और इन्होंने राजनीति से सक्रिय रूप से संन्यास ले लिया।
- इस आन्दोलन में अरबिन्दो घोष ने भी सहयोग किया था। इन्होंने लाइफ–डिवाइन और सावित्री नामक पुस्तक के माध्यम से अपने विचार को प्रस्तुत किया, लेकिन अंत में (1908) राजनीति छोड़कर पाण्डीचेरी के ओरेविले नामक स्थान पर अपना सम्पूर्ण जीवन गुजार दिया। निष्क्रिस सिद्धांत का प्रतिपादन अरविन्द घोष ने अपनी पुस्तक वंदे मातरम् में किया।

- 'New Lamps For Old' लेख श्रृंखला अरविन्द घोष ने जारी किया था। फेडरेशन हॉल की स्थापना की। पी. सी. राय ने स्वदेश केमिकल स्टोर्स की स्थापना कलकत्ता में किया। इसी समय कलकत्ता **15 अगस्त 1906 को राष्ट्रीय शिक्षा परिषद्** का गठन किया गया, इसी समय कलकत्ता में राष्ट्रीय कॉलेज की स्थापना की गयी, जिसके प्रथम प्राचार्य अरबिन्दो घोष को बनाया गया। इस आन्दोलन में स्वदेश बांधव समिति ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। इसकी स्थापना अश्विनी कुमार दत्त ने किया था।
- **1911 में बंगाल विभाजन को रद्द किया गया** और 1912 में इसको लागू भी किया गया।

गाँधी–युग (1919–1948)

- आधुनिक भारत के इतिहास में उग्रवादी युग के बाद गाँधी युग प्रारम्भ हुआ। गाँधीजी के नेतृत्व में आन्दोलन को संचालित किया गया और देश स्वतंत्र हुआ इसीलिए इस काल को हम गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 में गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता का नाम करमचन्द गाँधी और माँ का नाम पुतली बाई था। प्रारम्भिक काल में इन्होंने पोरबन्दर और राजकोट में शिक्षा प्राप्त की। वेरिस्टर की डिग्री के लिए 1888 ई. में इंग्लैंड प्रस्थान कर गये और 1891 में डिग्री प्राप्त कर भारत वापस आ गये। इनके पिता राजकोट राज में दीवान के पद पर आसीन थे। इन्होंने राजकोट में अपना प्रैक्टीस शुरू किया लेकिन सफल नहीं हुए तब बम्बई का रूख कर लिया वहाँ भी असफलता हाथ लगी। इसी क्रम में 1893 में अब्दुला एण्ड कम्पनी का केस इनके पास आ गया जो दक्षिणी अफ्रीका से संबंधित था।

  गाँधी जी इस मुकदमे के लिए 1893 दक्षिण अफ्रीका प्रस्थान किये। नेटाल जाने के क्रम में गाँधी जी के साथ पीटर मारित्जबर्ग स्टेशन पर गाँधी जी के साथ अपमान जनक व्यवहार किया गया। और ट्रेन से उतार दिया गया। वर्तमान में इस स्टेशन का नाम गाँधी जी के नाम पर रख दिया गया।
- गाँधी जी जब दक्षिण अफ्रीका पहुँचे तो वहाँ पर भारतीयों की दयनीय दशा देखकर काफी दुखी हो गये। गिरमिटिया अर्थात् वैसे भारतीय जो मजदूर के रूप में से या रोजगार पाने के रूप दक्षिण अफ्रीका जाकर बस गये थे, लेकिन उनको किसी प्रकार का अधिकार नहीं मिला था। गाँधी जी ने इन लोगों की दशा सुधारने के लिए दक्षिण अफ्रीका में रहने का निश्चय किया और 1903 में इंडियन ओपिनियन नामक पत्रिका के माध्यम से अपनी बातों को सरकार के समक्ष रखने का प्रायस किया। 1904 में गाँधी जी ने नेटाल में ही फिनिक्स आश्रम भी स्थापित किया। गाँधी जी ने 1907 में अफ्रीका में ही सर्वप्रथम सत्याग्रह का प्रयोग किया। 1910 ई. में जोहान्सबर्ग में टॉल्सटाय फर्म की स्थापना की, जो वर्तमान में गाँधी आश्रम के रूप में विख्यात है।
- गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका से 1915 में भारत वापस आये और उन्होंने अहमदाबाद के समीप कोचरब नामक स्थान पर 1915 में ही एक आश्रम को स्थापित किया जो साबरमती आश्रम के रूप में विख्यात है। गाँधी जी भारत आने के बाद लगभग एक सालों तक भारत का भ्रमण किया और भारतीयों के बारे में जानकारी प्राप्त की। इसके बाद इन्होंने भारत में सफल आन्दोलन को संचालित किया, जिसका वर्णन निम्नलिखित है–
- **चम्पारण सत्याग्रह (1917) –** गाँधीजी के भारत आने के बाद यह प्रथम सफल आन्दोलन था। इस समय चम्पारण में एक बीघा जमीन पर तीन कट्ठे में नील की खेती करना अनवार्य था, जिसे **तीन–कठिया** पद्धति कहा गया है। नील की खेती करने पर किसानों को उचित मूल्य नहीं मिलता था। साथ ही भूमि की उर्वरा शक्ति भी कम हो रही थी। परिणामस्वरूप चम्पारण मोतीहारी के समीप मुरलीभरहवा नामक गाँव के रहनेवाले राज कुमार शुक्ल ने 1916 में लखनऊ के कांग्रेस अधिवेशन में गाँधीजी से मुलाकात की और चम्पारण आने का निमंत्रण दिया।
- गाँधी जी 1917 में पटना, मुजफ्फर होते हुए चम्पारण पहुँच गये। इस आन्दोलन में राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य जे. बी. कृपलानी, महादेव देसाई और बाबा नरहरि पारिख ने इस आन्दोलन में गाँधी जी का साथ दिया।
- अंग्रेंजी सरकार ने गाँधीजी को चम्पारण छोड़ने का आदेश जारी किया, जिसको मानने से गाँधीजी ने इंकार कर दिया। यह भारतीय इतिहास में पहली बार हुआ था जब किसी व्यक्ति ने अहिंसा का और सत्याग्रह ने चम्पारण किसान आयोग का गठन किया, जिसमें गाँधीजी को भी शामिल किया गया और इस रिपोर्ट के आधार पर नील की खेती बंद करने का आदेश जारी हुआ।
- इस प्रकार भारत में गाँधी जी के द्वारा किया गया प्रथम आन्दोलन चम्पारण सत्याग्रह पूर्ण रूप से सफल रहा और इसी सफलता पर रवीन्द्र नाथ टैगोर ने गाँधीजी को **महात्मा** की उपाधि प्रदान की।

अहमदाबाद मिल आन्दोलन (1918) :

- चम्पारण सत्याग्रह की सफलता के बाद गाँधीजी और लोकप्रिय हो गये परिणामस्वरूप अहमदाबाद के मिल मजदूरों ने इनको आमंत्रित किया। इस समय अहमदाबाद में प्लेग फैल गया था, जिसके चलते मिल मजदूर वहाँ से पलायन कर रहे थे। तब मिल मालिकों ने इन मजदूरों को रोकने के लिए 50 प्रतिशत बोनस का घोषणा कर दिया, लेकिन प्लेग समाप्त होने के बाद इस बोनस को वापस ले लिया। इसी बोनस को लेकर के मिल मजदूरों ने आन्दोलन कर दिया।
- **गाँधीजी ने अहमदाबाद में ही सर्वप्रथम भूख हड़ताल किया था।** गाँधीजी ने 1918 में अहमदाबाद लेबर टेक्सटाईल एसोसियेशन की स्थापना भी किया। गाँधी जी के समझौता नीति के कारण मिल मालिक 35 प्रतिशत बोनस देने के लिए मान गये। इस प्रकार यह आन्दोलन भी सफल रहा।

खेड़ा आन्दोलन (1918) :

- गुजरात में ही खेड़ा नामक स्थान पर किसानों ने आन्दोलन किया। इस समय किसानों को अकाल का सामना करना पड़ा था। परिणामस्वरूप वह लगान देने की स्थिति में नहीं थे। जब जबरदस्ती लगान लेने का बात सामने आया। तब इन किसानों ने आन्दोलन कर दिया। इस आन्दोलन में गुजरात किसान सभा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। गाँधीजी ने आमंत्रण को स्वीकार करते हुए इस आन्दोलन का नेतृत्व किया और दोनों पक्षों में समझौता हो गया। निष्कर्ष के रूप में यह बात निकलकर सामने आया जो किसाना कर देने लायक है वह कर को अदा कर दे और देने लायक स्थिति में नहीं हैं, उनके कर को माफ कर दिया जाये।
- इस प्रकार एक के बाद एक तीन सफल आन्दोलन के संचालन के बाद गाँधीजी भारतीय राजनीति का नायक बन गये।
- गाँधीजी 1915 में भारत लौटकर आये इस समय प्रथम विश्व युद्ध प्रारम्भ हो गया था। तब गाँधी जी ने भारतीयों को सरकार ने इनको **कैसर–ए–हिन्द** की उपाधि से सम्मानित किया। लेकिन गाँधी जी के विरोधियों ने इनको भर्ती करने वाला सार्जेन्ट कहा।
- 1919 में रॉलेट एक्ट और जालियाँवाला बाग हत्याकांड ने गाँधी जी के जीवन को बदल दिया और यह पूर्ण रूप से या सक्रिय रूप से राजनीति में 1919 में प्रवेश कर गये और यहीं से गाँधी युग की शुरूआत हुई।
- 1919 में खिलाफत आन्दोलन और 1920 में असहयोग आन्दोलन को संचालित करने का श्रेय दिया गया हैं 1922 में चौरी–चौरा कांड के बाद इन्होंने आन्दोलन को स्थगित किया। परिणामस्वरूप इनको गिरफ्तार किया गया, लेकिन स्वास्थ्य लाभ के आधार पर 1924 में रिहा किया गया। 1925 में इन्होंने चरखा संघ की स्थापना की।
- 1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन को प्रारम्भ किया गया। 1931 में गाँधी इरविन समझौता हुआ और गाँधी जी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए लंदन चले गये। 1934 में गाँधी जी राजनीति से अलग हो गये पुनः 1939 में सक्रिय हुए। 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन और 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन को संचालित किया। 30 जनवरी, 1948 को दिल्ली में प्रार्थना सभा के समय नाथूराम गोडसे ने इनकी हत्या कर दी।

गाँधीजी से संबंधित उपाधि :

- रवीन्द्र नाथ टैगोर इनको महात्मा की उपाधि दिया। (चम्पारण सत्याग्रह के समय)
- ब्रिटिश सरकार इनको कैसर–ए–हिन्द की उपाधि दिया था। (प्रथम विश्व युद्ध)
- रामधारी सिंह दिनकर ने इनको सर्वोदय का अग्रदूत कहा।
- सुभाषचन्द्र बोस ने 1944 में इनको राष्ट्रपिता कहकर संबोधित किया।
- चाचा नेहरू ने इनको बापू कहकर संबोधति किया।
- खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने इनको मलंग बाबा कहा है।
- ब्रिटेन के प्रधान मंत्री चर्चिल ने इनको **अर्द्धनंगा फकीर** कहा है।
- लॉर्ड माउण्टबेटन ने इनको वन मैन बाउण्ड्री फोर्स कहा है।
- आइन्सटीन महोदय का कथन–''हमारी अगामी पीढ़ी शायद ही यह विश्वास करे कि रक्त मांस का ऐसा व्यक्ति भारत में जन्म लिया था।''
- गाँधी जी के विरोधियों ने इनको भर्ती करने वाला सार्जेन्ट कहा है।
- गाँधीजी ने रवीन्द्रनाथ टैगोर को गुरू की उपाधि से सम्मानित किया था।
- गाँधीजी मुहम्मद अली जिन्ना को पहली बार कायदे आजम (महान नेता) कहा।
- गोपाल कृष्ण गोखले ने इनको 'कान्सांइस कीपर' कहा था।
- सरोजनी नायडू ने गाँधी और इरविन को दो महात्मा कहा था।
- गाँधीजी ने मदन मोहन मालवीय को महामना की उपाधि दिया था।
- गाँधी जी ने चितरंजन दास को देशबंधु की उपाधि से सम्मानित किया।

गाँधीजी का कथन या वचन या नारा :

- एक वर्ष में स्वराज (असहयोग आन्दोलन के समय)
- स्वराज्य के गंध से मेरे नूथने फटने लगे हैं। (असहयोग आन्दोलन के समय)
- शैतानी सरकार (रॉलेट एक्ट पारित होने पर)
- ऐसा अवसर अगले 100 वर्षों तक नहीं आयेगा। (खिलाफत आन्दोलन के समय)
- ''गाँधी मर सकता है, लेकिन गाँधीवाद नहीं'' (1931 अधिवेशन कराची)।
- ''या तो ये स्वतंत्रता प्राप्त करूँगा या अपने प्राणो को त्याग करूँगा'' (सविनय अवज्ञा)।
- क्रिप्स प्रस्ताव के संबंध में गाँधी जी का कथन–''यह एक आंदोलन ऐसा चेक है जिसका बैंक दिवालिया होने वाला है।'' (Post dated cheque).
- मैं एक मुट्ठी बालू से कांग्रेस से भी बड़ा संगठन खड़ा कर सकता हूँ। (भारत छोड़ो आन्दोलन के समय)
- करो या मरो (भारत छोड़ो आन्दोलन के समय)
- हे राम !
- ''यह मेरी हिमालय जैसी महान भूल था'' (चौरी चौरा काण्ड होने पर)

- **गाँधी जी की पुस्तक :** 1. My Experiment with truth (सत्य पर मेरा प्रयोग) 2. हिन्द स्वराज, 3. सर्वोदय, 4. गीता माँ, 5. सत्याग्रह, 6. नैतिक धर्म
- **पत्र–पत्रिका :** इंडियन ओपिनियन, हरिजन, हरिजन बंधु, यंग–इंडिया, नवीजन।
- गाँधी जी के व्यक्तिगत पर तीन महत्वपूर्ण व्यक्तियों का प्रभाव दिखलाई पड़ती है।–

1. **जॉन रस्किन**–इनके पुस्तक अन्तोदय से गाँधीजी काफी प्रभावित थे और उनके प्रभाव में आकर जन कल्याण का मार्ग अपनाया। इनकी पुस्तक अन्त्योदय (= Un-to this last.)
2. **टाल्स्टॉय**–सबसे अधिक प्रभावित गाँधीजी इन्हीं से थे। इनकी पुस्तक तुम्हारे हृदय में ईश्वर का राज है। (The Kingdom of God with in you.)
   - इनसे प्रभावित होकर गाँधीजी ने अहिंसा को अपनाया।
3. **डेविड थ्योरो**–गाँधीजी इनके विचार से प्रभावित होकर सत्याग्रह को अपनाया। इनकी पुस्तक सविनय अवज्ञा है।

विविध :

- गाँधीजी का आर्थिक सिद्धांत न्यासधारिता (ट्रस्टीशीप) सिद्धांत कहलाता है।
- सर्वोदय शब्द का प्रयोग सर्व प्रथम गाँधी जी ने किया था।
- गाँधीजी का प्रमुख हथियार – (i) सत्य, (ii) अहिंसा।
- गाँधीजी ने खादी वस्त्र को आर्थिक स्वतंत्रता का प्रतीक माना।
- गाँधीजी सबसे ज्यादा प्रभावित भागवत गीता से थे, जिसको अपनी माँ मानते थे। भजन में नरस की भजन 'वैष्णोजन तैण...' से सबसे अधिक प्रभावित थे।
- गाँधीजी की आत्मकथा माई'–एक्सपेरिमेंट–विथ–ट्रूथ सर्वप्रथम गुजराती भाषा में लिखा गया था।
- हिन्द स्वराज की रचना गाँधीजी ने 1909 में की थी।

असहयोग आन्दोलन (1920 - 1922)

- गाँधीजी के नेतृत्व में पहली बार व्यापक स्तर पर असहयोग आंदोलन को संचालित किया गया। यह आंदोलन पूर्व के सभी आन्दोलनों से व्यापक आन्दोलन था। इस आन्दोलन के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं–
- **रॉलेट एक्ट (1919) –** भारत में क्रांतिकारी आन्दोलन और राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचलने के लिए इस अधिनियम को लागू किया गया।
- सर सिडनी रॉलेट के अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया गया और इसने जो रिपोर्ट प्रस्तुत किया उसके आधार पर किसी भी व्यक्ति को संदेह के आधार पर गिरफ्तार किया जा सकता है। उस पर मुकदमा चलाकर असीमित समय तक जेल में रखा जा सकता था, लेकिन अंग्रेज, एंग्लो–इंडियन और अंग्रेज समर्थक इस अधिनियम के परिधि से बाहर थे। इस अधिनियम को काला कानून/आतंकवादी अपराध अधिनियम भी कहा जाता है। इस अधिनियम को ''बिना अपील, बिना वकील और बिना दलील का कानून'' भी कहा जाता है।
- गाँधी जी ने इस अधिनियम के विरोध में ही अंग्रेजी सरकार को शैतानी सरकार कहकर संबोधित किया है।
- **जलियाँवाला बाग हत्याकांड (1919)**–पंजाब के अमृतसर में जालियाँवाला बाग मैदान में घटना को 13 अप्रैल 1919 को अंजाम दिया गया।
- पंजाब आने के क्रम में गाँधीजी को रोक दिया गया। परिणामस्वरूप अमृतसर में शांतिपूर्वक प्रदर्शन का आयोजन किया गया। लेकिन अंग्रेजी सेना के साथ झड़प में संघर्ष में दो व्यक्तियों की हत्या हो गयी। बदले में कार्यवाही में पाँच अंग्रेजों को मार दिया गया। साथ ही डॉ. सतपाल और डॉ. सैफुद्दीन किचूल को गिरफ्तार कर लिया गया। इनके गिरफ्तारी के विरोध में जलियाँवाला बाग में शांतिपूर्वक सभा का आयोजन किया जा रहा था। इस समय पंजाब का उपराज्यपाल माइकल–ओ–डायर था, जिसने सैन्य अधिकारी माइकल आर. डायर को जालियाँवाला बाग में गाली चलाने का आदेश दिया। इस प्रकार आर. डायर के द्वारा इस बर्बर हत्याकांड को अंजाम दिया गया, जिसमें हजारो लोग मृत्यु को प्राप्त हो गय। लेकिन सरकार के अनुसार मात्र 379 लोग ही मृत्यु को प्राप्त हुए।
- उपरोक्त दो घटनाओं से क्षुब्ध होकर गाँधीजी सक्रिय रूप से राजनीति में आ गये। अंग्रेजी सरकार के इस हत्याकांड के जाँच के लिए लॉर्ड हन्टर की अध्यक्षता में आयोग का गठन किया। कांग्रेस ने भी मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व में एक आयोग का गठन किया, जिसमें महात्मा गाँधी और मोतीलाल नेहरू भी शामिल किये गये। इस हत्याकांड के विरोध में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने सर या नाईटहूड की उपाधि वापस कर दी। अंग्रेजी सरकार की कार्यकारिणी परिषद के सदस्य लॉर्ड शंकरन ने अपने सदस्यता की पद को त्याग दिया।
- **खिलाफत आन्दोलन (1919) –** प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की के खलीफा के साथ किसी भी प्रकार के भेदभाव नहीं करने का वादा करके अंग्रेजों ने भारतीय मुस्लिमों का समर्थन प्राप्त कर लिया, लेकिन युद्ध में विजयी होने के बाद जैसा अन्य पराजित राष्ट्रों के साथ व्यवहार किया गया वैसा ही व्यवहार तुर्की के साथ भी किया गया। परिणामस्वरूप मुस्लिमों ने खिलाफत आन्दोलन को प्रारम्भ कर दिया।
- 1919 में अखिल भारतीय खिलाफत कमिटी का गठन दिल्ली में किया गया और इसके अध्यक्ष महात्मा गाँधी को बनाया गया। मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने अपने पत्रिका अलहिलाल के माध्यम से इसका प्रचार प्रसार किया। कालान्तर में यह आन्दोलन असहयोग आन्दोलन में शामिल हो गया तथा 1924 में आधुनिक तुर्की का जन्मदाता मुस्तफा कमाल पाशा ने जब खलीफा का पद समाप्त किया, यह आन्दोलन 1924 में पूर्ण रूप से स्वतः ही समाप्त हो गया।

- **प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव**–प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारत आर्थिक संकट से जूझ रहा था। महँगाई, बेरोजगारी और खाद्य वस्तुओं की कमी ने आम जनता को एक और आन्दोलन के प्रति प्रेरित कर दिया। इस प्रकार असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हो गया।
- **कार्यक्रम**–इस आन्दोलन के दो कार्यक्रम निर्धारित किये गये–
  (1) रचनात्मक (2) नकारात्मक

रचनात्मक कार्यक्रम :
इस कार्यक्रम के अंतर्गत निम्नलिखित बातों को शामिल किया गया।
जैसे–

- इसके अंतर्गत 1 करोड़ रूपया को इकट्ठा करना।
- इसके अंतर्गत तिलक स्वराज्य कोष की स्थापना करना।
- एक करोड़ लोगों को कांग्रेस को सदस्य बनाना।
- सदस्यता शुल्क 1 रूपया से घटाकर 25 पैसा कर देना।
- स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना।

नकारात्क कार्यक्रम
इसके अंतर्गत निम्नलिखित बातों को शामिल किया गया–

- विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार।
- सरकारी कार्यालय और न्यायालय का बहिष्कार।
- महिलाओं के द्वारा मदिरा के दुकानों पर और विदेशी वस्तु बेचने वालों की दुकानों पर शांतिपूर्वक धरना देना एवं लोगों से इसका बहिष्कार करने का अनुरोध करना।

प्रारम्भ एवं विकास :

- यह आन्दोलन 1 अगस्त, 1920 को प्रारम्भ हुआ, लेकिन इसी दिन शोक सभा का आयोजन किया गया और तिलक दिवस मनाया गया। इस समय गाँधी जी ने **कैसर–ए–हिन्द** की उपाधि, जमना लाल बजाज ने राय बहादुर की उपाधि सरकार को वापस किया। डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हा जो बिहार और उड़ीसा के उप राज्यपाल थे अपने पद से इस्तीफा दे दिया। जय प्रकाश नारायण ने पटना कॉलेज छोड़ दिया और आन्दोलन में शामिल हो गए। हय आन्दोलन धीरे–धीरे विभिन्न क्षेत्रों में फैल गया जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश, गुजरात, असम की सुरमा घाटी और दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्र मे अधिक प्रचलित हुआ।
- इस समय मुहम्मद अली जिन्ना, श्री मती एनी बेसेन्ट और विपिन चन्द्र पाल जैसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने कांग्रेस का साथ छोड़ दिया।
- इसी समय प्रिंस ऑफ वेल्स का भारत आगमन हुआ, जिसका चारो तरफ विरोध किया गया।
- इस समय तिलक स्वराज फंड में कुछ ही मिनटों में एक करोड़ रूपये जमा हो गये। इसी समय बिहार विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ और जामिया–मिलिया–इस्लामिया विश्वविद्यालयय की स्थापना की गयी।
- पटना में राष्ट्रीय कॉलेज की स्थापना इसी समय हुआ, और इसके प्रथम प्राचार्य डा. राजेन्द्र प्रसाद को बनाया गया। मजहरूल हक जैसे महत्वपूर्ण व्यक्ति ने अपेन दोस्त खैरू मियाँ द्वारा दान में दी गयी जमीन पर सदाकत आश्रम की स्थापना की। जिस प्रकार होमरूल आन्दोलन में बिहार के नेता महहयल हक थे उसी प्रकार असहयोग आन्दोलन में बिहार के नेता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे। छपरा में राहुल सांकृत्यायान ने आंदोलन का नेतृत्व किया था।
- इस आन्दोलन के क्रम में उत्तर प्रदेश के चौरी–चौरा नामक स्थान पर **5 फरवरी 1922** को में 22 पुलिसकर्मियों को जिंदा ही जलाकर मार डाला गया। तब गाँधी जी इस हिंसा से नाराज हो गये और **12 फरवरी, 1922** को असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया। जब यह आन्दोलन स्थगित हुआ उस समय बड़े–बड़े कांग्रेसी नेताओं ने गाँधी जी की आलोचना की। गाँधी जी को हिंसा भड़काने के आरोप में गिरफ्तार कर 6 साल की सजा दी गयी। लेकिन स्वास्थ्य लाभ के आधार पर इनको 1924 में ही रिहा कर दिया गया। आन्दोलन स्थगित होने पर सुभाषचन्द्र बोस का कथन–''जब जनता का उत्साह चरम सीमा पर था, तब वापस लौटने का आदेश देना राष्ट्रीय दुर्भाग्य से कम नहीं था।'' इसी संदर्भ में मोतीलाल नेहय का कथन, ''जब कन्याकुमारी के एक गाँव ने अहिंसा का पालन नहीं किया, तब हिमालय के एक दूसरे गाँव को दंडित करना कहाँ तक उचित था।''
- सरकार के दमन चक्र और हिंसा के वजह से यह आन्दोलन भले ही असफल हो गया, लेकिन इसी आन्दोलन ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन का मार्ग प्रसस्त कर दिया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन

- असहयोग आन्दोलन की समाप्ति में ही इस आन्दोलन का मार्ग प्रशस्त कर दिया था। सविनय अवज्ञा आन्दोलन गाँधीजी के नेतृत्व में अबतक के आन्दोलन में सबसे महत्वपूर्ण आन्दोलन था, जिसका कारण निम्नलिखित है –

1. स्वराज दल की विफलता (1923) :

- इसे कांग्रेस स्वराज दल भी कहा जाता है। गाँधी जी ने जब असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया और रचनात्मक कार्यक्रम पर जोर दिया उसी क्रम में चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू ने इस दल की स्थापना 1923 में किया।
- इस दल का प्रमुख उद्देश्य चुनाव में शामिल होकर चुनाव को जीतकर विधानमंडल में प्रवेश कर सरकार के कार्यों में रूकावट डालना था। इसमें यह दल प्रारम्भ में सफल भी रहा।
- इस दल ने विट्ठल भाई पटेल को विधान मंडल का अध्यक्ष बनाया। यह विधान मंडल के अध्यक्ष बनने वाले प्रथम भारतीय थे। अचानक 1925 में चितरंजन दास की मृत्यु हो गयी, जो इस दल के अध्यक्ष थे। इस दल के सचिव मोतीलाल नेहरू की नेतृत्व में अगला चुनाव लड़ा गया, लेकिन परिणाम काफी खराब रहा। कालान्तर में यह दल महत्वहीन हो गया।

2. साइमन आयोग की विफलता (1928) :

- 1919 के अधिनियम के अंतर्गत द्वैध शासन की समीक्षा के लिए दस वर्ष के बाद आयोग का गठन होना था, लेकिन परिस्थितिवश 1927 में लंदन मं इस आयोग का गठन किया गया, जिसमें 6 अंग्रेज सदस्य थे। यह दल 1928 में बम्बई पहुँचा।
- भारत में इस आयोग का सभी जगह विरोध किया गया, क्योंकि इसमें किसी भी भारतीय व्यक्ति को सदस्य नहीं बनाया गया था। इस आयोग ने भारत के संदर्भ में जो रिपोर्ट पेश किया उसे कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने मानने से इंकार कर दिया।
- **नेहरू रिपोर्ट की विफलता (1928)**–लॉर्ड बेरिकेन हेड की चुनौती को भारतीय नेताओं ने स्वीकार किया और संविधान निर्माण करने का संकल्प लिया। मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में सर्वदलीय सम्मेलन को बुलाया गया और नेहरू की अध्यक्षता में संविधान निर्माण की प्रक्रिया आरम्भ हुआ। इन्होंने जो रिपोर्ट प्रस्तुत किया उसे ही नेहरू रिपोर्ट कहते हैं। इस रिपोर्ट में स्वायत शासन को प्रथम लक्ष्य और पूर्ण स्वराज को दूसरा लक्ष्य घोषित किया गया। परिणामस्वरूप सभी कांग्रेसी नाराज हो गये और इस रिपोट्र को मनाने से इंकार कर दिया।
- **लाहौर अधिवेशन (1929)** – रावी नदी के तट पर कांग्रेस का यह ऐतिहासिक अधिवेशन हुआ था, जिसके अध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू थे। इसी अधिवेशन में पूर्ण स्वराज का लक्ष्य घोषित किया गया और जवाहरलाल नेहरू ने कांग्रेस मंच से तिरंगा फहराया।
- इसी अधिवेशन में प्रत्येक 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस मनाने का शपथ लिया गया। इस प्रकार 26 जनवरी 1930 को प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। इस अधिवेशन में वन्दे मातरम्, इन्कलाब जिंदाबाद और पूर्ण स्वराज का नारा भी दिया गया था।
- **गाँधीजी की 11 सूत्री माँग (1930)** – यह इस आन्दोलन का तात्कालिक कारण था। गाँधी जी ने 11 सूत्री माँग अंग्रेजी सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया ठीक उसी प्रकार मुहम्मद अली जिन्ना ने 1929 में 14 सूत्री माँग प्रस्तुत की थी।
- इसके अंतर्गत नमक कर की समाप्ति, आयात शुल्क को लागू करना, सैन्य क्षेत्र के खर्चों में 50 प्रतिशत की कटौती, राजनैतिक बंदियों की बिना शर्त रिहाई, मदिरा पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध और अन्य सरकारी खर्च में कटौती आदि मुख्य बातों को शामिल किया गया।
- सरकार ने गाँधी जी की माँग पर जब सरकार ने ध्यान दिया तब पुनः एक और आन्दोलन को प्रारम्भ किया। गाँधीजी का कथन–''मैंने रोटी माँगा था, बदले में मुझे पत्थर मिला।''
- **प्रारम्भ और विकास** – गाँधीजी के 11 सूत्री माँग पर जब सरकार ने ध्यान नहीं दिया तब इस आन्दोलन को प्रारम्भ किया गया। **12 मार्च, 1930** को गाँधी जी अपने 78 अनुयायी के साथ साबरमती से दांडी के लिए रवाना हुए। दांडी नौसारी जिला में अवस्थित है। **6 अप्रैल, 1930** को दांडी पहुँचकर गाँधीजी ने नमक कानून का उल्लंघन किया और सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ हो गया।

  इस आन्दोलन के क्रम में गाँधीजी के साथी विष्णु दिगम्बर पलुस्कर ने गाँधीजी के साथ रघुपति राघव राजा राम.....गीता को इन्होंने गाया था।

  यह आन्दोलन गुजरात से शुरू हुआ सम्पूर्ण क्षेत्र में फैल गया। तमिलनाडु में सी. राजगोपालाचारी ने त्रिचिनापल्ली से वेदारण्यम् तक की यात्रा की। मालाबार के क्षेत्र में वायकूम सत्याग्रह के नेता के. केलप्पन ने आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया।

  पश्चिमोत्तर भारत में खान अब्दुल गफ्फार खान (सीमान्त गाँधी) ने खुदाई खिदमतगार (लाल कुर्ती दल) का गठन कर इस आन्दोलन में गाँधीजी का साथ दिया। इस दल पर गढ़वाल रेजीमेंट ने गोली चलाने से इंकार करते हुए देशभक्ति का मिसाल कायम किया।

  महाराष्ट्र, कर्नाटक और मध्य प्रांत में वन नियम का उल्लंघन करते हुए गाँधीजी का साथ दिया गया। नागालैंउ की 13 वर्षीय लड़की गिडालू ने भी स्वयं को आन्दोलन में समर्पित कर दिया। आजादी के समय जेल से छूटने पर जवाहरलाल नेहरू ने इनको रानी की उपाधि से सम्मनित किया। उत्तर प्रदेश में लोगों ने कर नहीं देने का आन्दोलन चलाया। बिहार में चौकीदारी कर नहीं देने का आन्दोलन चलाया गया।
- बिहार में भागलपुर, सारण और मुजफ्फरपुर अधिक सक्रिय था। सारण में नमकीन मिट्टी से नमक बनाकर इस आन्दोलन में लोगों ने साथ दिया। भागलपुर के बिहपुर स्थान को मुख्यालय घोषित किया गया था। बिहार में इस आन्दोलन के नेता राजेन्द्र प्रसाद थे। छपरा जेल के कैदियों ने विदेशी वस्त्र पहनने से इंकार कर दिया और नग्न रहने का शपथ लिया, जिसे इतिहास में नंगा हड़ताल कहा गया।
- इस आन्दोलन में महिलाओं ने सबसे अधिक भूमिका निभाया इसलिए मुक्तिदायी आन्झोलन कहा गया। लड़कों की बानर सेना और लड़कियों के माजेरी सेना और प्रभात फेरियों केक माध्यम से आन्दोलन में क्रम उम्र लोगों ने भी साथ दिया।

- धरसना (गुजरात) और सैनिकट्टा (महाराष्ट्र) दो प्रमुख स्थल ऐसे थे, जहाँ पर सबसे अधिक नमक बनाया जाता था। धरसणा में सरोजनी नायडू ने नेतृत्व प्रदान किया था। यहाँ के दृश्य को देखकर अमेरिका का पत्रकार मिलर का कथन–''मैंने अपने पत्रकारिता के काल में ऐसा भयावह दृश्य कभी नहीं देखा था।'' गाँधी की गिरफ्तारी के बाद अब्बास तैयब जी ने नेतृत्व किया था।
- गाँधीजी का कथन–''मैं स्वतंत्रता प्राप्त करूँगा या अपने प्राण त्याग दूँगा और जब तक स्वतंत्रता नहीं मिलेगी आश्रम लौटकर नहीं आऊँगा।''
- अंग्रेजी सरकार के दमन चक्र प्रारम्भ हो गया तब तेज बहादुर सप्रु और एम. आर. जयकर ने मिलकर गाँधी और इरविन के बीच समझौता कराया। 5 मार्च , 1931 को गाँधी और इरविन के बीच समझौता हुआ और इस आन्दोलन को स्थगित कर दिया गया।

गोलमेज सम्मेलन (1930–1932)

- **प्रथम गोलमेज सम्मेलन (1930)** – राष्ट्रीय आन्दोलन के विस्तार के कारण ब्रिटिश सरकार परेशानियों से घिर गयी थी। परिणामस्वरूप 1930 में प्रथम गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में कांग्रेस के प्रतिनिधि ने भाग नहीं लिया। अतः ब्रिटिश सरकार ने इस सम्मेलन को विफल घोषित कर दिया। इसका उद्घाटन ब्रिटेन के शासक जार्ज पंचम ने किया। अध्यक्ष प्रधानमंत्री रैम्जे मैक्डोनाल्ड थे।
- **द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1931)** – गाँधी इरविन समझौता के बाद इस सम्मेलन का आयोजन लंदन में जेम्स पैलेस में किया गया था। कांग्रेस के तरफ से गाँधीजी ने इस सम्मेलन में भाग लिया। ब्रिटेन जाने के क्रम में गाँधीजी को राजपूताना नामक जहाज का प्रयोग किया गया। श्रीमती ऐनी विसेंट और मदन मोहन मालवीय व्यक्तिगत रूरूप में शामिल हुए थे। ऐनी विसेंट ने भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व किया।
- मुहम्मद अली जिन्ना के तरफ से साम्प्रदायिकता के आधार पर सहमति नहीं बनने के कारण ब्रिटिश सरकार ने इस सम्मेलन को भी असफल घोषित कर दिया।
- गाँधीजी ब्रिटेन से खाली हाथ वापस आये थे। और उन्होंने पुनः सविनय अवज्ञा आन्दोलन को प्रारम्भ कर दिया, लेकिन समाजवादी और मार्क्सवादी के प्रभाव के चलते वैसा समर्थन गाँधीजी को नहीं मिला जैसा पूर्व में मिल चुका था। इस प्रकार गाँधीजी ने 1934 में इस आन्दोलन को समाप्त घोषित किया और कांग्रेस की सदस्यता से इस्तीफा देकर कुछ समय के लिए राजनीति से अलग हो गये। यह आन्दोलन भले ही असफल रहा लेकिन पहली बार एक विशाल जन समर्थन महिलाओं का प्राप्त हुआ और ब्रिटिश सरकार ने बहुत सारी माँग को माना लिया।
- **तृतीय गोलमेज सम्मेलन (1932)** – इस सम्मेलन का आयोजन भी जेम्स पैलेस में ही किया गया था। लेकिन इस सम्मेलन का परिणाम भी प्रथम गोलमेज के समान ही हुआ।

साम्प्रदायिक अधिनियम/कम्युनल अवार्ड (1932) :

- 1932 इस समय ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड थे, जिन्होंने अगस्त 1932 में साम्प्रदायिक अधिनिर्णय की घोषणा की। इसको मैकडोनाल्ड अधिनियम के नाम से ही हम जानते हैं। इस पंचाट के द्वारा दलित वर्ग को हिन्दुओं से अलग करने की कोशिश की गयी थी। गाँधीजी ने पूना के यरवदा जेल में आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया। मदन मोहन मालवीय, सी. राजगोपालाचारी के सहयोग से गाँधी और अम्बेडकर के बीच समझौता 1932 में हुआ, जिसे पूना समझौता के नाम से जानते हैं। इस समझौता के ताहत सीटों की संख्या 71 से बढ़कर 147 कर दी गयी। इस समय गाँधीजी ने अछूतों के लिए हरिजन शब्द का प्रयोग किया और हरिजन नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। साथ ही अखिल भारतीय हरिजन संघ की स्थापना गाँधीजी ने किया। जनजातियों की सर्वप्रथम आदिवासी की संज्ञा ठक्कर बाबा ने दी थी। गाँधीजी ने आदिवासियों को गिरिजन कह कर संबोधित किया था।
- **1937 का चुनाव** – 1935 के अधिनियम के आधार पर 1937 में 11 प्रांतों में चुनाव सम्पन्न हुआ। जिसमें 7 राज्यों में कांग्रेस को पूर्ण बहुमत मिला। दो राज्यों में सबसे बड़े दल के रूप में आये। केवल 2 राज्यों में कांग्रेस की सरकार नहीं बनी। बंगाल में मुस्लिम लीग ने मिली–जुली सरकार बनायी और पंजाब में यूनियनिष्ट पार्टी और कृषक प्रजा दल के साथ मिलीजुली सरकार बनाया।
- 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ होने पर वायसराय लिगलिथगो ने सभी भारतीयों को युद्ध में शामिल कर दिया और मंत्रिमंडल का सलाह भी नहीं लिया, जिसके चलते कांग्रेस मंत्रिमंडल ने इस्तीफा दे दिया। इसके उपलक्ष्य में 22 दिसम्बर 1939 को मुक्ति मुस्लिम लीग ने दिवस मनाया।

भारत छोड़ो आन्दोलन (1942)

- सविनय अवज्ञा आन्दोलन में इस आन्दोलन का मार्ग निश्चित रूप से तैयार किया था, क्योंकि कुछ समय के अन्तराल के बाद गाँधीजी पुनः राजनीति में सक्रिय हो गये और उन्होंने ही इस आन्दोलन को शुरू किया जिसका कारण निम्नलिखित है–
- **अगस्त प्रस्ताव (1940)** – वायसराय लिनलिथगो ने 1940 में सर्वदलीय सम्मेलन बुलाया और विचार–विमर्श के बाद जो प्रस्ताव 8 अगस्त, 1940 को निकलकर सामने आया उसे ही अगस्त प्रस्ताव कहा जाता है। इस प्रस्ताव में यह कहा गया था कि अल्पसंख्यकों को बिना विश्वास में लिए किसी भी प्रकार का कानूनी या व्यावहारिक कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता है। इस बात से साम्प्रदायिकता की बात निकललर सामने आया। परिणामस्वरूप कांग्रेस ने इसे मानने से इंकार कर दिया। विभाजन की स्पष्ट बात इसमें नहीं रहने के कारण मुस्लिम लीग ने भी इसे मानने से इंकार कर दिया जा आन्दोलन का कारण बना।
- **व्यक्ति सत्याग्रह (1940)**–गाँधी जी का विचार था कि इस समय सीमित पैमाने पर आन्दोलन को चलाया जाये जिसे व्यक्तिगत सत्याग्रह कहा गया है। इस आन्दोलन के क्रम में विभिन्न सत्याग्रही गाँव–गाँव घूमकर लोगों के बीच संदेश फैलाते हुए दिल्ली की तरफ चल पड़े। इसलिए

व्यक्तिगत सत्याग्रह को **दिल्ली चलो आन्दोलन** भी कहा जाता है।

- **प्रथम सत्याग्रही का नाम बिनोवा भावे।**
- दूसरे सत्याग्रही का नाम जवाहरलाल नेहरू था। अस प्रकार सीमित पैमाने पर चलाया गया यह आन्दोलन भारत छोड़ो आन्दोलन का आधार बना।
- **लाहौर अधिवेशन (1940) –** मुस्लिम लीग ने रावी नदी के किनारे लाहौर में अपना ऐतिहासिक सम्मेलन किया, जिसमें पहली बार पाकिस्तान का प्रस्ताव किया गया। इसके अध्यक्ष मुहम्मद अली जिन्ना थे, जिन्होंने इस अधिवेशन में दो राष्ट्रों का सिद्धान्त पहली बार प्रस्तुत हुआ। इसके पहले ही चौधरी रहमत अली ने पाकिस्तान शब्द को जन्म दे दिया था। पाकिस्तान के प्रस्ताव को सिकन्दर हयात खाँ ने तैयार किया था, और उस प्रस्ताव को इस अधिवेशन में प्रस्तुत करने का श्रेय फजलुल हक को दिया जाता है।
- **द्वितीय विश्व युद्ध का प्रभाव (1939 – 45) –** प्रथम विश्वयुद्ध के समान ही बेरोजगारी, मंहगाई और भ्रष्टाचार साथ ही अन्य मानवीय कष्ट चरम सीमा पर पहुँच गया था। भारत की सम्पूर्ण जनता इस युद्ध का अंग्रेजी सरकार के खिलाफ लाभ उठाना चाह रही थी।
- विदेशी स्तर पर चीन के राष्ट्रपति च्यांग काई–शेक और अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने ब्रिटेन पर दबाब बनाया, इसी विकट स्थिति में इस आन्दोलन को शुरू कर दिया गया।
- **किप्स प्रस्ताव (1942) –** स्टेफोर्ड क्रिप्स 23 मार्च 1942 को दिल्ली पहुँचे और 30 मार्च 1942 को अपनी योजना प्रस्तुत की। इस प्रस्ताव में लगभग अगस्त प्रस्ताव के बात को ही शामिल किया गया था, लेकिन संविधान निर्माण की बात भी शामिल थी। संविधान निर्माण की बात में यह भी जोड़ दिया गया कि जो दल या राज्य इसमें शामिल होना नहीं चाहते हैं, वह इससे अलग रह सकते हैं। परिणामस्वरूप कांग्रेस ने इस प्रस्ताव को मानने से इंकार कर दिया। इस प्रकार अब कोई उपाय नहीं बचा था। अतः गाँधीजी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारम्भ किया गया।
- **प्रारम्भ एवं विकास –** भारत छोड़ो आन्दोलन आजादी के ठीक पहले सबसे महत्वपूर्ण आन्दोलन था। उपर्युक्त कारणों के आलोक में यह आन्दोलन शुरू हुआ। 7 अगस्त, 1942 को वर्धा एक सम्मेलन का भी आयोजन किया गया, जिसमें जवाहरलाल नेहरू द्वारा इस आन्दोलन का प्रस्ताव पेश किया गया।
- 8 अगस्त 1942 में बम्बई के (ग्वालिया टैंक मैदान) में इस प्रस्ताव को पास किया गया और इसी के साथ आन्दोलन शुरू हो गया। गाँधीजी ने **''करो या मरो''** का नारा दिया। जवाहरलाल नेहरू का कथन–''हम द्विधारी तलवार से खेलने जा रहे हैं इसका उल्टा वार हम पर भी पड़ सकता है।''
- गाँधीजी का कथन–''अंग्रेजों भारत छोड़ो।''
- इस आन्दोलन को अगस्त क्रांति के नाम से भी हमलोग जानते हैं। जब यह आन्दोलन शुरू हुआ तब सरकार ने इसको कुचलने का भी प्रयास शुरू कर दिया। जैसे 9 अगस्त को सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। गाँधीजी को गिरफ्तार कर पूना के **आगा खाँ पैलेस** मे नजरबंद कर दिया गया। जवाहरलाल नेहरू के साथ अन्य बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर अहमद नगर के दूर्ग में कैद किया गया।
- सबसे अधिक दिनों कि समानान्तर सरकार महाराष्ट्र के सतारा में चलाया गया, जो 1945 तक चला। यहाँ के प्रमुख नेता वाई. वी. चौहान थे।
- इस आन्दोलन में कुछ लोग भूमिगत रहकर आन्दोलन को चलाने का कार्य किया, जैसे जय प्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, अरूणा आसफ अली और सुचेता कृपलानी ने महत्वपूर्ण कार्य किया।
- बिहार में सर्वप्रमुख नेता राजेन्द्र प्रसाद को 9 अगस्त, 1942 को गिरफ्तार कर **बाँकीपुर जेल** में कैद किया गया। जगत लाल नारायण और उनकी पत्नी रामप्यारी देवी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। बसिया के सिताब दियरा के रहने वाले जयप्रकाश नारायण हजारीबाग जेल से फरार होकर नेपाल में हनुमान नगर के बकरे का टापू नामक स्थान पर आजाद दस्ता का गठन किया और आन्दोलन में साथ दिया। इसी आन्दोलन के समय जय प्रकाश नारायण को **लोकनायक** से संबोधित किया गया। बिहार के भागलपुर में भी समान्तर सरकार का गठन किया गया और सारण को कुख्यात अपराधी जिला घोषित कर दिया गया।
- 11 अगस्त 1942 में पटना सचिवालय पर तिरंगा फहराने के क्रम में 7 छात्र शहीद हो गये। इनके याद में पटना में शहीद स्मारक बनाया गया है।
- सरकार ने ऑपरेशन ''जीरो ऑवर'' के तहत नेताओं को गिरफ्तार किया। सरकार के दमन चक्र के चलते भले ही यह आन्दोलन असफल हो गया, लेकिन हम यह कह सकते हैं कि इसी आन्दोलन का परिणाम था। कि पाँच साल के अन्दर हमारा देश आजाद हो गया।

सुभाषचन्द्र बोस और आजाद हिन्द फौज

- सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 1897 में उड़ीसा के कटक में हुआ था। इन्होंने 1920 में भारतीय सिविल सेवा की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया, लेकिन इस समय गाँधीजी के आह्वान पर उन्होंने त्यागपत्र दिया और असहयोग आन्दोलन में शामिल हो गया। इसी अवसर पर पहली बार जेल की यात्रा भी करनी पड़ी।
- द्वितीय विश्व युद्ध के समय भारतीय सेना ब्रिटेन की तरफ से जापान में लड़ रही थी, लेकिन जापानी सेनापति फूजिहारा के समक्ष आत्मसमर्पण करना पड़ा। इसी क्रम में फूजिहारा और कैप्टन मोहन सिंह के साथ मित्रवत् संबंध कायम हो गया। फूजिहारा के समझाने पर ही **कैप्टन मोहन सिंह** ने आजाद हिन्द फौज की प्रथम डिवीजन का गठन कर लिया। इसी अवसर पर 1942 में ही रास बिहारी बोस ने भी भारतीय स्वतंत्रता

लीग की स्थापना की थी। जब द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान पराजित हो गया तब भारत के लिए परिस्थितियाँ विपरीत हो गयी। और कैप्टन मोहन सिंह को जापानी सेना ने कैद कर लिया।

- सुभाषचन्द्र बोस ने 1928 में जवाहरलाल नेहरू के साथ मिलकर स्वतंत्रता लीग की स्थापना की। कालान्तर में कलकत्ता में हालवेल की मूर्ति की स्थापना को लेकर विरोध प्रदर्शन किया। परिणामस्वरूप अंग्रेजी सरकार ने इनको गिरफ्तार कर एल्गिन रोड के समीप उनके घर में नजरबंद कर दिया, लेकिन 1941 में यह वेश बदलकर जिआउद्दीन नाम रखकर अफगानिस्तान, सोवियत रूस होते हुए बर्लिन पहुँच गये।
- इसी अवसर पर हिटलर का विश्वासपात्र व्यक्ति रोबेनट्रेप ने इनको नेता जी कहकर संबोधित किया था। कुछ विद्वानों के अनुसार हिटलर ने सर्वप्रथम इनको नेता जी कहा था।
- हिटलर से कोई सहायता नहीं मिलने पर और रास बिहारी बोस के आमंत्रण पर सुभाषचन्द्र बोस सिंगापुर पहुँच गये।
- **1943 में सिंगापुर** में सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज और भारतीय स्वतंत्रता लीग का नेतृत्व संभाल लिया। इसी स्थान पर भारतीय अस्थायी सरकार का गठन किया गया। आजाद हिन्द फौज ने भाषा के रूप में 'हिन्दी' को राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में 'सिंह' को झंडा के रूप में 'तिरंगा' को, अभिवादन के रूप में 'जय हिन्द' को और नारा के रूप में 'दिल्ली चला' को अपनाया गया।
- आजाद हिन्द फौज ने परिस्थितवश सिंगापुर छोड़कर बर्मा की राजधानी रंगून में अपनी सरकार को स्थातिप किया और इसी अवसर पर सुभाषचंद्र बोस ने अपने सैनिकों में जोश भरते हुए जुबली हॉल में यह कहा–**''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।''**
- गाँधजी जी को इन्होंने संबोधित करते हुए कहा–''राष्ट्रपिता इस संकट की घड़ी मे हम आपका समर्थन चाहते हैं।''
- आजाद हिन्द फौज रंगून को छोड़कर अंडमान एवं निकोबार द्वीप पहुँच गयी। अंडमान का नाम शहीद और निकोबार का नाम स्वराज रख दिया गया। इस फौज ने नागालैंड के कोहिमा में सर्वप्रथम प्रवेश किया। इधर द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति हुई और सुभाषचन्द्र बोस अपने मित्र अबीब के साथ ताईहोकू से दाइरेन के यात्रा पर थे। इसी समय विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। आधुनिक अनुसंधान के अनुसार 1945 में नानमोंग अस्पताल में इनकी मृत्यु हो गयी। परिणामस्वरूप आजाद हिन्द फौज ने आत्मसमर्पण कर दिया। लाल किला में मुकदमा चला। कैप्टन सहगल और कैप्टन सहगल और कैप्टन ढिल्लो और कैप्टन शहनवाज को मृत्युदंड दिया गया। तब लोगों ने लाल किला को घेर लिया और यह नारा दिया–''आजाद हिंद फौज को छोड़ दो नहीं तो लाल किला को तोड़ दो।''
- आजाद हिन्द फौज की तरफ से मुकदमा लड़ने वाले मुख्य व्यक्ति कैलाश लाथ काटजू थे। इनकी सहायता के लिए तेज बहादुर सप्रू, भूला भाई देसाई और जवाहरलाल नेहरू भी थे। वायसराय ने अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करते हुए इनलोगों की सजा को माफ कर दिया।

क्रांतिकारी आन्दोलन

- भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ–साथ क्रांतिकारी आन्दोलन भी संचालित किया जा रहा था। अध्ययन की सुविधा के लिए हमलोग इा आन्दोलन को तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं–
  (i) प्रथम विश्व युद्ध के पूर्व
  (ii) प्रथम विश्व युद्ध के समय
  (iii) प्रथम विश्व युद्ध के बाद।
- **प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व**–यह आन्दोलन महाराष्ट्र से प्रारम्भ हुआ। चापेकर बंधुओं ने 1897 में प्लेग कमीश्नर रैण्ड और आयरस्ट की गोली मारकर हत्या कर दी। चापेकर बंधुओं फाँसी की सजा दी गयी, साथ ही बाल गंगाधर तिलक को केसरी नामक पत्रिका में शिवाजी और अफजल खाँ से संबंधित लेख छापने के जुर्म में 18 माह की जेल की सजा दी गयी। इस प्रकार महाराष्ट्र से क्रांति का प्रारम्भ हो गया।
- 1899 में वी. डी. सावरकर (विनायक दामोदार सावरकर) ने मित्र मेला नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की, जो **1944 में अभिनव भारत** के रूप में परिवर्तित हुआ।
- यह संगठन महाराष्ट्र में सबसे महत्वपूर्ण क्रांतिकारी संगठन था। इसी संगठन के सदस्यों ने जैक्सन को गोली मारकर हत्या कर दी, जिसके विरूद्ध नासिक षड्यंत्र केस चलाया गया और वी. डी. सावरकर को देश निर्वासन की सजा दी गयी। इनको अंडमान निकोबार के सेल्यूलर जेल भेज दिया गया। इनको अंडमान निकोबार के सेल्यूलर जेल भेज दिया गया। जेल की दीवार पर इन्होंने भारत का इतिहास लिखा।
- यह आन्दोलन भले ही महाराष्ट्र में शुरू हुआ, लेकिन बंगाल इसका मुख्य स्थल बन गया। यहाँ पर वारिद्र कुमार घोष और भूपेन्द्र नाथ दत्त ने क्रांतिकारी संगठन, अनुशीलन समिति का गठन 1906 ई. में किया। इन दोनों ने मिलकर युगान्तर नामक पत्रिका का सम्पादन भी किया। वारिन्द्र कुमार घोष ने भवानी मंदिर नामक क्रांतिकारी पुस्त की रचना की थी, जो लगभग हर क्रांतिकारी के पास मौजूद था। सचिन्द्रनाथ सन्याल ने 1913 में पटना में अनुशील समिति का गठन किया।
- 1908 में खुदीराम बोस और प्रफूल्ल चाकी ने किंग्स फोर्ड के हत्या के लिए मुजफ्फरपुर में बम से प्रहार किया लेकिन, भूल वश मैडम कैनेडी और उनकी पुत्री की मृत्यु हो गयी। इस प्रकार भागने के क्रम में प्रफूल्ल चाकी ने गोली मारकर आत्महत्या कर ली और खुदीराम बोस को मुजफ्फरपुर जेल में फाँसी दे दी गयी।
- यह आन्दोलन सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी संचालित किया जा रहा था। श्याम जी कृष्ण ब्रिटेन में 1905 ई. में इंडियन होम रूल सोसाइटी की स्थाना की और इंडियन सोसियोलॉजिस्ट पत्रिका का भी सम्पानदन किया और इस आन्दोलन को ब्रिटेन में फैलाने का कार्य सम्पन्न किया गया।

- इसी आन्दोलन के क्रम में **मदन लाल ढींगरा** ने लंदन में भारत के राजनीतिक सलाहाकार कर्जन विलियम वायलरी की 1909 में गोली मारकर हत्या कर दी।
- ब्रिटेन के साथ–साथ यह आन्दोलन अमेरिका भी पहुँच गया। **1913 में लाला हरदयाल** ने मैन फ्रांसिस्को में गदर पार्टी की स्थापना की और गदर की गूँज नामक शीर्षक से गदर पत्रिका का भी प्रारम्भ किया गया। यह पत्रिका गुजराती, हिन्दी, पंजाबी और अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होने लगा। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन को हथियार भेजकर मदद करना था।
- आन्दोलन के इसी क्रम में मैडम भीकाजी कामा ने जर्मनी के प्रसिद्ध शहर स्टुअर्टगार्ट में 1907 में पहली बार भारत से बाहर तिरंगा फहराने का कार्य किया था जिस पर वन्दे मातरम् लिखा हुआ था।
- मैडम भीखा जी कामा को **भारतीय क्रांति की माँ** कहा जाता है।
- **प्रथम विश्व युद्ध के समय** सीमित पैमाने पर क्रांतिकारी आन्दोलन को संचालित किया गया। इसी क्रम में कुछ महत्वपूर्ण क्रांतिकारी घटनाएं सम्पादित की गयी, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–

कामागाटामारू प्रकरण/घटना (1914) :

- इस समय कनाड की सरकार ने यह नियम बनाया कि सीधे भारत से चलकर कनाडा पहुँचने वाले भारतीयों को प्रवेश करने की अनुमति दी जायेगी। तब गुरदीत सिंह नामक राष्ट्रवादी व्यक्ति ने कामागाटामारू जहाज को किराये पर लेकर क्रांतिकारियों को बैठाकर कनाडा रवाना हो गये। जब यह जहाज बैंकुअर बंदरगाह के समीप पहुँचा तब कनाडा की सरकार ने इसे वापस जाने का आदेश जारी कर दिया। विरोध में सोहन सिंह भाकना के नेतृत्व में तटीय समिति का गठन करके विरोध प्रदर्शन किया गया, लेकिन कनाडा के सैनिकों ने इस जहाज को वापस आने पर विवश कर दिया। जब यह जहाज भारत में बजबज के समीप पहुँचा तब अंग्रेजी सेना के साथ संघर्ष हो गया, जिसमें कई निर्दोष व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी। अन्य लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया। इसी घटना को कामागाटामारू घटना कहा जाता है।
- प्रथम विश्वयुद्ध के समय राजा महेन्द्र प्रताप के नेतृत्व में अफगानिस्तान के काबुल में 1915 ई. में अस्थायी सरकार की स्थापना की गयी।, भारत से बहार पहली बार अस्थायी सरकार की स्थापना की गयी थी, जिसमें राजा महेन्द्र प्रताप को राष्ट्रपति और बरकतउल्ला को प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया।
- इसी क्रम में 1915 ई. में जतिन मुखर्जी (बाघा जतिन) के नेतृत्व में बंगाल में क्रांतिकारी आन्दोलन को संचालित किया गया था, लेकिन यह गिरफ्तार हुए और इनको फाँसी की सजा दे दी गयी।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद :

- प्रथम विश्व युद्ध के बाद कुछ समय के लिए इस आन्दोलन को स्थगित कर दिया गया था। क्योंकि यह लोग गाँधीजी पर विश्वास करते थे। लेकिन जब गाँधी जी को गिरफ्तार कर लिया, तब यह लोग पुनः सक्रिय हो गये।
- 1924 में सचिन्द्र नाथ सन्याल के नेतृत्व में कानपुर में हिंदुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन (हिन्दुस्तान प्रजातांत्रिक संगठन) की स्थापना की गयी। धन की कमी को पूरा करने के लिए इन लोगों ने काकोरी षड्यंत्र को अंजाम दिया।
- **काकोरी षड्यंत्र (1925) –** काकोरी नामक छोटे से स्टेशन पर इन लोगों ने सरकारी खजाने को लूट लिया, इसके मुख्य अभियुक्त प्रसाद बिस्मिल बनाये गये। इनके साथ रौशन लाल, असफाकउल्ला और राजेन्द्र सिंह लाहड़ी को फाँसी की सजा दे दी गयी। यह सजा गोरखपुर में दी गयी।
- राम प्रसाद बिस्मिल का कथन–''सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।''
- 1928 में दिल्ली में इस संगठन के नाम से समाजवादी शब्द जोड़ दिाय गया तब इसका नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्किन एसोसिएशन (हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक संगठन) हो गया, जिसका नेतृत्व चन्द्रशेखर आजाद ने किया।
- क्रांतिकारी आन्दोलन से संबंधित पत्रिका एवं सम्पादक :

पत्रिका	सम्पादक/लेखक
काल	शिवराम परांजपे
भाला	भाष्कर भोपेतकर
बिहारी	बालकृष्ण फटक
फ्री हिन्दुस्तान	तारकनाथ दास

- भगत सिंह ने छबल दास के साथ मिलकर 1926 में नौजवान सभा की स्थापना की थी।
- भगत सिंह का कथन–'इन्कलाब जिंदाबाद'।
- इसी संगठन (हिसप्रस) के भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने ऐसेम्बली भवन में बम से प्रहार किया जो बहरो को सुनाने को लिए किया गया था। दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया।
- लाला लाजपत राय के हत्यारा साण्डर्स को गोली मार कर हत्या कर दी गयी, जिसके विरूद्ध लाहौर षड़यंत्र केस चलाया गया और यह केस भगत सिंह पर भी लागू किया गया। लाहौर षड्यंत्र केस के मामले में ही भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को लाहौर जेल में ही **23 मार्च, 1931** को फांसी दे दी गयी। इसके पूर्व चन्द्रशेखर आजाद इलाहाबाद के अल्फ्रेण्ड पार्क में गोली मारकर आत्महत्या कर ली थी। लाहौर षड्यंत्र

केस के एक और अभियुक्त **जतिन दास** की भूख हड़ताल से 64वें दिन मृत्यु हो गयी।

- 1931–32 में बंगाल में सूर्यसेन नामक व्यक्ति ने चटगाँव शस्त्रागार पर अधिकार कर लिया और अधिक दिनों तक वहाँ किसी भी प्रकार का सरकारी नियंत्रण स्थापित नहीं हो सका। लेकिन बाद में गिरफ्तार हुए और 1933 में फाँसी की सजा दे दी गयी।
- 1940 में उद्यम सिंह ने लंदन में जनरल डायर को गोली मारकर हत्या कर दी। इस प्रकार क्रांतिकारी आन्दोलन समाप्त हुआ। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से क्रांतिकारियों ने राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

वामपंथी और श्रमिक आन्दोलन

- राष्ट्रीय आन्दोलन के क्रम में वामपंथी और श्रमिक आन्दोलन ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- **वामपंथी आन्दोलन**–हम जानते हैं कि वामपंथ शब्द का जन्म फ्रांस में हुआ था। राजा के दाहिने तरफ बैठने वाले को दक्षिणपंथी कहा गया है और राजा के बायें तरफ बैठने वालों को वामपंथी कहा गया है। दक्षिणपंथी राजा के सहयोगी माने गये और वामपंथी राजा के विरोध करने वाले थे। इसी परिप्रेक्ष्य में वामपंथी आन्दोलन की शुरूआत हुई।
- एम. एन. राय ने (मावनेन्द्र नाथ राय) 1920 में सोवियत रूस के ताशकद में मार्क्सवादी पार्टी की स्थापना की। यह प्रथम भारतीय थे, जो अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी सम्मेलन में भाग लेने के लिए ताशकंद गये थे। इसलिए 1920 में वामपंथी आन्दोलन की शुरूआत भारत में माना जाता है। 1925 में सत्यभक्त ने कानपुर में भारतीय कम्युनिष्ट पाटी की स्थापना की और स्वयं इसके सचिव बन गये।
- अंग्रेजी सरकार कांग्रेस और लीग के आन्दोलन से परेशान थी। अब क्रांतिकारियों के साथ–साथ वामपंथियों ने भी आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। इस आन्दोलन को दबाने के लिए सरकार तीन प्रकार के षड्यंत्र के रूप में मुकदमा चलाकर इसको दबाने की कोशिश की।
- **पेशावर षड्यंत्र केस (1922 – 1924)** – प्रमुख वामपंथी नेताओं पर षड्यंत्र रचने का आरोप लगाकर यह केस चलाया गया जिसमें भी अमृत पाद डांगे, नलिनी सेन गुप्ता और अच्यूत पटवर्धन आदि को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया।
- **कानपुर षड्यंत्र केस (1924)** – यह केस भी आन्दोलन को दबाने के लिए ही चलाया गया था। इसमें मार्क्सवादी पार्टी के जो भी बड़े नेता थे उनको गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया गया, जिसका कोई उचित कारण भी नहीं था।
- इस आन्दोलन के क्रम में समाजवादी लोगों ने 1931 में बिहार समाजवादी दल की स्थापना की, जिसमें मुख्य भूमिका जयप्रकाश नारायण और फूलन प्रसाद वर्मा ने निभाया था।
- 1934 में बम्बई में कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना जयप्रकाश नारायण और नरेन्द्र देव के द्वारा किया गया। इसकी प्रथम बैठक 1934 में पटना में हुआ। इसके अध्यक्ष आचार्य नरेन्द्र देव तथा महासचिव जयप्रकाश नारायण को बनाया गया था। जयप्रकाश दिवस अप्रैल 1946 में मनाया गया।
- अंग्रेजी सरकार इन आन्दोलनों से तंग आकर 1934 में सभी दलों पर प्रतिबंध लगा दिया। यह सत्य है कि राष्ट्रीय आन्दोलन में वामपंथी दल सक्रिय तो था, लेकिन कांग्रेस जैसा मजबूत संगठन के रूप में यह नहीं उभर सका।
- **श्रमिक आन्दोलन**–जिस प्रकार राष्ट्रीय आन्दोलन में सभी लोगों ने अपने स्तर से सहयोग किया उसी प्रकार श्रमिकों ने भी अपने संगठन के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है–
- 1884 ई. में एम. एन. लोखाण्डे ने बम्बई मील हैण्ड एसोसियेशन की स्थाना की, लेकिन यह संगठन सफल नहीं हो सका। 1918 ई. में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मजदूरों को संगठित करने के लिए संगठन का निर्माण हो चुका था इसी परिपेक्ष्य में मद्रास में वी. पी. वाडिया ने मद्रास श्रमिक संघ की स्थापना की, जो भारत का प्रथम आधुनिक श्रमिक संघ था।
- 1920 में एन. एम. जोशी (नारायण मल्हार राव जोशी) लाला लाजपतराय और जोसेफ बैपटिस्टा ने मिलकर अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC). स्थापना की, **जिसके प्रथम अध्यक्ष लाला लाजपतराय को बनाया गया।** बहुत कम समय में इसमें 64 छोटे–छोटे श्रमिक संगठन शामिल हो गये। लेकिन 1929 में एटक विभाजन हुआ और एन. एम. जोशी ने भारतीय ट्रेड यूनियन फेडरेशन की स्थापना की। 1938 में सुभाषचन्द्र बोस के सहयोग से हिन्द मजदूर सेवक संघ की स्थापना की गयी। 1947 में सरदार वल्लभ भाई पटेल के द्वारा भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस यानि INTUC (इंटक) की स्थापना की गयी। श्री अमृत पाद डांगे के द्वारा प्रथम क्रांतिकारी संगठन लाला बापटा गिरनी कामगार यूनियन की स्थापना 1928 में की गयी।
- इस प्रकार श्रमिकों ने भी अपने आन्दोलन द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग प्रदान किया। यह और बात है कि अभी तक उनके स्थिति में कुछ अधिक सुधार दिखलाई नहीं पड़ता है।